भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एंव विविध सांस्कृतिक परम्पराओं के संरक्षण की स्कीम के तहत

कुमाऊँनी शैली की रामलीला से जुड़े कलाकार उसके संगीत निर्देशको व रामलीला कमेटियों के इतिहास के संरक्षण की परियोजना

की

रिपोर्ट

- प्रस्तुतिकरण -

मोहन उप्रेती लोक संस्कृति कला एवं विज्ञान शोध समिति,
अल्मोड़ा

- आर्थिक सहयोग -

संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एंव विविध सांस्कृतिक परम्पराओं के संरक्षण की स्कीम के तहत

कुमाऊँनी शैली की रामलीला से जुड़े कलाकार उसके संगीत निर्देशक व रामलीला कमेटियों के इतिहास के संरक्षण की परियोजना

(द्वितीय व अन्तिम रिपोर्ट)

– प्रस्तुतिकरण –

मोहन उप्रेती लोक संस्कृति कला एवं विज्ञान शोध समिति, अल्मोड़ा

– आर्थिक सहयोग –

संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली

परमानन्द गुरूरानी

रामलीला व बैठकी होली गायिकी के प्रतिष्ठित कलाकार परमानन्द गुरूरानी का जन्म 1890 में बख्शीखोला अल्मोडा, उत्तराखण्ड में हुआ। आप श्री विष्णुदत्त गुरूरानी के सुपुत्र थे। आपने कुमाऊँ की ऐतिहासिक रामलीला बद्रेश्वर में खेली जाने वाली रामलीला में राम के अभिनय से शुरूआत की। उसके उपरान्त रामलीला कमेटी त्यूनरा, रामलीला कमेटी नंदादेवी व श्री रामलीला कमेटी पाण्डेखोला में दशरथ व जनक का अभिनय किया।

रामलीला में उनकी अभिनय क्षमता के विषय में उनके पुत्र नवीन गुरूरानी जी बताते हैं कि जब वह पाण्डेखोला की रामलीला में अभिनय किया करते थे उनके गाने की आवाज 2 कि0मी0 दूर बख्शीखोला में हमारे घर पर साफ सुनाई देती थी। यहाँ पर यह बता देना उचित होगा कि उस समय अल्मोडा में लाईट नहीं थी इस लिए रामलीला लैम्प की रोशनी में बिना किसी ध्वनि के उपकरणों से हुआ करती थी। परमानन्द गुरूरानी जी बडा ही सशक्त अभिनय किया करते थे। दशरथ के अभिनय में दर्शकों के आखों में आसूँ देखे जा सकते थे।

परमानन्द गुरूरानी जी ने कक्षा पाँच तक की पढाई की थी और वह अपनी दुकान किया करते थे। कुमाऊँनी बैठकी होली गायकी के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। ऐसा कहा जाता है कि कुमाऊँ के राजा आनन्दसिंह के घर पर आयोजित होने वाली होली की बैठक में वह प्रमुख गायक हुआ करते थे।

सन् 1968 में 78 वर्ष की आयु में इनका देहान्त हुआ। उनके पुत्र नवीन गुरूरानी जी बताते हैं कि परमानन्द गुरूरानी जी ने लगभग 1960 यानि की 70 वर्ष तक की आयु तक रामलीला में अभिनय किया यह उनके रामलीला के प्रति अगाध प्रेम को दर्शाता है।

इनके पुत्र नवीन चन्द्र गुरूरानी बख्शीखोला अल्मोडा में रहते है।

1959

जगन्नाथ सनवाल

रामलीला के प्रतिष्ठीत कलाकार, कुशल तालिम मास्टर व निर्देशक जगन्नाथ सनवाल का जन्म 20 नवम्बर 1935 को नन्दादेवी अल्मोडा, उत्तराखण्ड में हुआ। आप पिता मोतीराम सनवाल व माता कमला सनवाल के सुपुत्र थे। बालक जगन्नाथ का बचपन से हीं रामलीला की ओर झुकाव था। शहर की प्रतिष्ठीत बद्रेश्वर की रामलीला में राम के पात्र से अभिनय की शुरूआत हुई। बुजुर्ग लोग बताते हैं कि उन दिनों रामलीला में पात्रों के चयन की प्रक्रिया बहुत कठीन हुआ करती थीं। 20–20 लोग एक पात्र के अभिनय के लिए लाईन में होते थे। ऐसे में राम के अभिनय से शुरूआत जगन्नाथ सनवाल की प्रतिभा को दर्शाती है।

बद्रेश्वर की रामलीला के स्थान विवाद के चलते जब जी0आई0सी0ग्राउड में रामलीला का मंचन हुआ तो सनवाल जीं ने वहाँ भी अभिनय किया उसके बाद नन्दा देवी की रामलीला व त्यूनरा की रामलीला में राम, लक्ष्मण, सुमन्त, अंगद, परशुराम, दशरथ आदि का अभिनय किया।

सनवाल जीं पेशे से आयुर्वेद के डाक्टर थे उनका अल्मोड़ा में अपना दवाखाना था। सन् 2000 में इनका देहान्त हुआ। सनवाल जीं के सुपुत्र अनिल सनवाल बताते है कि मेरे पिता का रामलीला की ओर झुकाव सम्भवतः हमारे दादा मोतीराम सनवाल जीं की वजह से हुआ होगा, ऐसा कहा जाता है कि मेरे दादा सितार बहुत अच्छा बजाया करते थे। इस कारण संगीत की महफिलें अक्सर हमारे घर पर हुआ करती थी जिसका प्रभाव पिता(जगन्नाथ सनवाल) जी पर पडा होगा। जगन्नाथ सनवाल जी से पहले उनके पिता मोतीराम सनवाल रामलीला में सितार बजाया करते थे । वर्तमान में उनके पुत्र अनिल सनवाल रामलीला में निर्देशक व अभिनय से जुडे है।

अनिल सनवाल बताते है कि उनके पिता के द्वारा दशरथ के लिए लिखा गीत आज भी यहाँ की रामलीला में चलन में हैं । गीत दशरथ को पूर्व में हुए श्रवण कुमार के प्रसंग की याद दिलाता है पक्तियाँ हैं– एक श्रवण भगत पितु माँ का..............। रामलीला के कुछ प्रचलित गीतों को अन्य रागों में परिवर्तित किया जिसको जनता ने सराहा और उस प्रयोग को मान्यता दी । यह गीत आज भी गाये जाते है।

जगन्नाथ सनवाल जी के समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूष कलाकारों में नन्दन जोशी– कैकई (बद्रेश्वर की रामलीला व नन्दादेवी की रामलीला में),भुवन चन्द्र जोशी (भुवन कलाकार)– कैकई, मंथरा,सुमित्रा,कौशल्या (बद्रेश्वर की रामलीला,त्यूनरा की रामलीला व नन्दादेवी की रामलीला में), शमशेर सिंह राणा–सीता, सूर्पनखा, कैकई (जी0आई0सी0 की रामलीला,नन्दा देवी की रामलीला में), भारत गोयल– सूर्पनखा, कैकई (नन्दा देवी की रामलीला में), चुन्नु मास्साब–कैकई, सूर्पनखा(त्यूनरा की रामलीला व नन्दादेवी की रामलीला में), मुन्ना काण्डपाल ने एन0टी0डी0 की रामलीला, त्यूनरा की रामलीला व नन्दादेवी की रामलीला में महिला पात्रों का अभिनय किया। इनके अलावा जीवन सिंह रावत व मोहन टेलर नन्दा देवी की रामलीला में ताडिका का अभिनय किया करते थे।

इनके सुपुत्र अनिल सनवाल नन्दा देवी मन्दिर के समीप अल्मोडा में रहते हैं।

रामलाल वर्मा

रामलीला में दशरथ के अभिनय से लोगो के दिलो में घर बना लेने वाले कलाकार रामलाल वर्मा का जन्म 1920 को दसाईथल सुनार गॉव गंगोलीहाट में हुआ और मृत्यु 52 वर्ष की आयु में 1972 को हुई । आप स्व0 श्री गणेशीलाल वर्मा के पुत्र थे। आप रामलीला के एक ख्याति प्राप्त कलाकार रहे । पेशे से आप सुनार थे। आपने रामलीला कमेटी दसाई थल व काली मन्दिर गंगोली हाट में राम के अभिनय से शुरूआत की। उसके बाद वर्षो तक दशरथ का अभिनय किया। दसाई थल की रामलीला में आप तालीम मास्टर रहे।

रामलाल वर्मा बैठकी होली के जाने माने कलाकार थे उस क्षेत्र विशेष में होली की बैठको के विशेष आकर्षण होते थे। होली गायक व रामलीला के जानकार विद्वान कलाकार नरसिहं मटियानी उनके मित्र थे। विडम्बना है कि इनके चेहरे की फोटो की भी इनके परिवार के पास उपलब्ध नही है।

रामलाल वर्मा के द्वारा रामलीला व होली संस्कार इनके बच्चों को भी मिला। रामलाल वर्मा के बाद इनके तीनो पुत्रों जीवन लाल वर्मा ने दसाईथल में जनक का अभिनय , गिरीश लाल वर्मा ने भी दसाईथल में मेघनाद का अभिनय व चिरंजीलाल वर्मा ने नन्दादेवी , धारानौला , दसाईथल, धौलछीना, नौ गॉव जमरानी बैंड की रामलीलाओं में जनक, सुमन्त, कैकई, अंगद, दशरथ का अभिनय किया। वर्तमान में उनके बेटे चिरंजीलाल वर्मा का पुत्र मिथिलेश वर्मा भी नंदा देवी की रामलीला में लक्षमण का पार्ट खेल रहा है।

वर्तमान में इनके पुत्र चिरंजीलाल वर्मा नन्दा देवी मन्दिर के समीप, अल्मोडा , जिला अल्मोडा उत्तराखण्ड में रहते हैं।

लीलाधर पाण्डे(पाण्डेखोला की रामलीला)

रामलीला के कलाकार लीलाधर पाण्डे का जन्म 1900 को पाण्डेखोला अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री मथुरादत्त पाण्डे व हरिप्रिया पाण्डे के सुपुत्र थे। आपने कक्षा नौ तक की शिक्षा प्राप्त की और दुकानदारी की। मूलतः आप ग्राम पल्यू के रहने वाले है। लीलाधर पाण्डे जी ने लगभग 20–22 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। 1920–1922 में पाण्डेखोला अल्मोडा की रामलीला में परशुराम का अभिनय किया। जीवन के लगभग 40 वर्ष आपने रामलीला को दिए। पाण्डेखोला की रामलीला में आपने परशुराम, जनक, तारा, जटायू, कुम्भकरण के अभिनय किए।

आपके पुत्र गिरीश चन्द्र पाण्डे बताते हैं कि सन् 1976 में लीलाधर पाण्डे जी का 76 वर्ष की आयु में देहान्त हुआ। उन्होने बताया की उनके पिता एक अच्छे होली गायक भी थे। उनके समय में रामलीला में हारमोनियम वादक श्याम दत्त जोशी व तबले पर लोकमणी जोशी व रेवाधर पाण्डे बजाया करते थे।

आपसे पहले की पीढ़ी में रामलीला से कोई जुडा था इसकी जानकारी नही मिल पाई। आपके बाद आपके छोटे भाई गोविन्द बल्लभ पाण्डे व महेश चन्द्र पाण्डे तथा आपके बाद की पीढ़ी में आपके बेटे गिरीश चन्द्र पाण्डे और उनके दानो बेटे चन्द्रशेखर

पाण्डे और अतुल पाण्डे अभिनय व संगीत पक्ष से जुड कर पाण्डेखोला की रामलीला में सहयोग देते रहे।

आपके बेटे गिरीश चन्द्र पाण्डे ने बताया की आपको तारा दत्त त्रिपाठी का परशुराम का अभिनय देवी दत्त पाण्डे जी का अंगद का अभिनय, यादव चन्द्र जोशी का रावण का अभिनय व नवीन पन्त का कैकई का अभिनय अच्छा लगता था।

वर्तमान में आपके पुत्र गिरीश चन्द्र पाण्डे , समीप चन्दार्थ रेस्टोरेन्ट, पाण्डेखोला , अल्मोडा में रहते है।

1930

शिव चरण पाण्डे

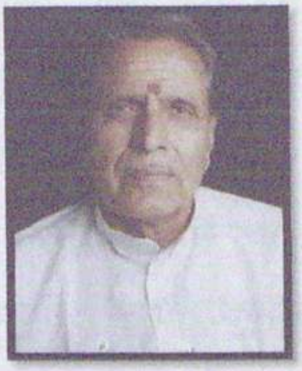

रामलीला में शुरूआती दौर में अभिनय से जुड़े और उसके उपरान्त रामलीला के कुशल संगीत निर्देशको में अग्रिम पंक्ति के व्यक्ति शिव चरण पाण्डे का जन्म 1 जुलाई 1935 को शहर अल्मोड़ा उत्तराखण्ड में हुआ। आप स्व0चन्द्रमणी पाण्डे के सुपुत्र हैं। आपने स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त की। आप सेवानिवृत सरकारी कर्मचारी हैं। शिव चरण पाण्डे जी ने लगभग 30 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने सम्भवतः पहला अभिनय जनक का अल्मोडा नन्दा देवी में खेली जाने वाली रामलीला में 1964 में किया। आप रामलीला के एक कुशल अभिनेता व तालीम मास्टर के रूप में सम्पूर्ण कुमाऊँ में जाने जाते हैं। आपके कुशल निर्देशन में हुक्का क्लब की रामलीला का मंचन देश के कई प्रतिष्ठित मंचों में हो चुका है। आपने नन्दा देवी की रामलीला में 1964 से 1972 तक जनक, दशरथ, केवट, देवगण 1975 से 1977 तक बन्दीजन, भाई–भाई संघ की रामलीला में 1973–1974 में दशरथ व हुक्का क्लब की रामलीला में 1977 से 2001 तक निरन्तर दशरथ का अभिनय किया ।

शिव चरण पाण्डे जी बताते हैं कि उन्होने संगीत की कोई विधिवत शिक्षा किसी गुरू के पास जाकर नही ली । संगीत को जितना भी सीखा समझा वह हुक्का क्लब में संगीतज्ञो की संगत से व गुणीजनो के अर्शिवाद से ही सिखा। रामलीला की ओर जाना भगवान श्री राम की कृपा से हुआ इसके अलावा बचपन से हुक्का क्लब से जुडा होना भी है।

शिव चरण पाण्डे जी बताते हैं कि उनके समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में स्व0 नन्दन जोशी, स्व0 भैरव दत्त तिवारी, स्व0 पूरन चन्द्र तिवारी, शमशेर जंग राना, हेम चन्द्र जोशी, राजेन्द्र तिवारी के नाम अग्रिम पंक्ति के लोग हैं। तालीम देने वालो में स्व0 चन्द्र दत्त जोशी 1974–1975 में और उनके बाद से स्वंय शिव चरण पाण्डे जी। तबले पर संगत करने वालो में स्व0 मोती राम, धरनीधर पाण्डे, चन्दन आर्य, राजन सिंह बिष्ट, मनीष कुमार, सुमन कुमार व दिनकर पाण्डे नाम प्रमुख हैं। शिव चरण पाण्डे जी बताते हैं कि मेरे परिवार में मुझसे पहले कोई भी व्यक्ति रामलीला से जुडा हुआ न था। मेरे बाद मेरे छोटे भाई धरणीधर पाण्डे जनक का अभिनय किया। मेरा बेटा राजेश पाण्डे ताडिका, सुग्रीव, कलाघटी राजा, कुम्भकरण, खर, केवट आदि पात्रों का अभिनय कर रहा है। मेरा भतीजा मनीष पाण्डे विश्वामित्र ,सुमन्त का अभिनय किया करता है। शिव चरण पाण्डे जी बताते हैं कि उनको स्व0 चन्द्र सिंह नयाल का दशरथ का अभिनय, नन्दन जोशी का कैकई का अभिनय, स्व0 भैरव दत्त तिवारी का सूर्पनखा का अभिनय, स्व0 केशव लाल शाह व स्व0 उदयलाल शाह का रावण का अभिनय अच्छा लगा। इन कलाकारों के द्वारा किए गए अभिनय कभी न भूले जाने वाले अभिनय हैं। वर्तमान में पाण्डे जी जौहरी बाजार, अल्मोडा(उत्तराखण्ड) में रहते है।

उदय लाल शाह

अल्मोडा की रामलीला और रामलीला में रावण के अभिनय से जुडा एक महत्वपूर्ण नाम जिसका जिक्र किए बिना कोई भी व्यक्ति अल्मोडा की रामलीला की बात को पूरा नही कर सकता, वह नाम है उदयलाल शाह का। उदयलाल शाह जी का जन्म 1931 में अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 चिरंजीलाल शाह के सुपुत्र थे। आप रामलीला में अभिनय और कुमाऊँ की एक अन्य सांस्कृतिक विरासत होली के प्रष्यदाता व होली गायक के रूप में भी अल्मोडा में जाने जाते है।

उदयलाल शाह बचपन से ही रामलीला में अभिनय से जुड गए थे प्राप्त जानकारी के अनुसार रामलीला में आने की प्रेरणा गोविन्दलाल शाह से मिली। रामलीला के संस्कार उन्हे अपने पिता से भी मिले। सन् 1978 से लगातार इन्होने अपनी मृत्यु के वर्ष तक रावण का अभिनय किया। इनकी मृत्यु 13 दिसम्बर 1993 को हुई। दर्शक इनका अभिनय देखने के लिए बडे उत्साह से आता था। इन्होने बचपन में ब्रदेश्वर की ऐतिहासिक रामलीला में फिर नन्दा देवी की रामलीला व लक्ष्मी भण्डार (हुक्का क्लब) की रामलीला में अभिनय किया।

उदयलाल शाह रावण के पात्र को कितनी जीवन्तता से जीते थे उसका जिक्र 1987 के धर्मयुग में इस प्रकार आता है– रावण की भूमिका करते हुए मैं स्वंय को पवित्र करता हूँ। जीवन में पवित्रता लाने के लिए ये क्षण सबसे अच्छे और अलभ्य होते हैं। जब

मैं रावण के रूप में दर्शको के सामने आता हूँ तो यही चाहता हूँ कि मेरा भयावह रूप देखकर जनता डरे और रावण जैसी बुराईयों को निकाल कर पवित्र और विनम्र बने। अभिनय के समय मैं अंतःकरण से रावण के जैसा ही बनना चाहता हूँ क्योकि अभिनय में निखार के लिए यह आवश्यक है। जब मैं राम के समक्ष होता हूँ तो राम को शत्रु के रूप में देखता हूँ...........मूलतः तो राम जी ही हमारे मन में होते हैं।

उदयलाल शाह जी के परिवार में उनसे पहले उनके पिता रामलीला में अभिनय से जुडे थे वर्तमान में शाह जी के बेटे तुषार कान्त शाह भी रामलीला में अभिनय से जुडे है। तुषार कान्त शाह बताते हैं कि उनके पिता उनसे रामलीला के कलाकारों के अभिनय पर घर पर अपनी राय दिया करते थे उसके आधार पर कहा जा सकता है कि उन्हे दशरथ के अभिनय में शिव चरण पाण्डे, जगन्नाथ सनवाल व चन्द्रशेखर पाण्डे, कैकई के अभिनय में शमशेर जंग राना, शबरी में भैरव दत्त जी के अभिनय ने प्रभावित किया था।

अल्मोडा की रामलीला की तरह ही यहाँ का दशहरा भी अद्भुत होता है। यहॉ पर रावण दल के कई पुतलो का निर्माण होता है। आज यह दशहरा जिस भव्य रूप में हमारे सामने है उसकी भूमिका में एक प्रमुख नाम उदयलाल शाह का है।

तुषार कान्त एक घटना का जिक्र करते हुए बताते हैं कि मोहन उप्रेती हमारे पिता जी को इलाहाबाद में आयोजित हो रहे होली कार्यक्रम में ले गए। वहाँ पर गायिका बेगम अख्तर का भी गायन था उनके कार्यक्रम के बाद उदयलाल शाह ने भी होली प्रस्तुत की जिससे बेगम अख्तर बहुत प्रभावित हुई थीं।

वर्तमान में आपके बेटे तुषार कान्त शाह कारखाना बाजार अल्मोडा में रहते है।

हीरा बल्लभ कर्नाटक

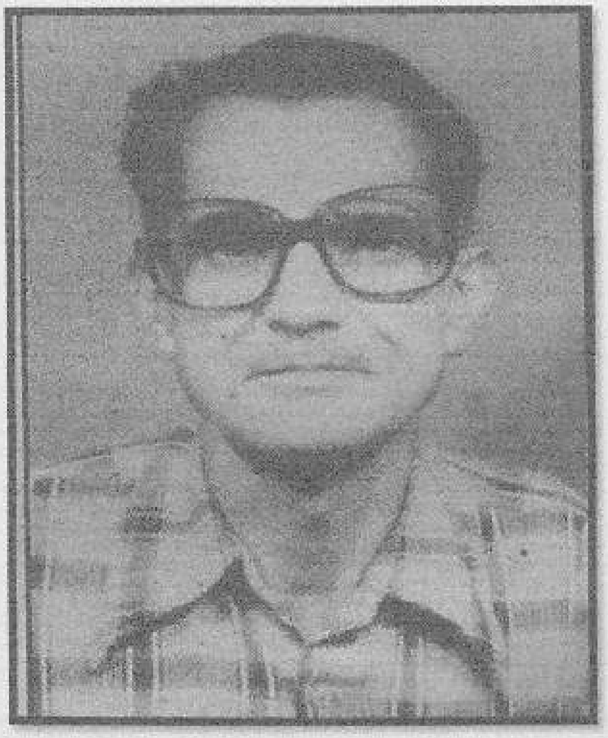

अल्मोडा की प्राचीन सुप्रसिद्ध बद्रेश्वर की रामलीला के एक प्रमुख पात्र श्री हीरा बल्लभ कर्नाटक जी का जन्म सन् 1928 में हुआ और मृत्यु 8 अप्रेल 2007 को हुई। हीरा बल्लभ कर्नाटक जी ने 9 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। इन्होने पहला अभिनय सीता का बद्रेश्वर की रामलीला में सन् 1937 में किया। कुछ वर्षो तक सीता का अभिनय करने के उपरान्त उसी रामलीला में लक्ष्मण के पात्र का अभिनय किया। यह वह दौर था जब अल्मोड़ा में लाईट नही थी बिना माईक के ही लोग अभिनय किया करते थे। पात्रों के चयन की प्रक्रिया भी काफी कठीन हुआ करती थी। कलाकार की आवाज को ज्यादा महत्व दिया जाता था जिससे उसके द्वारा गाया जा रहा संवाद ज्यादा दूर तक और ज्यादा लोगो तक पहुच सके।

79 वर्ष की आयु में प्राचीन रामलीला बद्रेश्वर का यह कलाकार सदा के मौन हो गया। सम्भवतः यह कलाकार उस रामलीला का अन्तिम जीवत व्यक्ति थे। आजीवन अल्मोडा की रामलीला से जुडे रहे।

केशव लाल साह

अल्मोडा की रामलीला में रावण के अभिनय से जुडा कलाकार जिसे रावण को अभिनय ने प्रसिद्धि दिलाई उस कलाकार का नाम था केशव लाल साह । केशव लाल साह जी का जन्म सन् 1906 को अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 भवानी दास साह जी के सुपुत्र थे।

केशव लाल साह जी बचपन से ही अल्मोडा बद्रेश्वर में होने वाली प्राचीन रामलीला को देखने जाया करते थे। उस उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली रामलीला को देखने से उनके अन्दर रामलीला में अभिनय करने की इच्छा हुई और वह रामलीला में अभिनय से जुड गए । प्राप्त जानकारी के अनुसार रामलीला में आने की प्रेरणा व रामलीला के संस्कार अपने पिता भवानी दास साह से मिले। नन्दादेवी की रामलीला में कई वर्षो तक रावण और दशरथ का जीवन्त अभिनय किया। इनकी मृत्यु 18 नवम्बर 1974 को हुई।

केशव लाल साह जी के परिवार में उनके छोटे भाई उदय लाल साह, केवट के अभिनय से, बडे पुत्र किरन लाल साह रावण के अभिनय से, छोटे पुत्र विजय कुमार साह गौरी व शत्रुघन के अभिनय से जुडे रहकर नंदा देवी की रामलीला में विशेष योगदान दिया।

लक्ष्मी दत्त जोशी

उत्तराखण्ड में कुमाऊँनी शैली की सबसे पुरानी रामलीला को मंचित करने वाली बद्रेश्वर रामलीला कमेटी में लक्ष्मण के पात्र से अभिनय की शुरू करने वाले कलाकार लक्ष्मी दत्त जोशी का जन्म 1923 में ग्राम जोश्यना हवालबाग , अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री चन्द्र दत्त जोशी व माता भगवती देवी के पुत्र थे। आपने कक्षा 8 तक की शिक्षा प्राप्त की और अल्मोडा में प्रतिष्ठित व्यापारियों में आप लोग जाने जाते थे। लक्ष्मी दत्त जोशी जी ने लगभग 13–14 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय लक्ष्मण का बद्रेश्वर की रामलीला में किया। बद्रेश्वर की रामलीला जमीन के विवाद को लेकर बंद हुई तो आप नन्दादेवी की रामलीला से जुड गए। प्राप्त जानकारी के अनुसार आपने इन दोनो रामलीलाओं में लक्ष्मण, भरत, केवट, हनुमान, बंदीजन, जनक, सुमन्त, दशरथ आदि के अभिनय किए।

रामलीला में आपके गुरू व प्रेरणा स्त्रोत आपके बडे भाई नन्दन जोशी रहे। नन्दन जोशी कैकई और सूर्पनखा का बहुत सुन्दर अभिनय किया करते थे। रामलीला की तालीम उन दिनो शिवलाल वर्मा दिया करते थे। आपके परिवार मे आपसे पहले आपके बडे भाई नन्दन जोशी और आपके बेटे डॉ0 हेम जोशी, जीवन जोशी व दीपक जोशी ने रामलींला में अभिनय किया। सन् 1991 में 68 वर्ष की आयु में लक्ष्मी दत्त जोशी का देहान्त हुआ।

लक्ष्मी दत्त जोशी जी के बेटे जीवन जोशी बताते हैं कि उन्होने पिता जी से सुना था कि उन्हे केशव लाल शाह का रावण का अभिनय चन्दन सिंह का हनुमान व दशरथ का अभिनय, भैरव तिवारी का कैकई, मंथरा का अभिनय, गुसाईनाथ का सुमन्त का अभिनय बहुत अच्छा लगता था। अपने बडे भाई नन्दन जोशी के अभिनय के तो कायल थे उन्हे तो वह अपने आदर्श के रूप में देखते थे।

वर्तमान में आपका परिवार नन्दन भवन, नन्दादेवी बाजार, अल्मोडा, उत्तराखण्ड में रहता है।

जीवन लाल शाह

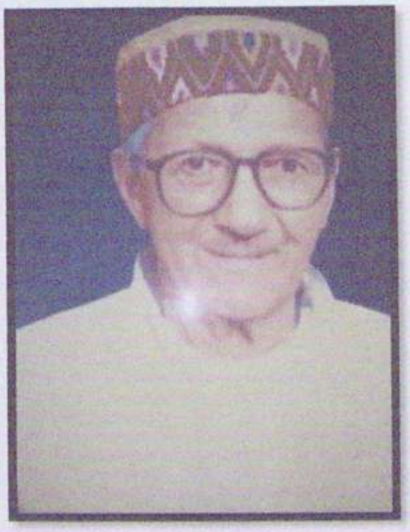

अल्मोडा की रामलीला के कलाकार जीवन लाल शाह का जन्म 1932 में लाला बाजार अल्मोडा में हुआ और मृत्यु अगस्त 2007 को हुई। आप स्व0 श्री किशन लाल शाह के पुत्र थे। आपने इन्टरमिडिएट तक की शिक्षा प्राप्त की और स्वंय का व्यवसाय किया। जीवन लाल शाह जी ने लगभग 20 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय 1952 में अंगद का नन्दा देवी अल्मोडा की रामलीला में किया और फिर जीवनपर्यन्त रामलीला में अभिनय से जुडे रहे। आपने लगातार कई वर्षो तक अंगद, खर और फिर लम्बे समय ते मेघनाद का सशक्त अभिनय किया। लाला बाजार में संगीत का माहौल और भगवान राम की महिमा ही उनको रामलीला की ओर ले जाने में सहायक बनी ।

आपके पुत्रों में रामलीला से जुडने के संस्कार आपके द्वारा ही आए। आपके पुत्र स्व0 सुभाष शाह और वर्तमान में संजय कुमार शाह नंदा देवी की कार्यकारिणी व अभिनय से जुडे हैं।

वर्तमान में आपके परिवार के पत्राचार का पता संजय कुमार शाह, सुभाष साउड सर्विस, लाला बाजार अल्मोडा हैं।

पिताम्बर दत्त पाण्डे

कुमाऊँनी रामलीला के प्रतिष्ठित कलाकार व संगीत निर्देशक पिताम्बर दत्त पाण्डे जी का जन्म 1904 में नौकुचियाताल नैनीताल में हुआ। पिताम्बर दत्त पाण्डे जी ने 10 वर्ष की आयु में नैनीताल की रामलीला में लक्ष्मण के पात्र से अभिनय की शुरूआत की। मधुर कंठ और संगीत के प्रति अपार रूचि उन्हे लखनऊँ के मैरिस म्यूजिक कालेज ले गई वहाँ से उन्होने 1933 में गायन में विशारद की उपाधि प्राप्त की। भारत के बडे संगीतकार नौसाद साहब, वी.जी.जोग, जी.एन.गोस्वामी, कुन्दनलाल सहगल, इलियास खाँ, अहमद जान थिरकवा आदि के साथ हारमोनियम में संगत की।लखनऊँ में रहते हुए आपने मुरली नगर की कुमाऊँ परिषद की प्रसिद्ध कुमाऊँनी शैली की रामलीला को संगीत के नए आयाम दिए। उसके उपरान्त आपने महानगर की रामलीला में बतौर म्यूजिक डायरेक्टर कार्य किया। संगीत व रामलीला के संस्कार आपके परिवार के सभी बच्चों में पड़े। आपके पुत्र चन्द्र प्रकाश पाण्डे, किशन चन्द्र पाण्डे, मुकेश चन्द्र पाण्डे, पियुष चन्द्र पाण्डे, अनुप चन्द्र पाण्डे, शशि प्रकाश पाण्डे ने रामलीला में राम से लेकर सभी पात्रों के अभिनय किए। शशि प्रकाश पाण्डे तो वर्तमान तक भी लखनऊँ की रामलीलाओं में निर्देशन कर रहे हैं।

संगीतकार पिताम्बर दत्त पाण्डे जी का 67 वर्ष की आयु में सन 1971 में देहांत हुआ। वर्तमान में पिताम्बर दत्त पाण्डे जी के पुत्र लखनऊँ में रहते हैं।

केशव दत्त तिवारी

रामलीला के प्रतिष्ठित कलाकार केशव दत्त तिवारी का जन्म 02 जून 1950 को ग्राम डोबा, पो0आ0 डोबा, तहसील व जिला अल्मोडा, उत्तराखण्ड में हुआ। आप स्व0 श्री तारा दत्त तिवारी के सुपुत्र हैं। केशव दत्त तिवारी जी ने 12 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय भरत का नन्दा देवी अल्मोडा में खेली जाने वाली प्रतिष्ठित रामलीला सें किया। आप अल्मोडा में होने वाली रामलीलाओं के एक ख्याति प्राप्त कलाकार हैं। आपने संगीत की विधिवत शिक्षा प्रयाग संगीत समिति से प्राप्त की। आप गुरू व प्रेरक व्यक्ति के रूप में मोहन चन्द्र जोशी (मासाब, रैमजे इण्टर कालेज अल्मोडा) तथा तारा पाण्डे (मासाब, जी0 आई सी0 अल्मोडा) मानते हैं।

आपने कुमाऊँनी शैली की कई रामलीलाओं में अभिनय किया जिनमें मुख्य रूप से नन्दा देवी की रामलीला, पोखरखाली की रामलीला, मुरली मनोहर मन्दिर की रामलीला, लक्ष्मी भण्डार (हुक्का क्लब) की रामलीला शामिल है। आपने 1964 से 1970 तक नन्दा देवी की रामलीला में लक्ष्मण व भरत का अभिनय, उसी समय में 1965 से 1970 तक पोखरखाली की रामलीला में भी लक्ष्मण व भरत का अभिनय किया। फिर 1980 से 1990 तक मुरली मनोहर मन्दिर की रामलीला में दशरथ के पात्र का अभिनय व 1982 से 1990 तक लक्ष्मी भण्डार (हुक्का क्लब) की रामलीला में हनुमान

का अभिनय किया। आपने हनुमान और दशरथ में दशको से भरपूर वाहवाही बटोरी। आपके समय में रामलीला के तालिम सुमन मास्टर व शिव चरण पाण्डे दिया करते थे।

रामलीला में किस कलाकार का अभिनय आपको अच्छा लगा पुछे जाने पर आप बताते है कि उदय लाल शाह रावण का जीवन्त अभिनय किया करते थे जो आज भी मेरे दिल और दिमाग पर अंकित है। वहीं शमशेर जंग राना का कैकई में बहुत जबरदस्त अभिनय किया करते थे। आपने इण्टरमिडिएट तक की पढाई की है आपका जीवनयापन का साधन कृर्षि हैं।

वर्तमान में आप ग्राम डोबा, पो0आ0 डोबा, तहसील व जिला अल्मोडा, उत्तराखण्ड में रहते हैं।

शमशेर जंग राना

रामलीला में महिला पात्रों के अभिनय में अपनी कला लोहा मनवाने वाले कलाकार शमशेर जंग राना का जन्म 12 मई 1947 को पलटन बाजार अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 फतेह जंग राना के सुपुत्र हैं।

शमशेर जंग राना जी ने 13 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय सीता का नन्दादेवी की रामलीला में किया। अल्मोड़ा में खेली जाने वाली लगभग सभी रामलीलाओं में आपने अभिनय किया आपके अभिनय की ख्याति के चलते शहर से बाहर की रामलीलाओं में आपको आमन्त्रित किया जाने लगा।

आपने नन्दा देवी की रामलीला, श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की रामलीला, मुरली मनोहर की रामलीला, खत्याडी की रामलीला, लोधिया की रामलीला, पोखरखाली की रामलीला, एन0टी0डी0 की रामलीला, दुगालखोला की रामलीला, जरूरी बाजार रानीखेत की रामलीला, तल्लीताल नैनीताल की रामलीला, ध्याडी की रामलीला के अतिरिक्त अयोध्या व चित्रकुट में आयोजित रामलीला मेला में उत्तराखण्ड का प्रतिनिधित्व करने वाली श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब के रामलीला मंचन में अभिनय किया। 1962 से 1967 तक सीता का अभिनय और 1968 से सन् 2010 तक कैकई

और सूर्पनखा का अभिनय किया । शमशेर जंग राना ने दर्शको की भरपूर वाह–वाही बटोरी।

शमशेर जंग राना बताते हैं कि स्कूल में उनके पास संगीत विषय रहा जोकि उनकी रूची का था। आप संगीतज्ञ तारा प्रसाद पाण्डे को गुरू तुल्य मानते हैं। आपके समय में रामलीला की तालीम भुवन कलाकार, जगन्नाथ सनवाल व जगदीश चन्द्र दुर्गापाल दिया करते थे। सगीत पक्ष में संगतकर्त्ता किशन सिंह बिष्ट व दिनकर पाण्डे होते थे। रामलीला में आपको भैरव तिवारी का मंथरा का अभिनय, भुवन कलाकार का कैकई का अभिनय, केशव लाल शाह का रावण का अभिनय और केवट के पात्र के रूप में दिवान गिरी के अभिनय मुझे अत्यधिक प्रभावित किया।

आपके कनिष्ठ पुत्र में रामलीला में अभिनय के संस्कार आए हैं उसने दुगालखोला की रामलीला में अंगद, हनुमान व शत्रुघन के पात्र का अभिनय किया।

वर्तमान में आपका पत्राचार का पता – निकट उधोग केन्द्र स्टाफ क्वाटर, दुगालखोला, अल्मोडा– 263601 , उत्तराखण्ड है।

मोहन चन्द्र पाण्डे

रामलीला में अभिनय से लोगो के दिलो में घर बना लेने वाले कलाकार मोहन चन्द्र पाण्डे का जन्म 18 अक्टूबर 1939 को ग्राम पान, पो0 आ0 चित्रेश्वर, जिला अल्मोडा उत्तराखण्ड में हुआ। और मृत्यु 3 अगस्त 2006 को हुई। आप स्व0 श्री बी0 डी0 पाण्डे के पुत्र थे। आपने हाईस्कूल तक की शिक्षा प्राप्त की और राजकीय कर्मचारी रहे । मोहन चन्द्र पाण्डे जी ने लगभग 10 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय शत्रुघन का श्री रामलीला कमेटी ग्राम बैडती में 1949 में किया। आप रामलीला के एक ख्याति प्राप्त कलाकार रहे ।

आपने रामलीला कमेटी ग्राम बैडती–अल्मोडा, नन्दादेवी अल्मोडा की रामलीला, कुमाऊँ परिषद लखनऊ की रामलीला व लक्ष्मी भण्डार (हुक्का क्लब) की रामलीला में अभिनय किया। आपने 1949 से 1955 तक बैडती–अल्मोडा में शत्रुघन, सीता, लक्ष्मण, राम 1960 व 1961 में कुमाऊँ परिषद लखनऊ में परशुराम, 1976 व 1977 में नन्दादेवी की रामलीला में परशुराम तथा 1978 से 1981 तक लक्ष्मी भण्डार (हुक्का क्लब) की रामलीला में परशुराम का सशक्त अभिनय किया। रामलीला में आपके गुरू व प्रेरक व्यक्ति स्व0 चन्द दत्त तिवारी व कुछ अन्य ग्रामवासी रहे। उस समय के तालीम मास्टरों में स्व0 चन्द्र दत्त तिवारी व स्व0 पिताम्बर दत्त पाण्डे थे। रामलीला में तबला लक्ष्मी दत्त तिवारी आपके मानस में सर्वोच्य अभिनय करने वाले कलाकारों में स्व0 उपेन्द्र तिवाडी और ललित चन्द्र तिवाडी कैकई के अभिनय में, स्व0 चतुरसिंह नेगी मंथरा, तारा, मन्दोदरी के अभिनय में रहे। वहीं स्व0 गिरीश चन्द्र पन्त का परशुराम का अभिनय आज भी आखों के सामने हैं।

आपके बाद आपके भतीजे स्व0 कैलाश चन्द्र पाण्डे व सतीश चन्द्र पाण्डे रामलीला में अभिनय पक्ष से जुडे रहे।

वर्तमान में आपका परिवार मुहल्ला झिझाड, अल्मोडा (उत्तराखण्ड) में रहता है।

भोलादत्त तिवारी

(संगीतकार के रूप में)

कुमाऊनी रामलीला के प्रतिष्ठित संगीतकार भोलादत्त तिवारी का जन्म 5 सितम्बर 1928 को ग्राम वमनस्वाल पो0 आ0 वमनस्वाल, समीप चितई , अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 दुर्गादत्त तिवारी के सुपुत्र हैं। शुरूआती दौर में रामलीला में अभिनय से जुडे उसके उपरान्त संगीत निर्देशन व तालीम मास्टर के रूप में रामलीला में आज भी अपनी सेवाऐं दे रहें हैं। आपने डेढ दर्जन से अधिक रामलीलाओं में संगीत निर्दशन का कार्य कर चुके हैं।

भोलादत्त तिवारी जी 15 वर्ष की आयु में बानठोक (समीप पनुवानौला)अल्मोडा रामलीला में अभिनय से जुडे। सन् 1950 में आप दिल्ली आ गए और 1951 में आपने दिल्ली में होने वाली रामलीलाओं में बतौर संगीत निर्देशक काम करने लगे।

भोलादत्त तिवारी जी ने संगीत की शिक्षा सुपई ग्राम के मोती राम तिवारी, ग्राम बनन तिलाडी के यशोधर पन्त व गंर्ध्व महाविद्यालय कनाट प्लेस से प्राप्त की। रामलीला में आप गुरू नरसिंह मटियानी जी को मानते है । ऐसा कहा जाता हैं कि नरसिंह मटियानी कुमाऊॅं क्षेत्र में रामलीला व होली गायिकी के ख्याति प्राप्त कलाकार के रूप में उनका नाम लिया जाता है।

तिवारी जी ने 1951 से 1972 तक यानि की 21 वर्ष अल्मोडा रामलीला समिति गोल मार्किट नई दिल्ली में संगीत निर्देशन। इसी बीच दो वर्ष 1962 और 1963 में आपने

अल्मोडा ग्राम कमेटी मिंटो रोड नई दिल्ली की रामलीला में संगीत निर्देशन किया। सन् 1973 में आप अपने गॉव अल्मोडा में आ गए। पहाड में भी आप रामलीलाओं के संगीत पक्ष से जुडे रहे। आपने अभी तक रामलीला के कितने कलाकारों को तालीम दी उनकी संख्या बता पाना कठिन कार्य है। इतना अवश्य कहा जा सकता हैं कि आपके द्वारा कई सौ कलाकार प्रशिक्षित किए जा चुके होगें।

पहाड में आपके द्वारा जिन रामलीलाओं में तालीम और संगीत निर्देशन किया गया उनमें बमनस्वाल की रामलीला में 4 वर्ष, ग्राम गवाड की रामलीला में 3 वर्ष, मेहरा गॉव की रामलीला में 5 वर्ष, दन्या ग्राम की रामलीला में 7 वर्ष, काफलीखान की रामलीला में 1 वर्ष, मिरोली सालम की रामलीला में 2 वर्ष, फटकवाल ढुगंरा सालम की रामलीला में 1 वर्ष, ध्यूलीजाख सालम की रामलीला में 1 वर्ष, कपकोट की रामलीला में 1 वर्ष, झडोज(लमगड़ा के समीप) की रामलीला में 1 वर्ष, लमगड़ा की रामलीला में 2 वर्ष, निरई सालम की रामलीला में 1 वर्ष, बुद्धिबल्लभ (चलनीछीना) की रामलीला में 2 वर्ष, नौ गॉव (चलनीछीना) की रामलीला में 2 वर्ष, दयूनाथल (चलनीछीना के समीप) की रामलीला में 2 वर्ष, पितना सालम की रामलीला 1 वर्ष, भटट् गॉव की रामलीला 1 वर्ष शामिल हैं।

भोलादत्त तिवारी बताते हैं कि उनका प्रयास रहता हैं कि वह 14–15 वर्ष के बच्चो को राम लक्ष्मण का अभिनय करवाऐं। महिलाओं की रामलीला में भागेदारी पर उनका कहना हैं कि मैने 2011–12 में दन्या की रामलीला में राम लक्ष्मण और सीता का अभिनय लडकियों से करवाया। जोकि इन पात्रों में लडकियों की शुरूआत थी। वैसे वहॉ पर एक पन्त परिवार की महिला कई वर्षो से कैकई के पात्र का अभिनय करती है। उनके साथ दशरथ का अभिनय गोविन्द बल्लभ पन्त किया करते हैं।

तिवारी जी के परिवार में उनके पिता दुर्गादत्त तिवारी बानठोक की रामलीला में और बमनस्वाल की रामलीला में हनुमान का अभिनय किया करते थे। छोटे भाई भैरव दत्त तिवारी ने सीता व राम का अभिनय, भतीजी पुष्पा व नीलम ने मोहन उप्रेती के

निर्देशन में होने वाली रामलीला में कैकई, सूर्पनखा आदि का अभिनय किया। भतीजी पुष्पा की बेटी ऋधिमा बग्गा ने भी रामलीला में सीता अभिनय किया।

आप बताते है कि अभिनय की दृष्टि से आपको जिन कलाकारो का प्रदर्शन अच्छा लगा उनमें भैरव दत्त तिवारी का सीता का अभिनय, मेघनाद के अभिनय में लाल सिंह बोरा, दशरथ के अभिनय में गोविन्द बल्लभ पन्त और रावण के अभिनय में काशीराम पन्त प्रमुख हैं।

वर्तमान में आप ग्राम वमनस्वाल पो0 आ0 वमनस्वाल,समीप चितई , अल्मोडा में रहते है।

ईश्वरी लाल शाह

उत्तराखण्ड में कुमाऊँनी शैली की सबसे पुरानी रामलीला को मंचित करने वाली बद्रेश्वर रामलीला कमेटी में संगीत पक्ष से जुडे कलाकार ईश्वरी लाल शाह का जन्म 1900 में अल्मोडा में हुआ और मृत्यु 1977 में हुई। आप स्व0 श्री मोती राम शाह के पुत्र थे। आपने कक्षा 6 तक की शिक्षा प्राप्त की और अल्मोडा में दुकान की और पूरा जीवन रामलीला और होली को समर्पित रहा।

ईश्वरी लाल शाह जी ने लगभग 17 वर्ष की आयु में बद्रेश्वर की रामलीला में सितार बजाने की शुरूआत की। बद्रेश्वर की रामलीला जमीन के विवाद को लेकर बंद हुई तो आप नन्दादेवी की रामलीला से जुडे और वहाँ पर सितार में संगत की। प्राप्त जानकारी के अनुसार आपने एन0टी0डी0 की रामलीला, व हुग्ली फिल्ड मुरली मनोहर के पीछे होने वाली रामलीला में भी सितार पर संगत की। इन्होने सितार की शिक्षा अपने पिता मोती राम शाह से प्राप्त की। मोती राम जी उस जमाने में अल्मोडा के अच्छे सितार वादको में गिने जाते थे।

ईश्वरी लाल जी के बेटे के0पी0शाह बताते हैं कि हमारे दादा मोती राम शाह को उन दिनो नैनीताल में आयोजित होने वाली संगीत की महफिलों में सितार वादन के लिए आमन्त्रित किया जाता था। हुग्ली फिल्ड की रामलीला में शिवलाल वर्मा और जवाहर लाल शाह तालीम दिया करते थे।

ईश्वरी लाल जी के छोटे भाई प्यारे लाल शाह बद्रेश्वर की रामलीला में लक्ष्मण का अभिनय किए थे । उनके बाद की पीढी में उनके बेटे कान्ता प्रसाद शाह ने लक्ष्मण का अभिनय किया। ऐसा कहा जाता है कि हुक्का क्लब मे श्राद्ध पक्ष में बैठकी रामलीला का आयोजन होता था जिसमें कलाकार बैठ कर ही अपना अभिनय गायन में किया करते थे। ऐसा पता लगा है कि ईश्वरी लाल जी बैठकी रामलीला में अभिनय किया करते थे

लेकिन मंचित रामलीला में उन्होने मात्र सितार वादन ही किया है। ईश्वरी लाल जी के पुत्र प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ0 रमेश चन्द्र शाह अपनी पुस्तक में अपने पिता के सितार और होली की बैठको के प्रेम का उल्लेख करते हैं।

वर्तमान में आपका बेटे के0पी0 शाह आनन्द कुटीर, फॉसी गधेरा, तल्लीताल नैनीताल उत्तराखण्ड में रहते है।

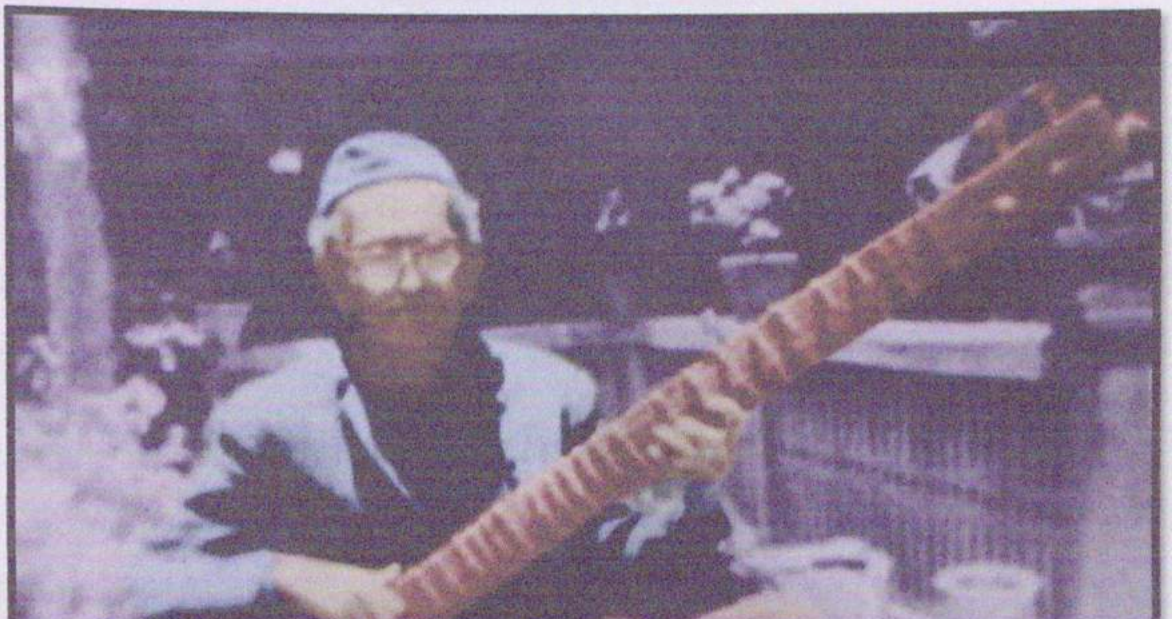

जगदीश चन्द्र तिवारी

रामलीला के कलाकार जगदीश चन्द्र तिवारी का जन्म 1929 को ग्राम शैल पो0 बल्डोटी नारायण तेवाड़ी देवाल, अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री निर्भयानन्द तिवारी के सुपुत्र थे। जगदीश चन्द्र तिवारी जी ने 20 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। इन्होने पहला अभिनय परशुराम का नारायण तेवाड़ी देवाल की रामलीला में सन् 1949 में किया।

जगदीश चन्द्र तिवारी जी की पुत्री श्रीमती सरोज जोशी बताती हैं कि उनके पिता जी ने परशुराम, हनुमान और दशरथ का अभिनय 1978 तक लगभग 29 वर्ष किया। जगदीश चन्द्र तिवारी जी ने इन्टरमिडिएट तक शिक्षा प्राप्त की और सरकारी नौकरी से सेवानिवृत्त हुए। आपकी मृत्यु 62 वर्ष की आयु में सन् 1991 में हुई। इनके पुत्र गिरजेश चन्द्र तिवारी पोखरखाली की रामलीला में भरत का अभिनय किया करते थे। सरोज जोशी कहती हैं कि उनके पिता जैसा अपनी बातचीत में बताया करते थे की उनको मुन्ना काण्डपाल का कैकई और सूर्पनखा का अभिनय, भैरव दत्त तिवारी का मंथरा और शबरी का अभिनय तथा लक्ष्मण परशुराम संवाद में अपने साथ लक्ष्मण के अभिनय में नवीन चन्द्र तिवारी का अभिनय मनभावन लगता था।

वर्तमान में आपके पुत्र ग्राम शैल (आननद पुर) पो0 बल्डोटी, नारायण तेवाड़ी देवाल, अल्मोडा (उत्तराखण्ड) मे रहते हैं।

गंगा प्रसाद साह

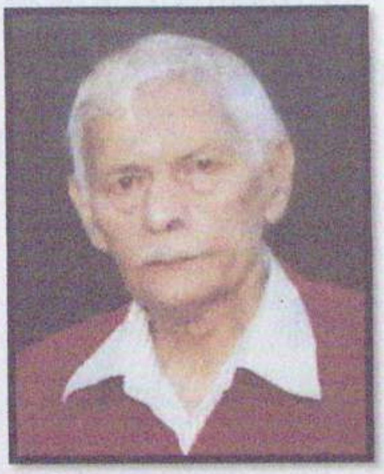

कुमाऊनी रामलीला के प्रतिष्ठित कलाकार गंगा प्रसाद साह जी का जन्म नैनीताल में हुआ। आप स्व0 श्री नन्दन लाल साह जी के सुपुत्र हैं। गंगा प्रसाद साह जी रामलीला में अभिनय से जुडे उसके उपरान्त निर्देशन, तालीम और संस्था के पदाधिकारी के रूप में रामलीला में आज भी अपनी सेवाऐं दे रहें हैं। गंगा प्रसाद साह जी ने 6–7 वर्ष की आयु में राम सेवक सभा मल्लीताल के तत्वावधान में होने वाली रामलीला में अभिनय से जुडे और पहला अभिनय बंदर का किया।

गंगा प्रसाद साह जी बताते हैं कि हमारा घर श्री रामसेवक सभा के सामने ही पडता है। बचपन से ही रामलीला में अन्य बच्चों की भांति रामलीला में रूचि होना स्वाभाविक है। सबसे पहले मुझे रामलीला में बन्दर बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय मेरी उम्र 6–7 वर्ष की रही होगी। यहॉ से श्री रामसेवक सभा और रामलीला मंच में प्रदर्शन की शुरूआत हुई। 1918 में जब श्री रामसेवक सभा की स्थापना हुई तो उसके संस्थापक सदस्यों के रूप में मेरे पितामह स्व0 राम किशन साह को इसके प्रथम सदस्य होने का गौरव प्राप्त हुआ। इसी वर्ष सभा की दूसरी बैठक में मेरे पिता स्व0 नन्दन लाल साह भी सभा के सदस्य बनाए गए उनकी मृत्यु के बाद वर्ष 1951 में मुझे भी सदस्य बनाया गया तब से निरन्तर मैं इस सभा से जुडा हुआ हूॅ। इन 65 वर्षो में अनेक पदों का निर्वाहन करते चला आ रहा हूॅ।

गंगा प्रसाद साह जी ने कई पात्रों का अभिनय किया और अपनी कलाकर्म की क्षमता का परिचय दिया। इन्होने बंदर के पात्र से शुरूआत कर राम, सीता, परशुराम, दशरथ, नारद, रावण, श्रवण कुमार, बाली और सुग्रीव का अभिनय किया।

वर्तमान में गंगा प्रसाद साह जी श्री रामसेवक सभा के सामने, मल्लीताल नैनीताल में रहते हैं।

मोतीराम पोखरिया

कुमाऊँनी रामलीला के प्रतिष्ठित संगीतकार मोतीराम पोखरिया जी का जन्म 1 जनवरी 1950 को ग्राम तल्ली पोखरी,नया गॉव, विकास खण्ड ओखलकाण्डा, तहसील धारी जिला नैनीताल में हुआ। आप स्व0 श्री जगन्नाथ पोखरिया व माता स्व0 श्रीमती कान्ती देवी के सुपुत्र हैं। शुरूआती दौर में रामलीला में अभिनय से जुडे उसके उपरान्त संगीत निर्देशन व तालीम मास्टर के रूप में रामलीला में आज भी अपनी सेवाऐं दे रहें हैं।

मोती राम पोखरिया जी ने 10 वर्ष की आयु में तल्ली पोखरी में होने वाली रामलीला में अभिनय से जुडे। पहला अभिनय आपने भरत का किया उसके उपरान्त आपने लक्ष्मण, राम, सूर्पनखा, कैकई , शबरी, सुलोचना, अंगद, परशुराम, तारा, मंदोदरी, केवट, बाली, बंदीजन, विभिषण, मेघनाद आदि पात्रों का अभिनय किया। सूर्पनखा के पात्र से आपको रामलीला के क्षेत्र में बहुत प्रसिद्धि मिली। मोती राम जी बताते हैं कि रावण और दशरथ ही दो पात्र से हैं जिनका अभिनय आपने नही किया बाकि सभी के अभिनय आपके द्वारा किए गए।रामलीला में काम करने का संस्कार आपको अपने पिता जगन्नाथ पोखरिया जी से मिला।

मोती राम पोखरिया जी बताते हैं कि उन्होने तल्ली पोखरी की रामलीला, अघौड़ा की रामलीला, नाई की रामलीला, ज्वैश्यूड़ा की रामलीला, भेड़ा पानी की

रामलीला, हरीशताल की रामलीला, गरगड़ी की रामलीला, कालुआगर की रामलीला, खंस्यू की रामलीला, ओखलकाण्डा की रामलीला, तल्ला झाडगॉव की रामलीला, डालकान्या की रामलीला में अभिनय, निर्देशन और तालिम मास्टर के रूप में कार्य किया। हल्द्वानी में खेली जाने वाली कलावत्ती कालौनी और दुर्गा कालौनी की रामलीला में निर्देशन का कार्य किया। मोती राम पोखरिया जी बताते हैं कि उनके समय में तालिम स्व0 ईश्वरी राम आर्या, स्व0 शिवदत्त पोखरिया दिया करते थे ये लोग ही रामलीला मंचन के समय हारमोनिय बजाया करते थे और तबले पर उनका साथ स्व0 श्री उमेद राम और सुरेश आर्या दिया करते थे।

मोती राम जी के परिवार में रामलीला के संस्कार उनके पिता से होते हुए उनके भाई, बेटे, भतिजे, व नाती तक हस्तांतरित हुए हैं। पिता जगन्नाथ पोखरिया–दशरथ,बडे भाई त्रिलोचन पोखरिया– राम, बडे भाई मथुरा दत्त जोशी–लक्ष्मण और राम, बडे बेटे दीपक पोखरिया– सीता, छोटा बेटा पंकज पोखरिया–सीता और राम, भतीजा हरीश जोशी–लक्ष्मण, नाती गौरव पोखरिया ने सीता का अभिनय किया है।

आप बताते है कि अभिनय की दृष्टि से आपको जिन कलाकारो का प्रदर्शन अच्छा लगा उनमें स्व0 शिव दत्त जी के द्वारा खेला गया परशुराम व जोकर, बच्चीं सिंह मटियाली के द्वारा खेला रावण और दशरथ का अभिनय, हरीश सिंह मटियाली के द्वारा खेला गया अंगद का अभिनय, विरेन्द्र सिंह मटियाली के द्वारा खेला गया सूर्पनखा का अभिनय, शिव सिंह मटियाली के द्वारा खेला गया जटायू का अभिनय, नन्दन सिंह मटियाली के द्वारा खेला गया केवट का अभिनय, गौरव पोखरिया के द्वारा खेला गया सीता और का अभिनय प्रमुख हैं। आपने बताया की ग्राम तल्ली पोखरी की आदर्श रामलीला मटेला –पोखरी की रामलीला सर्दियों की नवरात्रियों में आयोजित होती है।

वर्तमान में आप ग्राम तल्ली पोखरी,नया गॉव, विकास खण्ड ओखलकाण्डा, तहसील धारी जिला नैनीताल में रहते है।

दिनेश चन्द्र जोशी (कन्नू उस्ताद)

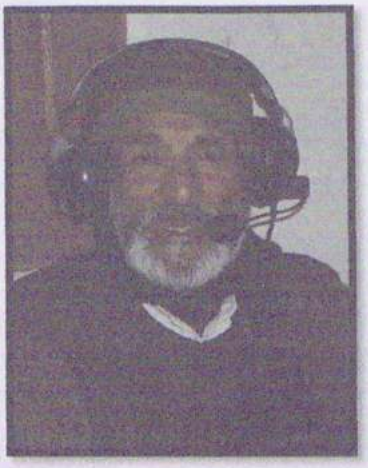

रामलीला के प्रतिष्ठित कलाकार दिनेश चन्द्र जोशी (कन्नू उस्ताद) का जन्म 10 अक्टूबर 1940 को काशीपुर में हुआ। आप स्व0 राम दत्त जोशी जी व माता स्व0 श्रीमती गोविन्दी जोशी के सुपुत्र थे। आपने इन्टर के उपरान्त आई0टी0 आई की और सरकारी सेवा में रहे आपकी मृत्यु 1 अगस्त 2011 को नैनीताल में हुई। संगीत में तबला विषय से आपने विशारद की उपाधि प्राप्त की। नैनीताल में रहते हुए आपने संगीत का प्रचार प्रसार अपने स्वंय के माध्यम से किया। सम्भवतः 15 वर्ष की आयु से आपने तल्लीताल नैनीताल की रामलीला से अभिनय की शुरूआत की।

आपने पहला अभिनय सूर्पनखा का किया। उसके उपरान्त आपने कैकई का अभिनय किया। अभिनय के बाद एक लम्बे समय तक आपने रामलीला में तालिम, हारमोनियम और तबला वादन तल्लीताल नैनीताल, त्यूनरा अल्मोडा और तल्लीताल कैंट की रामलीला में किया। कन्नू उस्ताद रामलीला के कलाकार , हारमोनियम ,तबला वादन किया वहीं कुमाऊँ के कुशल होली गायक के रूप में भी जाने गए। रामलीला में इनके प्रेरणा स्त्रोत इनके पिता रहे। कन्नू उस्ताद ने कई लोगो रामलीला में सूर्पनखा व कैकई के अभिनय में दक्ष किया। आपको रामलीला में कुशल अभिनय व होली गायकी के लिए कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया।

कन्नू उस्ताद का परिवार भवानी लॉज , कैंट, तल्लीताल , नैनीताल में रहता है।

उदय किरौला

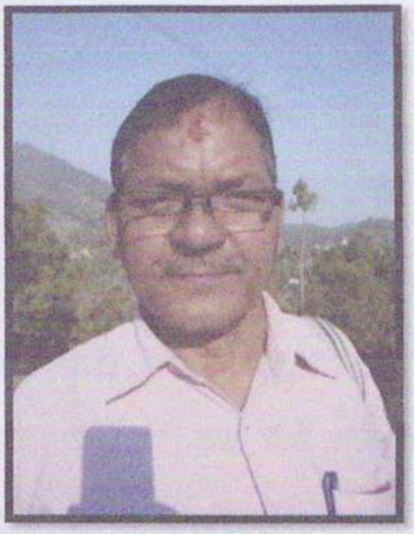

रामलीला के कलाकार उदय किरौला का जन्म 12 मार्च 1960 को ग्राम कलौटिया द्वाराहाट में हुआ। आप स्व0 श्री आनसिंह किरौला व स्व0 श्रीमती मालती देवी के पुत्र हैं। आपने स्नात्कोत्तर हिन्दी व समाज शास्त्र से व एम0 काम0 किया। पेशे से आप एक पत्रकार हैं आपके द्वारा बच्चों के सर्वागिण विकास के लिए बाल प्रहरी नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। उदय किरौला ने लगभग 18 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। 1978 में द्वाराहाट नगर क्षेत्र की रामलीला में पहला अभिनय हास्य कलाकार (जोकर) का किया।

उदय किरौला अपने सशक्त अभिनय के चलते आस पास के क्षेत्रों में होने वाली रामलीलाओं से संबद्ध रहे हैं जिनमें मुख्य रूप से द्वाराहाट नगर क्षेत्र, पूज़ाखेत की रामलीला, ताकुला की रामलीला, सतयली की रामलीला, बसौली की रामलीला, बग्वाली पोखर की रामलीला, मल्ली मिरई की रामलीला, गटैढाली(विजयपुर) की रामलीला, चित्रेश्वर की रामलीला, बिठोली की रामलीला, गरूड बागेश्वर की रामलीला, खिरखेत (रानीखेत) की रामलीला, गवाड़ (विमाण्डेश्वर) की रामलीला शामिल है। इन रामलीलाओं में इन्होने जोकर,

कुम्भकरण, हनुमान, अहिरावण, सूर्पनखा, जटायू और नारदमोह में नारद का अभिनय किया।

रामलीला में अभिनय की इच्छा स्वयं जागृत हुई रामलीला में आपके गुरू त्रिलोक सिंह(विजयपुर) रहे। उदय किरौला बताते हैं कि गुसाई दत्त कफडा में की रामलीला में, रकाली दत्त तल्ला मिरई की रामलीला में तालिम दिया करते थे। गुसाई दत्त जी के द्वारा खेला जाने वाला कुम्भकरण का अभिनय मुझे सर्वाधिक अच्छा लगा और आने वाले व वर्षो में जब मैने कुम्भकरण का अभिनय किया तो उससे मुझे बहुत कुछ सिखने को मिला।रामलीला में मेरे बाद मेरे बच्चे गरिमा किरौला और संतोष किरौला ने रामलीला में अभिनय किया।

वर्तमान में उदय किरौला जी दरबारी नगर अल्मोडा, उत्तराखण्ड में रहते हैं।

गणेश प्रसाद त्रिपाठी

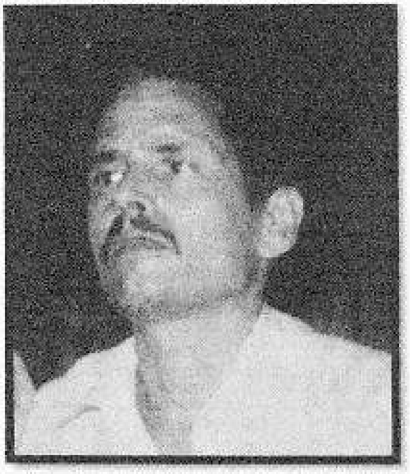

कुमाऊनी रामलीला के प्रतिष्ठित कलाकार गणेश प्रसाद त्रिपाठी रामलीला में शुरू में अभिनय और बाद के वर्षो में रामलीला में तबला वादक की हैसियत से जाने गए। गणेश प्रसाद त्रिपाठी जी का जन्म जुलाई 1951 में नैनीताल में हुआ। आपके पिता स्व0 द्वारिका प्रसाद त्रिपाठी थे। 13 वर्ष की आयु में रामलीला में अभिनय की शुरूआत सीता सखी से हुई। पहली बार अभिनय कैण्ट तल्लीताल नैनीताल की रामलीला में किया। गणेश प्रसाद त्रिपाठी बताते हैं कि सीता सखी का अभिनय मिलते ही मुझमें उत्साह का संचार हुआ और मैं मुख्य पात्र का अभिनय करने का मन में संकल्प कर बैठा। उसके बाद के वर्षो में मैने सीता का अभिनय किया। उन दिनो तल्लीताल की रामलीला का महत्व ही कुछ और हुआ करता था। वहाँ पर अभिनय करने का मौका मिलने से कलाकार अपने को बहुत भाग्यशाली मानता था। पात्रों के चयन प्रक्रिया बहुत हीं कठीन होतीं थीं 25–30 बच्चे अपना भाग्य अपनाते थे। वहॉ पर भीं सीता के लिए मेरा चयन हो गया। हमेशा से लक्ष्मण के पात्र का अभिनय करने वाले कलाकार डॉ0 मदन मोहन जोशीं लक्ष्मण बने पूर्व के वर्षो में सीता का अभिनय करने वाले कन्नू ने राम का अभिनय किया। तालीम में कौनीं साह जीं बैठते थे मुझे अच्छी तरह याद है कि उनके पास एक छडी होती थी जिससे सभीं बच्चे डरते थे और अनुशासन बना रहता था। स्मृति अनुसार रावण के पात्र का अभिनय कैलाश उप्रेतीं, परशुराम का अभिनय गोविन्द

तिवारी हुआ करते थे। फिर पिता जी के साथ हम चोगलियाँ आ गए वहाँ पर मैने कई वर्षो तक लक्ष्मण के पात्र का अभिनय किया। चोरगलिया के बाद हम लोग लखनऊ आ गए वहाँ पर मैने भातखण्डे से तबला वादन सीखा और लखनऊ की रामलीला में तबला बजाने लगा। गणेश प्रसाद त्रिपाठी ने बताया की उनके परिवार में उनके दादा स्व० हरि राम त्रिपाठी जोकि मदन मोहन मालवीय जी के सहपाठी थे ने कुमाऊँनी शैली का रामलीला के लिए कैकई दशरथ संवाद के गीत लिखे। जोकि आज भी रामलीला में गाए जाते हैं। यह गीत उनके द्वारा रामलीला के शुरूआती दिनो ही लिखे गए। पिता स्व० द्वारिका प्रसाद त्रिपाठी बद्रेश्वर की रामलीला में भरत का अभिनय करते थे। मेरे बडे भाई ललित मोहन त्रिपाठी राम का अभिनय किया करते थे।

वर्तमान में गणेश प्रसाद त्रिपाठी साकेतपुरी, आलमबाग लखनऊ में रहते है।

(93)

1965

दीप पाण्डे

रामलीला के प्रतिष्ठीत कलाकार व रंगमंच के कुशल निर्देशक व अभिनेता दीप चन्द्र पाण्डे का जन्म 17 जून 1962 को शहर अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री बसन्त बल्लभ पाण्डे के पुत्र हैं। आपने स्नात्तक करने के उपरान्त एल0एल0बी0 किया। रंगमंच से जुडे और अल्मोडा में रंगमंचीय कलाकार तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

दीप पाण्डे जी ने 15 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय बाणासुर का लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की रामलीला अल्मोडा में किया। उसके उपरान्त इसी रामलीला कमेटी में आपने 9 वर्ष बाणासुर और देवगण का अभिनय, तांत्रिक कालदास और खर 1 वर्ष, कुम्भकरण का 5 वर्ष, रावण का 11 वर्ष, परशुराम का 12 वर्ष , दशरथ का अभिनय राष्ट्रीय रामलीला मेला अयोध्या में लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की प्रस्तुति में किया। हुक्का क्लब के अलावा आपने नन्दादेवी रामलीला कमेटी में वर्ष 1998 में परशुराम का अभिनय किया। हिन्दी रंगमंच के सशक्त हस्ताक्षर दीप पाण्डे जब रामलीला में रावण और परशुराम का अभिनय किया करते थे तो जनता बडी बेसबरी से उनके मंच पर आने की प्रतिक्षा किया करती थी। अभिनय करते हुए आप अपनी रंगमंचीय समझ का पुरा इस्तेमाल किया करते थे । सन् 1998 से आपने रामलीला में अभिनय बन्द कर दिया है। वर्तमान में आप नन्दा देवी रामलीला कमेटी को मेकअप सम्बन्धी सेवाएँ विगत 16 वर्षो से दे रहे हैं।

आपके गुरू व प्रेरक व्यक्ति राजेन्द्र तिवारी, शिव चरण पाण्डे व राजेन्द्र बोरा(त्रिभुवन गिरि) हैं। आपके समय के तालीम मास्टरों में शिव चरण पाण्डे व राजेन्द्र तिवारी हैं वहीं तबला वादको में सुमन भारती और मोतीराम का नाम लिया जा सकता है। कुछ कलाकार ऐसे हैं जिनका अभिनय मुझे आज भी याद आता है कितना जींवन्त अभिनय किया करते थे वो। उनमें उदय लाल शाह रावण के अभिनय में , राजेन्द्र तिवारी और आपको शमशेर राना कैकई के अभिनय में, पन्त बाबा रावण के दरबार में गायक के रूप में अभिनय किया करते थे शामिल हैं।

बहुप्रतिभा के धनी दीप पाण्डे जी ने जहाँ एक ओर रामलीला में अभिनय किया वहीं अल्मोडा शहर में रंगमंच की पृष्ठभूमि तैयार करने का भी कार्य किया।अल्मोडा शहर को इनका एक बडा योगदान पुतलो के निर्माण में भी दिया जाएगा। इन्होने 1978 से रावण दल के विभिन्न पुलतो का निर्माण व नवरात्रों में माँ दुर्गा की प्रतिमा का निर्माण किया।

वर्तमान में आप समीप खगमरा मन्दिर, खगमरा, अल्मोडा (उत्तराखण्ड) में रहते है।

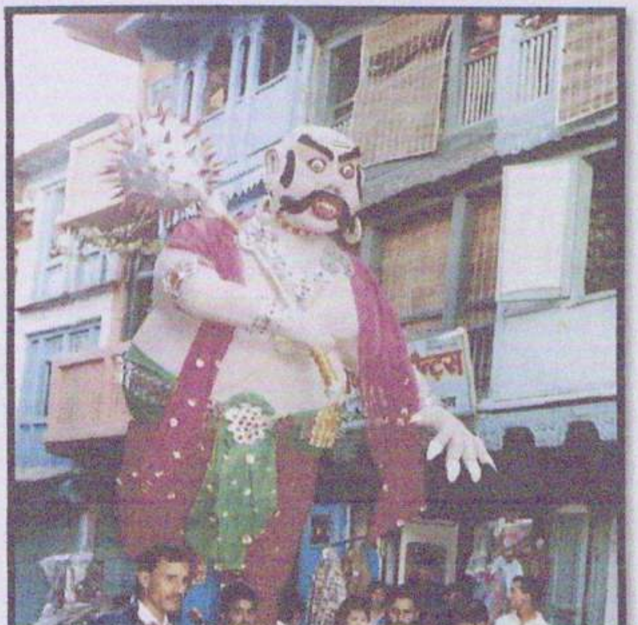

सुबाहु

हरीश चन्द्र पन्त

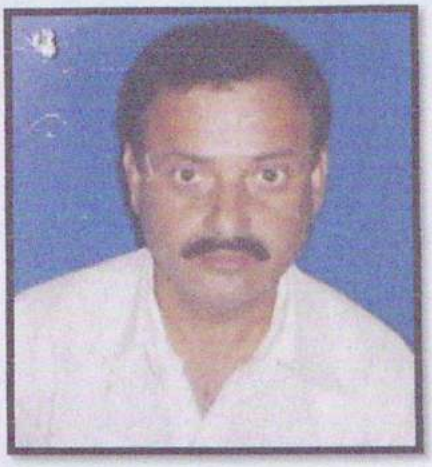

रामलीला के प्रतिष्ठित कलाकार हरीश चन्द्र पन्त का जन्म 01 जनवरी 1968 को ग्राम सुपाकोट , पो0आ0 रनमन, जिला अल्मोडा, उत्तराखण्ड में हुआ। आपके पिता का नाम स्व0 श्री पिताम्बर दत्त पन्त था। हरीश चन्द्र पन्त जी ने 13 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय सुमित्रा व मकरध्वज का श्री रामलीला कमेटी महावीर दल दमडिया रनमन में सन् 1980 में किया। रामलीला में आपके गुरू व प्रेरक व्यक्ति रनमन की रामलीला के तालिम मास्टर हयात सिंह नयाल रहे।

आपने श्री रामलीला कमेटी महावीर दल दमडिया रनमन के अतिरिक्त रामलीला कमेटी ज्योलीकोट में 1980 से 2007 तक विभिन्न पात्रों के अभिनय किए जिनमें सुमित्रा, मकरध्वज, सुबाहु, मारिच, बंदीजन, कुम्भकरण, बाली, जनक, कैकई, जामवन्त, सृपाती व दशरथ के अभिनय प्रमुख हैं। श्री रामलीला कमेटी महावीर दल दमडिया रनमन में आपने कई वर्षो तक तालीम भी दी। रामलीला में आप कलाकारों के मेकअप करने में भी दक्षता रखते हैं। आपके समय में रामलीला मंचन में हारमोनियम वादक मोहन उस्ताद व तबले में गोविन्द राम हुआ करते थे।

रामलीला में किस कलाकार का अभिनय आपको अच्छा लगा पुछे जाने पर आप बताते है कि कैकई व सुलोचना के अभिनय में हरेन्द्र सिंह बिष्ट तथा रावण के अभिनय में

रूप सिंह खडाई का अभिनय बहुत सुन्दर लगा। हरीश चन्द्र पन्त ने राजनीति में स्नात्कोत्तर तक की पढाई करने के बाद आप प्राईवेट कम्पनी में नौकरी करते हें। हरीश चन्द्र पन्त के परिवार में उनके भाई योगेश पन्त व भतीजा क्षितिज पन्त रामलीला में अभिनय से जुडे हैं।

आपका पत्राचार का पता में ग्राम सुपाकोट , पो0आ0 रनमन, जिला अल्मोडा, उत्तराखण्ड है।

जगत सिंह भण्डारी

रामलीला में शुरूआती दौर में अभिनय से जुड़े और उसके उपरान्त रामलीला के कुशल निर्देशको में अग्रिम पंक्ति के व्यक्ति जगत सिंह भण्डारी का जन्म 11 जनवरी 1938 को ग्राम भंडर, बग्वाली पोखर, अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री हरक सिंह भण्डारी के पुत्र है। आपने एम0ए0 तक की शिक्षा प्राप्त कर आप दिल्ली विश्वविद्यालय में सर्विस करने लगे वहाँ से आप 1998 में सब रजिस्ट्रार के पद से सेवानिवृत हुए। जगत सिंह भण्डारी जी ने 11 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय लक्ष्मण का बग्वाली पोखर में खेली जाने वाली रामलीला में किया और उसी वर्ष (1951) में ही ग्राम बिन्ता में होने वाली रामलीला में राम के पात्र का अभिनय किया। उसके बाद के वर्षो में आपने सल्ट में ग्राम दन्यूणा, क्वेरला में राम ओर फिर कालाढूंगी की रामलीला में राम के पात्र का अभिनय किया। 1957 में अपने दिल्ली में आकर अल्मोडा कुमाऊँ वोलेन्टियर कोर (रजि0) करोड़ीमल कालेज में 1958 से 1960 तक रामलीला का निर्देशन व हारमोनियम वादन किया।

जगत सिंह भण्डारी जी से मिली जानकारी के आधार पर 1960–61 में विष्णुदत्त तिवारी, नन्दाबल्लभ तिवारी व लीलाधर जोशी के द्वारा तिमारपुर दिल्ली में रामलीला के मंचन की शुरूआत हुई जिसमें उन्होने दशरथ के पात्र का अभिनय किया। इस रामलीला में अल्मोडा कुमाऊँ वोलेन्टियर कोर (रजि0) करोड़ीमल कालेज के कलाकारों ने

सहयोग दिया। फिर 1961 में दिल्ली यूनिवर्सिटी स्टाफ रामलीला समिति के तत्वावधान में आर्ट फैक्लटी ग्राऊड में होना निश्चित हुआ इसके संरक्षक प्रो0एन.के.पन्त हुआ करते थे और रामलीला के अध्यक्ष जगत सिंह भण्डारी होते थे। भण्डारी जी ने इस रामलीला में दशरथ का अभिनय के साथ–साथ लीला निर्देशक व हारमोनियम वादक के रूप में कार्य किया। आपके प्रयासों से सन् 1968 के रामलीला मंचन में राज्याभिषेक के अवसर पर तत्कालिक रक्षा मंत्री बाबु जगजींवन राम उपस्थित थे। इस रामलीला मे लवकुश काण्ड के मंचन के दिन लीला 9–30 रात्री से शुरू होकर सुबह 4–30 तक चलती थीं और दर्शको की अपार भींड़ बड़े मनोयोग से लीला का आनन्द लेती थीं।

भण्डारी जी के प्रयासों से कुमाऊँनी शैली की रामलीला अन्तर्राट्रीय पटल पर पहुची। वर्ष 1968 में आपके निर्देशन में मलेशिया, सिंगापुर व थाईलैण्ड के कई मंचों पर रामलीला का मंचन हुआ। कई–कई जगह तो दो दिन में पुरी रामलीला का मंचन किया गया। दिल्ली यूनिवर्सिटी स्टाफ रामलीला समिति के द्वारा मंचित की जाने वाली यह रामलीला 1974 में बन्द हो गई। रामलीला के प्रति जो लगाव आपमें था वह आपको 1975–1976 गुलाबीबाग में होने वाली रामलीला में ले आया यहाँ पर आपने हारमोनियम वादक व लीला निर्देशक के रूप में सहयोग दिया। 1977 में भण्डारी जी ने मॉडल टाऊन प्रथम में पर्वतीय रामलीला समिति की स्थापना की जिसके वह संस्थापक अध्यक्ष रहे। सन् 1977 से 1979 तक आपने हारमोनियम वादन व दशरथ के पात्र का अभिनय किया। इस रामलीला में आपके द्वारा लिखित लवकुश काण्ड का मंचन 1982, 1995 व 2000 में किया गया। 1981 में आपने खजूरी खास दिल्ली में उत्तरांचल समाज रजि0 रामलीला समिति की स्थापना की वहाँ पर आप जनरल सैकैट्री रहे। यह रामलीला 1981 से 1986 तक चली फिर 17 वर्षो के बाद 2004 से पुनः मंचन प्रारम्भ हुआ यह रामलीला मात्र 3 वर्ष 2007 तक चली इस रामलीला में आपने दशरथ के अभिनय के अतिरिक्त हारमोनियम वादन व निर्देशन किया।

आपका रामलीला की ओर रूझान आपके परिवार की वजह से हुआ आपका पूरा परिवार रामलीला में अभिनय से जुडा था। 1933 में शुरू हुई बग्वाली पोखर की रामलीला में आपके पिता स्व0 हरक सिंह भण्डारी – परशुराम, चाचा चतुर सिंह भण्डारी – सीता, चाचा स्व0 त्रिलोक सिंह भण्डारी – कैकई, चाचा स्व0 उदय सिंह भण्डारी – राम और रावण, चाचा स्व0 विरेन्द्र सिंह भण्डारी – लक्ष्मण, अंगद और परशुराम का अभिनय किया करते थे।

जगत सिंह भण्डारी जी का पहाड के प्रति प्यार और रामलीला के प्रति लगाव व समर्पण ही था कि सन् 1970 से 1985 तक दिल्ली से जाकर आपने बग्वाली पोखर में रामलीला का मंचन किया और उसे अपने अनुभव से व्यापक रूप दिया। सन् 1999 से वर्तमान तक आप प्रत्येक वर्ष मई जून माह में बग्वाली पोखर जाकर रामलीला का मंचन करते हैं। इस रामलीला कमेटी के आप संरक्षक भी हैं।आपने रामलीला में खेले जाने वाले नाटक नारद मोह, गोस्वामी तुलसीदास, सीताहरण, सीता वनवास, राम लव–कुश युद्ध को गढ़वाली मिश्रित कुमाऊँनी में लिखा जिसका रामलीलाओं के मंच पर मंचन भी हुआ।

वर्तमान में आप गली न0 12, ई–224, खजूरी खास कालौनी, दिल्ली –94 में रहते है।

चन्द्रशेखर पाण्डे

रामलीला के कलाकार चन्द्रशेखर पाण्डे का जन्म 03 मई 1943 पोखरखाली अल्मोडा, उत्तराखण्ड में हुआ। आप स्व0 श्री मनोरथ पाण्डे व माता मालती पाण्डे जी के सुपुत्र है।

चन्द्रशेखर पाण्डे ने 9 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। इन्होने पहला अभिनय भरत का डुबकिया की रामलीला में सन् 1952–53 में किया। उसके बाद एन0टी0डी0 की रामलीला, नन्दादेवी की रामलीला, त्यूनरा की रामलीला, पोखरखाली की रामलीला, लक्ष्मी भण्डार (हुक्काक्लब) की रामलीला , धारानौला की रामलीला, जाखनदेवी की रामलीला शामिल हैं।

इनमे आपने डुबकिया और एन0टी0डी0 में भरत, नन्दादेवी में देवगण, केवट, दशरथ, त्यूनरा में सुमन्त, पोखरखाली में दशरथ, लक्ष्मी भण्डार में सुशेन वैध, धारानौला में जनक और सुशेन वैध आदि पात्रो का अभिनय किया। इसके अलावा आप जाखनदेवी की रामलीला में संगीत पक्ष से जुडे थे वही आप नन्दा देवी रामलीला कमेटी के उपाध्यक्ष व धारानौला रामलीला के संस्थापक सदस्य रहे हैं।

लक्ष्मी भण्डार(हुक्काक्लब) की रामलीला के कलाकार, तालीम मास्टर, निर्देशक शिवचरण पाण्डे जी को आप रामलीला में प्रेरक व्यक्तित्व के रूप में देखते हैं। आपके पिता गाने के शैकिन थे। बेटा विनय ने रामलीला के छोटे पात्रों का अभिनय किया है।

चन्द्रशेखर पाण्डे बताते है कि उस समय स्त्री पात्रो का अभिनय करने वाले कलाकारों में नन्दन जोशी–कैकई, पूरन तिवारी–मंथरा, कौशल्या,सुमित्रा, भुवन कलाकार–मंथरा और कैकई, शमशेर जंग राना–कैकई और सूर्पनखा, भैरव तिवारी–कैकई, सूर्पनखा, शबरी शामिल थे।

अपने समय के तालिम मास्टरो,हारमोनियम वादक व तबला वादको का जिक्र करते हुए बताते हैं कि शिवलाल वर्मा, तारा प्रसाद पाण्डे, खीम सिंह(टेलर मास्टर), देवी लाल उस्ताद व तबले पर मोती राम प्रमुख है।

रामलीला में किस कलाकार का अभिनय आपको अच्छा लगा पुछे जाने पर आप बताते है कि गोसाई जी ने सुमन्त, अमरनाथ सिंह नेगी ने घमन्डी राजा व सुमन्त, चन्द्र सिंह नयाल ने दशरथ, हनुमान, जवाहर लाल शाह ने दशरथ, बनारसी भटट्(हलवाई) ने जनक, धनीलाल शाह ने रावण व वेद प्रकाश बंसल ने सुशेन वैध का अविस्मरणीय अभिनय किया था।

वर्तमान में आपका पत्रव्यवहार का पता नूतन वस्त्र भण्डार, कारखाना बाजार, अल्मोडा है।

किरन लाल साह

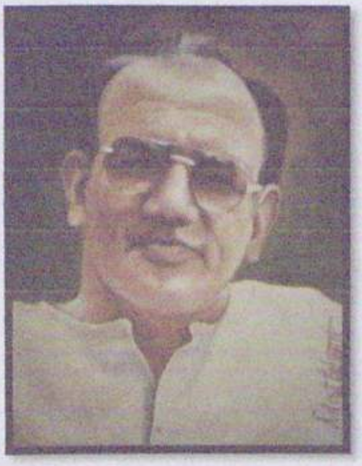

अल्मोडा की रामलीला में रावण के अभिनय से जुडा एक कलाकार जिसे रावण का अभिनय विरासत में मिला वह नाम है किरन लाल साह जी का। किरन लाल साह जी का जन्म 15 अगस्त 1947 को अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 केशव लाल साह के सुपुत्र थे।

किरन लाल साह बचपन से ही रामलीला में अभिनय से जुड गए थे प्राप्त जानकारी के अनुसार रामलीला में आने की प्रेरणा व रामलीला के संस्कार अपने पिता केशव लाल साह से मिले। नन्दादेवी की रामलीला में कई वर्षो तक रावण का जीवन्त अभिनय किया। इनकी मृत्यु 2 फरवरी 2006 को हुई। दर्शक इनका अभिनय देखने के लिए बडे उत्साह से आता था। अल्मोडा में होने वाले दशहरे में पुतलों के निर्माण में भी इनका सहयोग रहता था। किरन लाल साह जी के परिवार में उनके पिता केशव लाल साह रावण और दशरथ का अभिनय, चाचा उदय लाल साह केवट का अभिनय, भाई विजय कुमार साह शत्रुघन का अभिनय नंदा देवी की रामलीला में किया काते थे।

वर्तमान में किरन लाल साह जी के परिवार के सदस्य नन्दा देवी बाजार, अल्मोडा में रहते है।

नवीन बिष्ट

रामलीला के कलाकार नवीन बिष्ट का जन्म 22 जुलाई 1952 को ग्राम सरसों, अल्मोडा, उत्तराखण्ड में हुआ। आप स्व0 प्रेम सिंह बिष्ट के सुपुत्र है आपने 35 वर्ष की आयु में रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। पहला अभिनय आपने दशरथ का सन् 1987 में किया। उसके बाद 1987 से 2015 तक आपने अनेक पात्रों के अभिनय किए जिनमें दशरथ, जनक, परशुराम, सुमन्त , बंदीजन व रावण प्रमुख हैं। यह अभिनय आपने नन्दादेवी की रामलीला, रानीखेत खडी बाजार की रामलीला व कर्नाटकखोला अल्मोडा की रामलीला में किए।

रामलीला में अभिनय के अतिरिक्त आपने 10 वर्ष कर्नाटक खोला की रामलीला में तथा 7 वर्ष रानीखेत की रामलीला में तालीम दी और आवश्यकता पडने पर तबला वादन भी किया। आपके समय में तालीम देने वालों में स्व0 शंकर उप्रेती, अनिल सनवाल व महावीर प्रसाद शामिल हैं रानीखेत में तबले पर लियाकत अली कई वर्षो से रामलीला में अपनी सेवाए दे रहे हैं।

नवीन बिष्ट जी को संगीत के संस्कार अपने माता पिता से मिले। इनके पिता प्रेम सिंह बिष्ट होली गायक व पहाड का लोक वाद्य हुडका और अलगोजा (जायमुरली) बजाने में सिद्धहस्त थे और माता नरुली देवी बिणाई बजाया करती थी। आप बताते है कि अभिनय की दृष्टि से उनको जीवन्त अभिनय कैकइ में नन्दन जोशी,

शमशेर राना तथा रावण के अभिनय में किरन शाह, उदयलाल शाह, बिट्टू कर्नाटक, राजेन्द्र सिंह बिष्ट का लगा जो आज भी याद आता है। नवीन बिष्ट जी पेशे से पत्रकार हैं। इनके द्वारा 10 नाटक क्षेत्रीय बोली में लिखे गए हैं जिनमें से तीन का मंचन प्रदेश स्तर पर किया जा चुका है।

वर्तमान में आप ग्राम सरसो, पो0 आ0 अल्मोडा, उत्तराखण्ड में रहते है।

सईद अहमद

रामलीला के प्रतिष्ठित कलाकार व हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रतीक सईद अहमद का जन्म 1958 को अल्मोडा बाजार, अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 अब्दुल शकूर व माता कनीज़ फातमा के सुपुत्र हैं। आपने लगभग 14 वर्ष की आयु में सूर्पनखा के अभिनय से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने सर्वप्रथम सूर्पनखा का अभिनय हवालबाग की रामलीला में 1972 में किया। रामलीला में अभिनय के पहले ही वर्ष आपने हवालबाग की रामलीला में पात्रों का मेकअप भी किया। आपके प्रेरणा स्त्रोत बृजेन्द्रलाल शाह और मोहन उप्रेती रहे। उसके बाद आपने नन्दा देवी की रामलीला में केवट, सुमन्त, हास्य कलाकार, और मेकअप किया। मुरली मनोहर की रामलीला में मेकअप, राजपुरा की रामलीला में मेकअप, बाल्मिकी बस्ती में मेकअप और हास्य अभिनय, खत्याडी की रामलीला में मेकअप, धारानौला की रामलीला में मेकअप और केवट,एन0टी0डी0 की रामलीला में मेकअप, सरकार की आली की रामलीला में मेकअप, चितई की रामलीला में मेकअप, पोखरखाली की रामलीला में मेकअप किया। सईद अहमद जी ने कक्षा आठ तक की शिक्षा प्राप्त की आप पेशे से आप एक पेन्टर हैं। रामलीलाओं में अभिनय और मेकअप करते हुए आपको 43 वर्ष हो गए आप राम से लेकर रावण तक के सभी पात्रों का मेकअप अकेले करते हैं शाम 6 बजे से रात्री 11 बजे तक आप मेकअप में व्यस्त रहते हैं। आपसे यह साक्षात्कार रामलीला के दिनों में रात्री 12 बजे के बाद बाजार में आपके घर के नीचे स्ट्रीट लाईट में लिया गया।

आपने अल्मोडा की रामलीला के लगभग उन सभी कलाकारों का मेकअप किया है जो अपने अभिनय के लिए आज भी याद किए जाते हैं। रामलीला में आपको जिनका अभिनय अच्छा लगा उनमें केशव लाल शाह– रावण और दशरथ। नन्दन जोशी– कैकई और सूर्पनखा। जगन्नाथ सनवाल–दशरथ। बृजेन्द्रलाल शाह–सुमन्त। किरन शाह–रावण। पंईया दाज्यू–हनुमान और अंगद। भैरव तिवारी–शबरी। शिवचरण पाण्डे–दशरथ। भुवन कलाकार– कैकई, कौशल्या। दिवान कनवाल– दशरथ। शमशेर राणा–कैकई और सूर्पनखा शामिल हैं।

आपके सुपुत्र वसीम अहमद रामलीला में मेकअप और दशहरे में बनने वाले पुतले के निर्माण में सहयोग देते हैं।

वर्तमान में आप कारखाना बाजार अल्मोडा, अल्मोडा 263601 उत्तराखण्ड में रहते है।

नन्दन जोशी

उत्तराखण्ड में कुमाऊँनी शैली की सबसे पुरानी रामलीला को मंचित करने वाली बद्रेश्वर रामलीला कमेटी में लक्ष्मण के पात्र से अभिनय की शुरू करने वाले कलाकार नन्दन जोशी का जन्म 1918 में ग्राम जोश्यना हवालबाग , अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री चन्द्र दत्त जोशी व माता भगवती देवी के पुत्र थे। आपने कक्षा 8 तक की शिक्षा प्राप्त की और अल्मोडा में प्रतिष्ठित व्यापारियों में आप लोग जाने जाते थे। नन्दन जोशी जी ने लगभग 10 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय लक्ष्मण का बद्रेश्वर की रामलीला में किया। बद्रेश्वर की रामलीला जमीन के विवाद को लेकर बंद हुई तो आप नन्दादेवी की रामलीला से जुड गए। प्राप्त जानकारी के अनुसार आपने इन दोनो रामलीलाओं में लक्ष्मण, भरत, केवट, हनुमान, बंदीजन, जनक, सुमन्त, दशरथ आदि के अभिनय किए।

रामलीला में आपके गुरू व प्रेरणा स्त्रोत आपके बडे भाई नन्दन जोशी रहे। नन्दन जोशी कैकई और सूर्पनखा का बहुत सुन्दर अभिनय किया करते थे। रामलीला की तालीम उन दिनो शिवलाल वर्मा दिया करते थे।आपके परिवार मे आपसे पहले आपके बडे भाई नन्दन जोशी और आपके बेटे डॉ0 हेम जोशी , जीवन जोशी व दीपक जोशी ने रामलीला में अभिनय किया। सन् 1991 में 68 वर्ष की आयु में लक्ष्मी दत्त जोशी का देहान्त हुआ।

लक्ष्मी दत्त जोशी जी के बेटे जीवन जोशी बताते हैं कि उन्होने पिता जी से सुना था कि उन्हे केशव लाल शाह का रावण का अभिनय चन्दन सिंह का हनुमान व दशरथ का अभिनय , भैरव तिवारी का कैकई ,मंथरा का अभिनय, गुसाईनाथ का सुमन्त का अभिनय बहुत अच्छा लगता था। अपने बडे भाई नन्दन जोशी के अभिनय के तो कायल थे उन्हे तो वह अपने आदर्श के रूप में देखते थे।

वर्तमान में आपका परिवार नन्दन भवन, नन्दादेवी बाजार, अल्मोडा, उत्तराखण्ड में रहता है।

संजय कुमार शाह

रामलीला के युवा कलाकार व रामलीला कमेटी नन्दा देवी के अध्यक्ष संजय कुमार शाह का जन्म 18 फरवरी 1970 को लाला बाजार , अल्मोडा में हुआ। आप श्री जीवन लाल शाह जी के सुपुत्र है जोकि रामलीला के एक उत्कृष्ठ कलाकार थे।

संजय कुमार शाह ने 08 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय 1978 में बाल अंगद का नन्दा देवी अल्मोडा की रामलीला में किया। आपको रामलीला में जाने वाले आपके पिता हैं वहीं आपके गुरू व प्रेरणा देने वाले व्यक्ति भी हैं। बाल अंगद के उपरान्त आपने लक्ष्मण ,खर, अंगद और फिर लगातार दस वर्षो से नन्दा देवी में मेघनाद का अभिनय कर रहे हैं।

संजय शाह के समय में स्त्री पात्रो का अभिनय करने वाले कलाकारों में मनोज जोशी– सीता, शरद शाह – कैकई, संजय सिराडी– सीता व ललित बिष्ट– मंथरा शामिल हैं।

संजय शाह बताते है कि मुझे स्व0 भुवन कलाकार का मंथरा का अभिनय, स्व0 किरन शाह का रावण का अभिनय , अमरनाथ नेगी का परशुराम का अभिनय, स्व0 जीवन लाल शाह का मेघनाद का अभिनय व देवेन्द्र बिष्ट का सुमन्त का अभिनय ने बहुत प्रभावित किया। इन लोगो के अभिनय को देखकर ही कुछ सीख पाया और आज अभिनय कर पा रहा हुं। संजय शाह ने सनातक तक की पढाई की है और वह स्वय् का व्यापार करते हैं।

वर्तमान में आपका पत्राचार का पता सुभाष साउड सर्विस, लाला बाजार, अल्मोडा हैं।

दीपक जोशी

रामलीला में अभिनय विरासत मिला। अल्मोडा की रामलीला से जुडा ऐसा परिवार जहाँ से नन्दन जोशी, लक्ष्मी दत्त जोशी जैसे कलाकार अपनी प्रतिभा पूर्व में दिखा चुके हैं उनकी दुसरी पीढी में रामलीला को एक और कलाकार मिलता है दीपक कुमार जोशी। दीपक कुमार जोशी का जन्म 25 मई 1964 नन्दा देवी अल्मोडा में हुआ। आप लक्ष्मी दत्त जोशी व माता खष्टी देवी जी के सुपुत्र हैं। आपने 15 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय 1979 में राम का नन्दा देवी अल्मोडा की रामलीला में किया। आपको रामलीला में जाने वाले आपके पिता हैं वहीं आपके गुरू व प्रेरणा देने वाले व्यक्ति भी हैं। कई वर्ष राम का अभिनय करने के उपरान्त आपने नन्दा देवी की रामलीला में ही जनक, केवट व ताडिका का अभिनय किया। जिसे आप वर्तमान तक भी खेल रहे हैं। अपने समय के तालीम मास्टरों का जिक्र करते हुए आप बताते हैं कि उस समय हमें स्व0 भुवन कलाकार व स्व0 जगन्नाथ सनवाल तालीम दिया करते थे और रामसिंह तबले पर होते थे।

दीपक कुमार जोशी को रामलीला में अविस्मरणीय अभिनय अपने ताऊ स्व0 नन्दन जोशी का लगा । नन्दन जोशी जी कैकई और सूर्पनखा के अभिनय के लिए पूरे अल्मोडा शहर में जाने जाते थे।

वर्तमान में आपका पत्राचार का पता नन्दन भवन, नन्दादेवी बाजार, अल्मोडा,उत्तराखण्ड हैं।

भोलादत्त तिवारी

कुमाऊनी रामलीला के प्रतिष्ठित संगीतकार भोलादत्त तिवारी का जन्म 5 सितम्बर 1928 को ग्राम वमनस्वाल पो0 आ0 वमनस्वाल,समीप चितई, अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 दुर्गादत्त तिवारी के सुपुत्र हैं। शुरूआती दौर में रामलीला में अभिनय से जुडे उसके उपरान्त संगीत निर्देशन व तालीम मास्टर के रूप में रामलीला में आज भी अपनी सेवाऐं दे रहें हैं। आपने डेढ दर्जन से अधिक रामलीलाओं में संगीत निर्दशन का कार्य कर चुके हैं।

भोलादत्त तिवारी जी ने 15 वर्ष की आयु में रामलीला मंचन से जुडे। आपने पहला अभिनय राम का 1943 में बानठोक (समीप पनुवानौला) की रामलीला में किया। उसके उपरान्त 1945 मे दोडम (समीप धौलादेवी ब्लाक) में लक्ष्मण का अभिनय किया। वर्ष 1947 में झलतौला स्टेट (गंगोलीहाट) की रामलीला में राम का अभिनय 1949 में अपने पैत्रिक ग्राम बमनस्वाल में रावण का अभिनय किया।

भोलादत्त तिवारी जी ने संगीत की शिक्षा सुपई ग्राम के मोती राम तिवारी, ग्राम बनन तिलाडी के यशोधर पन्त व गंर्ध्व महाविद्यालय कनाट प्लेस से प्राप्त की। रामलीला में आप गुरू नरसिंह मटियानी जी को मानते है । ऐसा कहा जाता हैं कि नरसिंह मटियानी कुमाऊँ क्षेत्र में रामलीला व होली गायिकी के ख्याति प्राप्त कलाकार के रूप में उनका नाम लिया जाता है। तिवारी जी बताते हैं कि उनके समय में स्त्री पात्रो का

अभिनय करने वाले पुरूष कलाकारो में बच्ची सिंह सूर्पनखा, कैकई तथा भैरव तिवारी सीता का अभिनय करने वालों में प्रमुख नाम हैं। तालीम देने वालो में मोती राम तिवारी, नरसिंह मटियानी, यशोधर पन्त रहे। बानठोक की रामलीला में तबले पर यशोधर पन्त ,दन्या की रामलीला में तबले पर नवीन तिवारी व मनोज जोशी रहे।

आपके परिवार में आपके पिता दुर्गादत्त तिवारी बानठोक की रामलीला में और बमनस्वाल की रामलीला में हनुमान का अभिनय किया करते थे। छोटे भाई भैरव दत्त तिवारी ने सीता व राम का अभिनय, भतीजी पुष्पा व नीलम ने मोहन उप्रेती के निर्देशन में होने वाली रामलीला में कैकई, सूर्पनखा आदि का अभिनय किया। भतीजी पुष्पा की बेटी ऋधिमा बग्गा ने भी रामलीला में सीता अभिनय किया।

आप बताते है कि अभिनय की दृष्टि से आपको जिन कलाकारो का प्रदर्शन अच्छा लगा उनमें भैरव दत्त तिवारी का सीता का अभिनय, मेघनाद के अभिनय में लाल सिंह बोरा, दशरथ के अभिनय में गोविन्द बल्लभ पन्त और रावण के अभिनय में काशीराम पन्त प्रमुख हैं।

वर्तमान में आप ग्राम वमनस्वाल पो0 आ0 वमनस्वाल, समीप चितई, अल्मोडा में रहते है।

गिरीश चन्द्र पाण्डे

रामलीला के कलाकार व तालीम मास्टर गिरीश चन्द्र पाण्डे का जन्म 02 फरवरी 1939 को पाण्डेखोला अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री लीलाधर पाण्डे व तारा देवी के पुत्र हैं। आपने कक्षा बारह तक की शिक्षा प्राप्त की और सरकारी नौकरी से सेवानिवृत हैं। गिरीश चन्द्र पाण्डे जी ने लगभग 11 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। 1950 में पाण्डेखोला अल्मोडा की रामलीला में गौरी का अभिनय किया। गौरी के अभिनय के बाद आपके कई वर्षो तक सीता का अभिनय किया।

गिरीश चन्द्र पाण्डे ने 21 वर्ष की आयु से पाण्डेखोला की रामलीला में हारमोनियम वादन व तालीम देना प्रारम्भ कर दिया था जोकि लगभग 30 वर्षो तक चला । आपने पाण्डेखोला की रामलीला में अपने निर्देशन में बहुत से अच्छे कलाकार तैयार किए। आपने संगीत की कोई विधिवत शिक्षा प्राप्त नही की जो कुछ सिखा वह आपकी स्वंय की मेहनत का फल है। रामलीला की ओर रूझान आपका अपने पिता लीलाधर पाण्डे जी की वजह से हुआ। वह लम्बे समय से अल्मोडा का रामलीलाओं से जुडे हुए थे।

आपके समय के स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूष कलाकारों में नवीन चन्द्र पन्त, कौस्तुभा दत्त पाण्डे व बिन्देश्वरी प्रसाद पाण्डे कैकई का अभिनय और चन्द्रशेखर पाण्डे सीता का अभिनय किया करते थे। अन्य कलाकारों का जिक्र करते हुए बताते है कि केशवदत्त पन्त और मोहन चन्द्र पाण्डे दोनो ही कलाकार रावण का अभिनय, लक्ष्मण के अभिनय में अरूण पाण्डे, हनुमान व दशरथ ,जटायू के अभिनय में भुवन चन्द्र शास्त्री, मोहन चन्द्र पन्त के द्वारा किया गया सुमन्त और केवट का बहुत अच्छा अभिनय किया करते थे। गिरीश पाण्डे जी के समय में रामलीला में हारमोनियम वादक श्याम दत्त जोशी व तबले पर लोकमणी जोशी बजाया करते थे।

आप पाण्डेखोला की रामलीला में अभिनय, संगीतपक्ष ओर मेकअप के माध्यम से सहयोग देते रहे। आपसे पहले की पीढ़ी में आपके पिता लीलाधर पाण्डे, ताऊ गोविन्द पाण्डे, चाचा महेश पाण्डे तथा आपके बाद की पीढ़ी में आपके दानो बेटे चन्द्रशेखर पाण्डे और अतुल पाण्डे अभिनय व संगीत पक्ष से जुड कर सहयोग देते रहे।

वर्तमान में आप समीप चन्दार्थ रेस्टोरेन्ट, पाण्डेखोला , अल्मोडा में रहते है।

चन्द्रशेखर पाण्डे

रामलीला से शुरूआत में अभिनय और फिर संगीतपक्ष से जुडकर पाण्डेखोला की रामलीला में सहयोग प्रदान करने वाले कलाकार चन्द्रशेखर पाण्डे का जन्म 30 जून 1969 को पाण्डेखोला अल्मोडा में हुआ। आप श्री गिरीश चन्द्र पाण्डे व कला पाण्डे के सुपुत्र हैं। आपने स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त की और स्वंय का रोजगार है। चन्द्रशेखर पाण्डे जी ने 10 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। 1979 में पाण्डेखोला अल्मोडा की रामलीला में गौरी का अभिनय किया। गौरी के अभिनय के बाद आपने कई वर्षो तक सीता का अभिनय किया।

चन्द्रशेखर पाण्डे ने 23 वर्ष की आयु से पाण्डेखोला की रामलीला में हारमोनियम वादन व तालीम देना प्रारम्भ कर दिया था। आपको रामलीला में अभिनय व संगीत निर्देशन की कला जन्म से ही विरासत में मिली । आपने कई अच्छे कलाकार तैयार किए। आपने संगीत की कोई विधिवत शिक्षा प्राप्त नही की समझ दादा व पिता से मिली बाकि आपकी स्वंय की मेहनत का फल है। रामलीला की ओर रूझान आपका अपने पिता गिरीश चन्द्र पाण्डे जी की वजह से हुआ। जोकि पाण्डेखोला की रामलीला में तालीम दिया करते थे उनको रामलीला की सारी धुने कंठस्थ थी आज भी जबकि अब पाण्डेखोला में रामलीला नही होती तब भी वो हारमोनियम पर रामलीला के पात्रो के

गाने गाते जरूर हैं। मेरा छोटा भाई अतुल साथ में संगत करता है। रामलीला हमारे घर के संस्कारो में हमें मिली है।

चन्द्रशेखर पाण्डे बताते हैं कि उनके समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूष कलाकारों में हरीश चन्द्र पाण्डे– कैकई, व सुनील कुमार जोशी – कैकई, सूर्पनखा का अभिनय किया करते थे। गिरीश पाण्डे जी तालीम व रामलीला में हारमोनियम बजाते थे तबले पर अनिल रावत,भनु बिष्ट व अतुल पाण्डे संगत किया करते थे। आप बताते है कि अभिनय की दृष्टि से आपको जिन कलाकारो का प्रदर्शन अच्छा लगा उनमें स्व0 कौशल पाण्डे का भरत का अभिनय, अरूण पाण्डे का लक्ष्मण का अभिनय, राजू पाण्डे का सुमन्त का अभिनय, ललित मोहन जोशी का कैकई का अभिनय , मोहन चन्द्र पाण्डे का रावण का अभिनय, हेम जोशी का दशरथ का अभिनय, दीप कुमार पाण्डे का राम का अभिनय, दीपक कुमार पाण्डे का सुमन्त का अभिनय और युगल कुमार पाण्डे का विश्वामित्र का अभिनय प्रमुख हैं।

आपके परिवार में आपसे पहले की पीढ़ी में आपके दादा लीलाधर पाण्डे, दादा के भाई गोविन्द पाण्डे, दादा के भाई महेश चन्द्र पाण्डे, आपके पिता गिरीश चन्द्र पाण्डे तथा आपके बाद आपके छोटे भाई अतुल पाण्डे अभिनय व संगीत पक्ष से जुड कर सहयोग देते रहे।

वर्तमान में आपका निवास समीप चन्दार्थ रेस्टोरेन्ट, पाण्डेखोला , अल्मोडा में है।

दिनेश चन्द्र जोशी

रामलीला के कलाकार व तालीम मास्टर दिनेश चन्द्र जोशी का जन्म 14 जून 1952 को ढूंगाधारा अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 जगदीश चन्द्र जोशी (ठेकेदार साहब के उपनाम से मशहुर) व माता सरोजनी जोशी के सुपुत्र है। आपने लगभग 13 वर्ष की आयु में रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। पहला अभिनय आपने भरत का 1966 में पोखरखाली की रामलीला में किया। उसके बाद आपने इसी रामलीला में लक्ष्मण का अभिनय किया।

रामलीला में आप अपना गुरू संगीत आचार्य तारा प्रसाद पाण्डे जी को मानते हैं जिनकी प्रेरणा से आप रामलीला की आकर आकृष्ट हुए उनसे ही आपने रामलीला की धुने सिखी जो आज आपके द्वारा अगली पीढी को हस्तांतरित हुई।

आपकी शैक्षिक योग्यता बी0एस0सी0, एम0ए0 , एल0एल0बी0 हैं। आपने संगीत (तबले) की विधिवत् शिक्षा प्रयाग संगीत समिति से प्राप्त की। रामलीला में अभिनय के बाद आप तालीम से जुड गए अल्मोडा और आस पास के क्षेत्रों में होने वाली रामलीलाओं में आपने तालीम, तबला वादन और आवश्यकता पडने पर हारमोनियम वादन भी किया। आपने पोखरखाली की रामलीला, नन्दादेवी की रामलीला, ढूंगाधारा की रामलीला, धारानौला की रामलीला, विश्वनाथ की रामलीला, ग्राम ढ़ौरा की

रामलीला, पपरसैली की रामलीला, नारायण तेवाडी देवाल की रामलीला, कर्नाटकखोला की रामलीला, जाखनदेवी की रामलीला, लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की रामलीला में तबला वादन किया।

आपके परिवार में आपके बडे भाई स्व0 रमेश चन्द्र जोशी ने पोखरखाली व चीनाखान की रामलीलाओं में अभिनय, छोटे भाई जीवन चन्द्र जोशी ने अभिनय व तालीम मास्टर, छोटे भाई सुधीर कुमार जोशी अभिनय से जुडे रहे।

दिनेश चन्द्र जोशी जीं बताते है कि कैकई की भावपूर्ण भूमिका में नन्दन जोशी , शमशेर जंग राना। शबरी व मन्थरा की भूमिका में भैरव जीं। नन्दादेवी की रामलीला में हनुमान और दशरथ की भूमिका में चन्दा । रावण की भूमिका में पिन्नू भाई एलेक्जैण्डर, दशरथ की भूमिका में जगदीश चन्द्र जोशी के अभिनय ने मुझे निश्चित रूप से प्रभावित किया।

वर्तमान में आप जगदीश निवास ढूंगाधारा रोड, बालेश्वर मन्दिर के निकट, अल्मोडा–263601 उत्तराखण्ड में रहते है।

नित्यानन्द पन्त

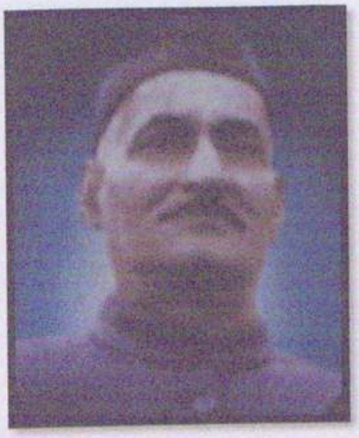

कुमाऊँनी शैली की रामलीला व होली गायिकी के प्रतिष्ठित कलाकार नित्यानन्द पन्त का जन्म 1903 सुनराकोट अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री मोतीराम पन्त व स्व0 श्रीमती श्यामा पन्त के सुपुत्र थे। पोस्ट आफिस हल्द्वानी से पोस्टमास्टर के पद से सेवानिवृत हुए तथा मृत्यु 20 अप्रेल 1995 को नैनीताल में हुई।

नित्यानन्द पन्त जी के बेटे त्रिलोचन पन्त बताते हैं कि ऐसा कहा जाता है कि उन्हे बचपन से संगीत का शौक था। वहीं शौक उन्हे होली गायकी और रामलीला में अभिनय की और ले गया। 20 शताब्दी के शुरूआती दौर के विषय में जानकारी उपलब्ध नही हो सकी। उनके समय के लोगो से पुछने पर पता चला कि रामलीला तल्लीताल में उन्होने कई वर्षो तक दशरथ का अभिनय किया जिसकों दर्शको ने काफी सराहा। दशरथ का अभिनय करना उन्हे बहुत अच्छा लगता था क्योकि दशरथ के पात्र के गाने रागों पर आधारित हैं ।

नित्यानन्द पन्त जी से पहले की पीढ़ी में रामलीला से कोई जुडा था इसकी जानकारी नही मिल पाई। इनके बाद इनके तीन बेटों चन्द्रशेखर पन्त , कैलाश चन्द्र पन्त व त्रिलोचन पन्त ने कई वर्षो तक राम का अभिनय किया । एक बटे किशन चन्द्र पन्त ने रामलाला का निर्देशन से जुड़े थे।

आपके बटे त्रिलोचन पन्त प्यारें लॉज, कैण्ट तल्लीताल में रहते है।

ललित मोहन जोशी

रामलीला के प्रतिष्ठित कलाकार ललित मोहन जोशी का जन्म 5 अक्टूबर 1953 को पाण्डेखोला अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री अमरनाथ जोशी व रेवती जोशी के सुपुत्र हैं। आपने एम.ए., बी0एड. तक की शिक्षा प्राप्त की और शिक्षा विभाग से सेवानिवृत है। ललित मोहन जोशी जी ने 19 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। 1972 में पाण्डेखोला अल्मोडा की रामलीला में कैकई का अभिनय किया। कैकई के अभिनय के बाद आपने कई वर्षो तक जनक, परशुराम, सुलोचना का अभिनय किया।

ललित मोहन जोशी बताते हैं कि पाण्डेखोला में होने वाली रामलीला स्वय् में प्रेरणा बनी। रामलीला में आपके गुरू गिरीश पाण्डे रहे । जिनसे आपने रामलीला की धुनो को सीखा। गिरीश पाण्डे जी पाण्डेखोला में तालीम दिया करते थे। अभिनय की तालीम दूसरे गिरीश पाण्डे दिया करते थे। रामलीला में तबला हेम चन्द्र जोशी बजाते थे। ललित मोहन जोशी जी के समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूष कलाकारों में गंगा प्रसाद पाण्डे, हरीश पाण्डे, चन्द्रशेखर पाण्डे – सीता, भुवन चन्द्र जोशी – सुमित्रा, किरन पाण्डे–कौशल्या का अभिनय किया करते थे।

आप बताते है कि अभिनय की दृष्टि से आपको जिन कलाकारो का प्रदर्शन अच्छा लगा उनमें स्व0 मोहन चन्द्र पाण्डे का रावण, भुवन चन्द्र तिवारी(शास्त्री जी) –हनुमान ,

गिरीश पाण्डे जी (जोकि तबला वादन किया करते थे) मेघनाद, स्व0 रामदत्त पाण्डे परशुराम, स्व. सतीश चन्द्र जोशी– राम, भुवन चन्द्र पन्त–लक्ष्मण शामिल हैं।

पाण्डेखोला की रामलीला के विषय में बताते हैं कि वहाँ महिलाओं का भरपुर सहयोग रहता था रामलीला में स्त्री पात्रों वाले पुरूषों को वहीं तैयार करतीं थीं। रामलीला में एक दिन सुलोचना का अभिनय ही होता था बहुत सुंदर गीत हैं सुलोचना के। भुवन चन्द्र तिवारी(शास्त्री जी) जोकि हनुमान का अभिनय करते थे उनका अभिनय और दैनिक जीवन पूर्णतः राममय था।

ललित मोहन जोशी रामलीला के शुरूआती दिनो की याद करते हुए मायुस हो जाते हैं। बताते हैं कि मुझे अफसोस हैं कि मैने रामलीला में राम का अभिनय नही किया। हमारे दादा स्व. मुरलीधर जोशी संगीत के घोर विरोधी थे। मैने रामलीला में अभिनय करने की जिद् की तो बडी मुश्किल से राजी हुए। एक दिन तालीम से आने में देर हो गई तो नाराज होकर बोले साईस के विद्यार्थी हो पढाई करों रामलीला में नही जाना हैं । रामलीला में जाकर क्या मिरासी बनना है। फिर उनकी मृत्यु के बाद ही मैने रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आज 63 वर्ष की उम्र में भी रामलीला अन्दर तक बसी हुई है मौका मिलता है तो पुराने लोग मिलकर बैठी रामलीला घर पर ही कर लिया करते हैं। बिना किसी किसी मेकअप के बैठे–बैठे अपने पात्र के गीतो को गाकर अभिनय कर संतुष्ट हो लेते हैं। पुरानी यादों को ताज़ा कर लेते हैं।

ललित मोहन जोशी जी के परिवार उनके बडे भाई हेम चन्द्र जोशी अभिनय और तबला वादन, छोटे भाई योगेश कुमार जोशी अभिनय, चाचा के बेटे विनोद कुमार जोशी और सुनील कुमार जोशी रामलीला में अभिनय से जुड़े थे।

वर्तमान में आप भट्ट् कालौनी, फेज–3, लालडांठ रोड, हल्द्वानी, उत्तराखण्ड में रहते हैं।

विनोद कुमार जोशी

रामलीला में शुरूआती दौर में अभिनय से जुड़े और उसके उपरान्त रामलीला के कुशल तालीम मास्टर के रूप में अपनी जगह बनाने वाले विनोद कुमार जोशी का जन्म 03 मार्च 1956 को मोहल्ला ढुंगाधारा अल्मोडा उत्तराखण्ड में हुआ। आप स्व0 श्री लक्ष्मी दत्त जोशी के पुत्र हैं। आपने अर्थशास्त्र में स्नात्तकोत्तर करने के उपरान्त सरकारी नौकरी की। वर्तमान में आप सेवानिवृत हैं और लेखन कार्य से जुडे हैं। हिन्दी और लोक बोली कुमाऊँनी के आप प्रतिष्ठित कवि हैं। विनोद कुमार जोशी जी ने 12 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत बन्दर की सेना से की।

आपने अल्मोडा शहर में होने वाली रामलीलाओं पोखरखाली की रामलीला, ढुंगाधारा की रामलीला में मुख्यतः जनक, विश्वामित्र, केवट, कुम्भकर्ण, सुलोचना का अभिनय किया। अभिनय के साथ ही आपने पोखरखाली की रामलीला, ढुंगाधारा की रामलीला, जाखन देवी की रामलीला में बतौर तालीम मास्टर और निर्देशक के रूप में अपनी सेवाए दी। रामलीला में गुरू व प्रेरक व्यक्तियों में आप स्व0 तारा प्रसाद पाण्डे, स्व0 राजेन्द्र प्रसाद तिवारी, स्व0 राधा बल्लभ तिवारी, मनी पन्त व स्वर्ण कुमार भोज को शामिल करते हैं।जिनसे बहुत कुछ सीखने का मौका मिला।

आप रामलीला में अभिनय, संगीत निर्देशन, तालीम व साज सज्जा के अतिरिक्त दरी बिछाने और दरी उठाने तक के कामों में कभी पिछे नही रहे यह कृत्य

आपका राम के प्रति श्रद्धाभाव को व्यक्त करता है। आपके समय में स्त्री पात्रों के अभिनय करने वाले पुरूषों में भुवन चन्द्र जोशी कैकई के अभिनय में, स्व0 भैरव दत्त तिवारी मंथरा व शबरी के अभिनय में , स्व0 शंकर उप्रेती कैकई के अभिनय में, शमशेर राना कैकई और सूर्पनखा के अभिनय में और गिरजानन्दन तिवारी कैकई के अभिनय में पर्याप्त ख्याति अर्जित की। आप जिस समय अभिनय किया करते थे उन दिनो स्व0 तारा प्रसाद पाण्डे, जीवन चन्द्र पन्त व स्व0 जवाहर लाल शाह जी रामलीला में तालीम दिया करते थे और तबला पदद्ा, मोतदा, दिनेश चन्द्र जोशी (दीनू दा), सुमन लाल, धरणीधर पाण्डे बजाया करते थे।

आपके परिवार में आपसे पहले रामलीला से आपके ताऊ स्व0 भोला दत्त जोशी बद्रेश्वर की रामलीला में कैकई का अभिनय किया करते थे। चचेरे भाई प्रभात कुमार जोशी पोखरखाली की रामलीला में राम, सीता, अंगद भतीजा सुरेन्द्र कुमार जोशी पोखरखाली की रामलीला में लक्ष्मण पुत्र आशुतोष जोशी ढुगांधारा की रामलीला में सीता व शत्रुघन का अभिनय किया करते थे ।

पुरानी यादों के झरोंके से बताते हैं कि रामलीला में भैरव दत्त तिवारी द्वारा किया गया शबरी का अभिनय यादगार अभिनय रहा।

वर्तमान में आप मोहल्ला ढुंगाधारा, अल्मोडा–263601 उत्तराखण्ड में रहते है।

भूपेन्द्र सिंह राणा

रामलीला के कलाकार भूपेन्द्र सिहं राणा का जन्म 7 जुलाई 1943 को शहर अल्मोडा, उत्तराखण्ड में हुआ। आप स्व0 श्री रणजीत सिंह राणा व माता स्व0 सावित्री देवी के सुपुत्र है। भूपेन्द्र सिहं राणा जी ने 12 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय लक्ष्मण का रामलीला कमटी लोधिया में सन् 1955 में किया उसके बाद मुरली मनोहर मन्दिर की रामलीला, लोधिया की रामलीला, खत्याडी की रामलीला, कपकोट बागेश्वर की रामलीला, खडी बाजार रानखेत की रामलीला शामिल हैं। रामलीला में आपके प्रेरणा स्त्रोत जगन्नाथ दुर्गापाल जोकि लोधिया की रामलीला के तालिम मास्टर व शिवलाल वर्मा जिनसे आपने रामलीला का संगीत सीखा।

भूपेन्द्र सिहं राणा जी ने इन रामलीला कमेटीयों में बहुत से अभिनय किए जिनमें लक्ष्मण, सूर्पनखा, कैकई, राम केवट,परशुराम व रावण का अभिनय प्रमुख है। रावण और परशुराम के अभिनय से विशेष पहचान मिली। आपके समय में रामलीला की तालीम जगन्नाथ दुर्गापाल, रमेश चन्द्र भटट् और अशोक शाह दिया करते थे। उन दिनो तबले पर एल0डी0पाण्डे, दिनकर पाण्डे और हारमोनियम पर कुन्दन कनवाल होते थे। आप अभिनय के अतिरिक्त स्टेज डेकोरेशन, अस्त्र निर्माण से जुडे। आपने मुरली मनोहर की रामलीला, कपकोट की रामलीला, दुगालखोला की रामलीला में तालीम

दी। आपके प्रयासों से हीं मुरली मनोहर की रामलीला का मंचन सम्भव हो पाया आप उसके सस्थापक व अध्यक्ष रहे। आपके बाद की पींढी में आपके पुत्र अनिल कुमार राणा रामलीला में अभिनय से जुडे।

भूपेन्द्र सिहं राणा बताते हैं कि शुरूआत में जब रामलीला में अभिनय शुरू किया उस समय हम दिन में दो बार नहाया करते थे। जमीन पर पराल (धान की पुआल) पर सोते थे लहसून प्याज का सेवन वर्जित था। लोधिया ग्राम की रामलीला पैट्रोमैक्स की रोशनी पर हुआ करती थी माईक का तो प्रश्न हीं नही था कलाकार अपनी बुलन्द आवाल में गाया करते थे।

रामलीला में किस कलाकार का अभिनय आपको अच्छा लगा पुछे जाने पर आप बताते है कि उदयलाल शाह जीं का रावण का अभिनय, राजा वर्मा का मंथरा का अभिनय, जगदीश खोलिया का अंगद का अभिनय, अशोक शर्मा का सीता का अभिनय व शमशेर जंग राना का कैकई व सूर्पनखा का अभिनय यादगार अभिनय रहे।

आपने हाईस्कूल तक की पढाई की और आप सरकारी नौकरी से सेवानिवृत हैं।

भुवन चन्द्र जोशी

रामलीला के कलाकार भुवन चन्द्र जोशी का जन्म 05 मार्च 1949 को ग्राम देना, पो0आ.क्वाली, जिला अल्मोडा, उत्तराखण्ड में हुआ। आप स्व0 देवीदत्त जोशी और स्व0अम्बा जोशी के सुपुत्र है । आपने लगभग 13 वर्ष की आयु में रामलीला में अभिनय की शुरूआत की।आपने पहला अभिनय बानर सेना का क्वाली की रामलीला में किया। आप ग्राम क्वाली पट्टी कालीगाड की रामलीला , ग्राम दैना की रामलीला, शीश महल हल्द्वानी की रामलीला से जुडे। यहाँ पर आपने भरत, लक्ष्मण, लव, जनक, अंगद, कैकई, सूर्पनखा, मेघनाद, सुमन्त और विभिषण का अभिनय किया। अभिनय के अतिरिक्त आप प्रोम्टर और स्टेज निर्माण से भी जुडे रहे। जोशी जी दैना की रामलीला की जानकारी देते हुए बताते हैं कि वहाँ पर रामलीला जून माह में आयोजित की जाती थी । दैना की रामलीला बंशीधर जोशी और विष्णुधर जोशी के प्रयासो से प्रारम्भ हुई थी। रामलीला मे आने की प्रेरणा पिता जी और हमारे गाँव के बंशीधर जोशी और जगदीश जोशी जोकि राम का अभिनय किया करते थे उन्हीं से मिली।

दैना की रामलीला में तालीम गंगादत्त जोशी और बंशीधर जोशी दिया करते थे कुवाली की रामलीला में तालीम ठाकुर खीम सिंह, ठाकुर त्रिलोक सिंह देते थे और उस्ताद गुमानी राम (हारमोनियम) बजाते थे।

आप बताते है कि अभिनय की दृष्टि से आपको जीवन्त अभिनय कुवाली की रामलीला में देवीदत्त जोशी का रावण का अभिनय, जीवन लाल वर्मा का कैकई और सूर्पनखा, पान सिंह बजेठा का हनुमान और परशुराम, पूरन चन्द्र सीता और दैना की रामलीला में विनोद जोशी का सुलोचना का अभिनय, विष्णुदत्त जोशी का दशरथ का अभिनय, कैलाश जोशी का सीता और लक्ष्मण का अभिनय आज भी याद आता है। आप बताते हैं कि उन दिनो ग्राम दैना और कुवाली में रामलीला लालटैन की रोशनी में हुआ करती थी कलाकार के लिए आज की जैसी माईक की सुविधा नहीं थी कलाकार अपनी बुलन्द आवाज में अभिनय किया करते थे।

आपका स्थायी पत्ता ग्राम दैना, पो0 आ0 कुवाली, जिला अल्मोडा है। वर्तमान में आप तारा मण्डल भवन , भगवान जै सिंह,राईज एण्ड साईन के समीप , हरिपुर नायक हल्द्वानी, जिला नैनीताल, उत्तराखण्ड में रहते है।

दिनेश चन्द्र जोशी

रामलीला के कलाकार दिनेश चन्द्र जोशी का जन्म 13 जुलाई 1958 को ग्राम धानी मासी जिला अल्मोड़ा मे हुआ। आप स्व0 श्री शम्भू दत्त जोशी के सुपुत्र हैं। 6 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की, पहला अभिनय मासी की रामलीला में सीता सखी का किया। उसके उपरान्त पन्त नगर की रामलीला में मंदोदरी, सूर्पनखा, कैकई, सुलोचना और सुक्षेन वैध का अभिनय किया। पन्त नगर विश्वविद्यालय में होने वाली रामलीला में आपने लगभग 20 वर्ष बतौर तालीम मास्टर, निर्देशक व प्रोम्टर की भूमिका का निर्वाह किया। आप बताते हैं कि आपके चाचा पं0 शिवदत्त जोशी संगीत के अच्छे जानकार थे उनसे ही सीखने का अवसर मिला।

दिनेश चन्द्र जोशी बताते हैं कि उनके समय में रामलीला में अभिनय करने वाले कलाकारों में पूरन चन्द्र तिवारी मेघनाद व तालीम तास्टर थे, दीप चन्द्र तिवारी राम का अभिनय, सुरेश चन्द्र तिवारी लक्ष्मण का अभिनय, दान सिह नयाल रावण का अभिनय, गौरव पपनै भरत व श्रवण कुमार का अभिनय, कृष्ण नन्द शर्मा राम का अभिनय किया करते थे। मेरे बड़े भाई सुरेश चन्द्र जोशी परशुराम, केवट और सुक्षेन वैध का अभिनय करते थे।

वर्तमान में दिनेश चन्द्र जोशी जी का पत्राचार का पता – अम्बा कालौनी, गैस गोदाम रोड़,कुसुमखेड़ा हल्द्वानी जिला नैनीताल है।

अखिल कुमार कार्की

रामलीला के कलाकार अखिल कुमार कार्की का जन्म 15 जून 1969 को बमनखोला जौहरी बाजार अलमोडा में हुआ। आप स्व0 गोपाल सिंह कार्की के सुपुत्र हैं। आपने कक्षा बारह तक पढाई की और नौकरी कर रहे हैं।

अखिल कुमार कार्की जी ने 15 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय सीता सहेली का श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब अल्मोडा में किया। सीता सहेली के उपरान्त आपने खरदुषण,परशुराम,रावण व कवन्ध का अभिनय बहुत वर्षो तक किया।

रामलीला में अभिनय के अतिरिक्त आप स्टेज निर्माण व पुतला निर्माण में सहयोग प्रदान करते है।रामलीला में तालीम व हारमोनियम पर शिवचरण पाण्डे तथा तबले में सुमन उस्ताद और धरनीधर पाण्डे सहयोग करते हैं।

अखिल कुमार कार्की को श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की रामलीला में शिवचरण पाण्डे व प्रभात कुमार साह का अभिनय कभी न भूले जाने वाले लगा।

वर्तमान में आपका पता बमनखोला जौहरी बाजार अल्मोडा में उत्तराखण्ड है

राजन सिंह बिष्ट

रामलीला के कलाकार राजन सिंह बिष्ट का जन्म 25 दिसम्बर 1964 को खजांची मोहल्ला अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 कालू सिंह बिष्ट के सुपुत्र हैं। आपने एम0ए0,एल0एल0बी0 तक पढाई की वर्तमान में आप स्वंय का व्यवसाय कर रहे हैं। राजन सिंह बिष्ट जी ने 18 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय देवगण व बानर सेना का श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब अल्मोडा में किया। उसके के उपरान्त आपने सुमन्त,दशरथ, पहाडी राजा,सुषेण वैध व रावण का अभिनय हुक्का क्लब की रामलीला में किया। विद्यालयी शिक्षा में संगीत विषय के रूप में आपके पास था। रामलीला में आपकी प्रेरणा और गुरू शिवचरण पाण्डे हैं।

रामलीला में अभिनय के अतिरिक्त आप रामलीला की सामान्य व्यवस्था का संचालन करते हैं। आपके समय में तालीम व हारमोनियम पर शिवचरण पाण्डे तथा तबले में सुमन उस्ताद और मोती राम सहयोग करते थे। राजन सिंह बिष्ट बताते हैं कि स्त्री पात्रों का अभिनय करने कलाकारों में भैरव दत्त तिवारी, पूरन चन्द्र तिवारी, शमशेर राना, जगदीश वर्मा,मोहन राम, राजेन्द्र बोरा(त्रिभुवन गिरि)और राजेश पाण्डे के नाम याद आते हैं।

आपको श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की रामलीला में शिवचरण पाण्डे का दशरथ का अभिनय सर्वोपरी लगा। आपके परिवार में आपके बाद छोटे भाई कंचन सिहं बिष्ट और पुत्र तनिष्क बिष्ट रामलीला में अभिनय से जुडे हैं।

वर्तमान में आपका पता खजांची मोहल्ला, अल्मोडा उत्तराखण्ड है।

धीरज शाह

रामलीला के कलाकार धीरज शाह का जन्म 16 मई 1988 को जौहरी बाजार अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 निरंजन लाल शाह के सुपुत्र हैं। आपने स्नातकोत्तर तक पढाई की वर्तमान में आप बेरोजगार हैं।

धीरज शाह ने 6 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय शत्रुघन का श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब अल्मोडा में किया। उसके के उपरान्त आपने भरत, लक्ष्मण, सुमन्त, त्रिजटा, युवा दशरथ, खर, अंगद, जनक, केवट व योगिनी आदि पात्रों का अभिनय हुक्का क्लब की रामलीला में किया। आपने भातखण्डे हिन्दुस्तानी संगीत महाविद्यालय से शास्त्रीय संगरत की शिक्षा प्राप्त की है। रामलीला में आपकी प्रेरणा और गुरू शिवचरण पाण्डे, राजेन्द्र तिवारी और त्रिभुवन गिरी महाराज हैं।

आपके समय में तालीम शिवचरण पाण्डे, राजेन्द्र तिवारी, प्रभात कुमार शाह, और राजन सिंह बिष्ट दिया करते हैं तथा तबले में धरणीधर पाण्डे, राजन बिष्ट, चन्दन आर्या व मनीष पाण्डे पर सहयोग करते थे।

धीरज शाह बताते हैं कि स्त्री पात्रों का अभिनय करने कलाकारों में संतोष काण्डपाल और विनोद थापा– मंथरा, संजय जोशी– कैकई, सुमित पाण्डे और योगेश जोशी–त्रिजटा प्रमुख हैं।

धीरज शाह को श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की रामलीला में शिवचरण पाण्डे का दशरथ का अभिनय और गोपाल राणा का हनुमान का अभिनय सर्वोपरी लगा जोकि उनके मानस पटल पर अपनी छाप छोडे हुए है।

वर्तमान में आपका पता कंचन एण्ड ब्रदर्स, जौहरी बाजार, अल्मोडा ,उत्तराखण्ड है।

योगेश जोशी

रामलीला के कलाकार व श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब का निःस्वार्थ भाव से जुडे कार्यकर्ता योगेश जोशी का जन्म 16 सितम्बर 1980 को मल्ला दन्या अल्मोडा में हुआ। आप राजेन्द्र प्रसाद जोशी के सुपुत्र हैं। आपने कक्षा आठ तक पढाई की वर्तमान में आप बेरोजगार हैं। योगेश जोशी ने 12 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय नल का श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब अल्मोडा में किया। उसके के उपरान्त आपने त्रिजटा, मारीच, सूर्पनखा, मंथरा, रावण दूत, भिल्ल, परशुराम, हनुमान, श्रवणकुमार आदि पात्रों का अभिनय हुक्का क्लब की रामलीला में किया। रामलीला में आपकी प्रेरणा और गुरू शिवचरण पाण्डे, राजेन्द्र तिवारी और त्रिभुवन गिरी महाराज हैं। आपके समय में तालीम शिवचरण पाण्डे, राजेन्द्र तिवारी, प्रभात कुमार शाह, और राजन सिंह बिष्ट दिया करते हैं तथा तबले में धरणीधर पाण्डे, राजन बिष्ट, चन्दन आर्या व मनीष पाण्डे पर सहयोग करते थे।

योगेश जोशी बताते हैं कि स्त्री पात्रों का अभिनय करने कलाकारों में संतोष काण्डपाल – मंथरा , ललित जोशी – त्रिजटा, संजय जोशी– कैकई, और विनोद थापा– मंथरा, प्रमुख हैं। योगेश जोशी के अनुसार श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की रामलीला में उदयलाल शाह जोकि रावण के पात्र का अभिनय किया करते थे और शिवचरण पाण्डे जोकि दशरथ का अभिनय हमेशा याद रहेगा। श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की रामलीला का प्रदर्शन देश में होने वाले रामलीला महोत्सवों में समय–समय पर

होता रहा। योगेश जोशी ने सागर(म.प्र.), ओरछा, रीवा,, रायगढ़ व देहरादून में होने वाले प्रदर्शन में अभिनय किया।

वर्तमान में आपका पता मल्ला दन्या, अल्मोडा, उत्तराखण्ड है।

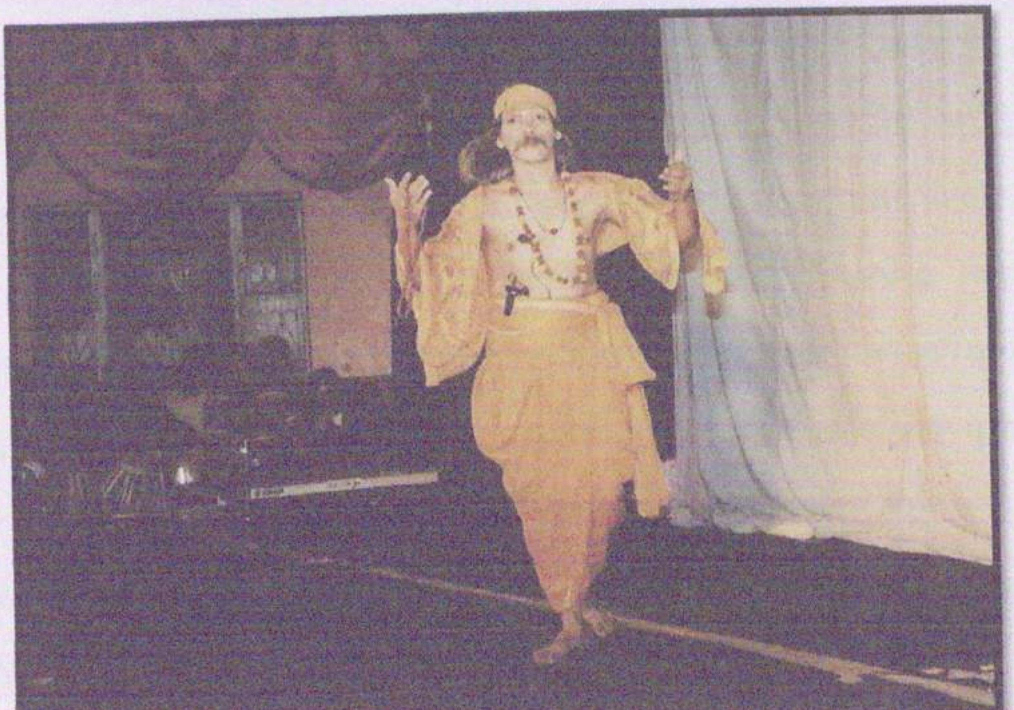

मनीष पाण्डे

रामलीला के कलाकार व श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब के प्रमुख कार्यकर्त्ता मनीष पाण्डे का जन्म 19 मई 1983 को जौहरी बाजार, अल्मोडा में हुआ। आप धरनीधर पाण्डे जी तबला वादक के सुपुत्र हैं। आपने एम.काम. व एम0बी.ए. तक पढाई की वर्तमान में आप बैंक में सेवारत हैं। आपने भातखण्डे हिन्दुस्तानी संगीत महाविद्यालय से शास्त्रीय संगीत की विधिवत् शिक्षा प्राप्त की है।

मनीष पाण्डे ने 8 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय शत्रुघन का श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब अल्मोडा में किया। उसके के उपरान्त आपने लक्ष्मण, सुमन्त, देवगण, केवट व विश्वामित्र आदि पात्रों का अभिनय हुक्का क्लब की रामलीला में किया। रामलीला में आपकी प्रेरणा और गुरू शिवचरण पाण्डे, राजेन्द्र तिवारी, प्रभात कुमार शाह गंगोला, राजेन्द्र नयाल और त्रिभुवन गिरी महाराज हैं। मनीष पाण्डे बताते हैं कि हमें तालीम शिवचरण पाण्डे, राजेन्द्र तिवारी, प्रभात कुमार शाह दिया करते हैं । तबले में मेरे पिता धरणीधर पाण्डे, राजेन्द्र नयाल, चन्दन आर्या और स्वंय मैं बजाता हूँ। मनीष पाण्डे के अनुसार स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में राजेन्द्र तिवारी, संतोष काण्डपाल, ललित जोशी, संजय जोशी, विनोद थाप और हर्ष टम्टा शामिल हैं।

मनीष पाण्डे के परिवार में उनसे पहले की पीढ़ी में उनके ताऊ शिवचरण पाण्डे , पिता धरणीधर पाण्डे , ताऊ का बेटा राजेश पाण्डे, बडी बहन नमिता पाण्डे हुक्का क्लब

अल्मोडा की रामलीला से जुडे हुए हैं। मनीष पाण्डे को शिवचरण पाण्डे व प्रभात कुमार शाह गंगोला का अभिनय पुरानी यादों को आज भी जीवन्त बना देता है।।

वर्तमान में आपका पता जौहरी बाजार, अल्मोडा, उत्तराखण्ड है।

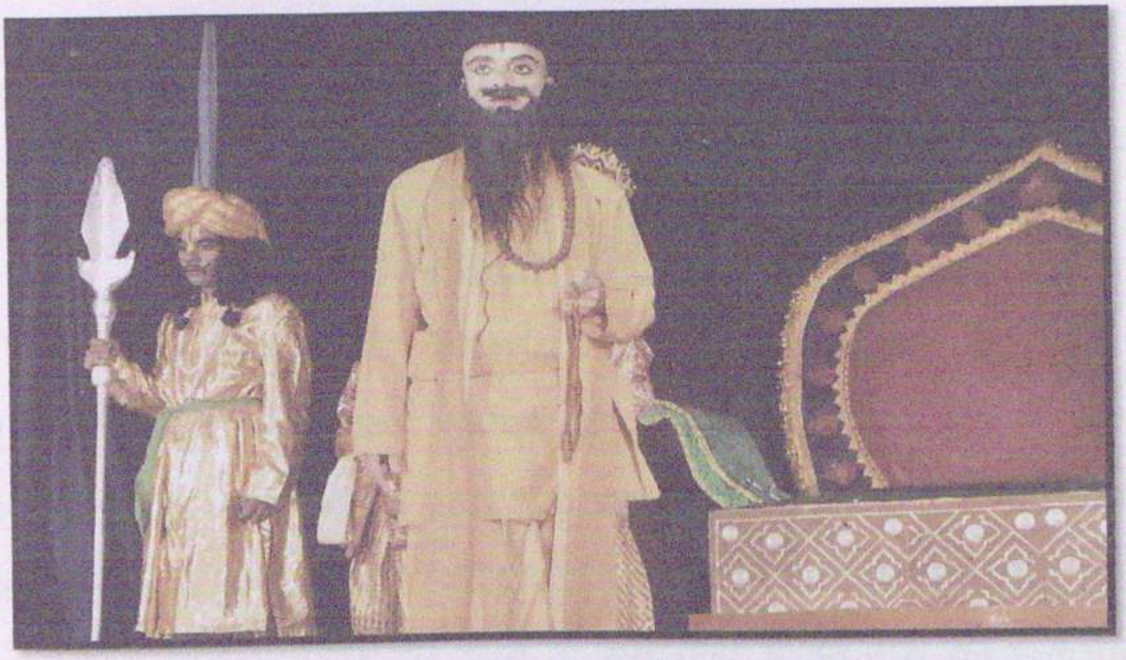

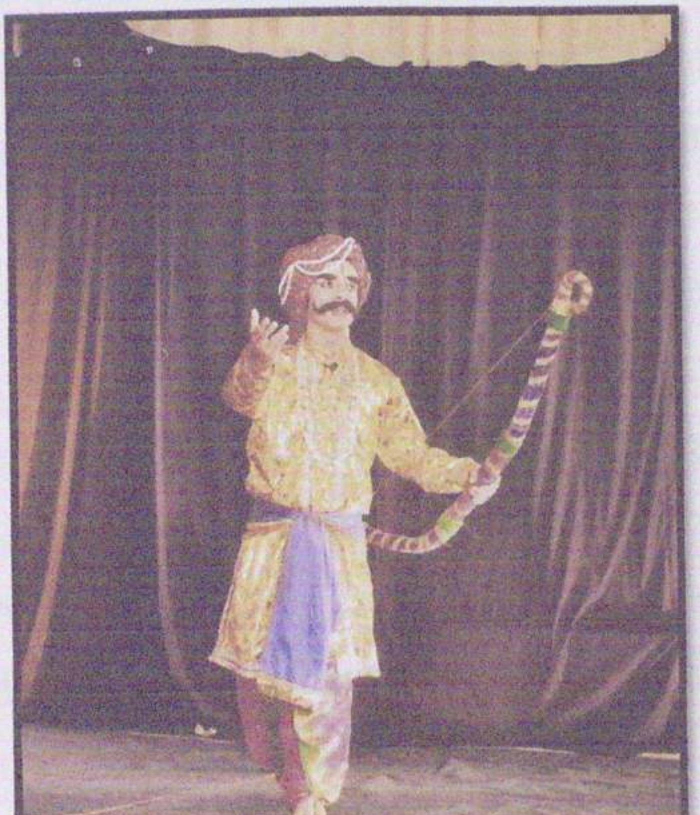

राजेश पाण्डे

रामलीला के कलाकार राजेश पाण्डे का जन्म 8 अगस्त 1971 को जौहरी बाजार, अल्मोडा में हुआ। आप अल्मोडा की रामलीला व होली गायिकी के प्रमुख हस्ताक्षर शिवचरण पाण्डे जीं के सुपुत्र हैं। आपने एम. ए. तक पढाई की वर्तमान में आपना व्यवसाय करते हैं। आपने संगीत की शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की।

राजेश पाण्डे ने 7 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय बन्दर का नन्दा देवी की रामलीला में किया। श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की रामलीला प्रारम्भ होने के बाद आपने 1978 में पुनः बन्दर का अभिनय किया। 1981 में आपको शत्रुघन के अभिनय के लिए चुना गया। उसके के उपरान्त आपने शत्रुघन 1981–1982, भरत 1983–1984, लक्ष्मण 1985, अंगद 1998, ताडिका 1994से 2015 तक, खर दूषण 2002 से 2015 तक, कुम्भकरण 2007 से 2015 तक, सीता स्वंयवर में आमन्त्रित कलाधारी राजा 1994 से 2015 तक आदि पात्रों का अभिनय हुक्का क्लब की रामलीला में किया। रामलीला में आपकी प्रेरणा और गुरू आपके पिता शिवचरण पाण्डे बने।

राजेश पाण्डे के अनुसार स्त्री पात्रों का अभिनय करने कलाकारों में भैरव तिवारी–शबरी व कैकई, पूरन चन्द्र तिवारी–मंथरा, राजेन्द्र तिवारी– कैकई के अभिनय के लिए जाने गए। राजेश पाण्डे के परिवार में उनसे पहले की पीढ़ी में उनके पिता

शिवचरण पाण्डे , चाचा धरणीधर पाण्डे उनकी पीढी में चाचा का बेटा मनीष पाण्डे व उनके बाद की पीढ़ी में उनका पुत्र निश्चल पाण्डे शत्रुघन का अभिनय हुक्का क्लब अल्मोडा की रामलीला में करते हैं। राजेश पाण्डे बताते हैं कि स्व. उदयलाल शाह के द्वारा किया गया रावण का अभिनय, स्व.मोहन चन्द्र पाण्डे के द्वारा किया गया परशुराम का अभिनय, शिवचरण पाण्डे के द्वारा किया गया दशरथ का अभिनय, स्व. भैरव दत्त तिवारी के द्वारा किया गया शबरी का अभिनय व राजेन्द्र तिवारी के द्वारा किया गया कैकई का अभिनय आज भी पुरानी यादों को ताजा कर देता है।

वर्तमान में आपका पता जौहरी बाजार, अल्मोडा, उत्तराखण्ड है।

योगेश कुमार जोशी

रामलीला के प्रतिष्ठित कलाकार योगेश कुमार जोशी का जन्म 1955 को पाण्डेखोला अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री अमरनाथ जोशी व रेवती जोशी के सुपुत्र थे। आपने इन्टर पोलीटैक्निक तक की शिक्षा प्राप्त की और सिचाई विभाग में इंजीनियर रहे। योगेश कुमार जोशी जी का देहान्त 2011 में हुआ। योगेश कुमार जोशी ने 17 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। 1972 में पाण्डेखोला अल्मोडा की रामलीला में राम का अभिनय किया। कई वर्ष पाण्डेखोला की रामलीला में राम का अभिनय करने के बाद आपने हल्द्वानी मुखानी की रामलीला में राम के पात्र का अभिनय किया।

उनकी बडी दीदी बताती हैं कि हमारे भाई योगेश भी तालीम मास्टर गिरीश चन्द्र पाण्डे जी की प्रेरणा से ही रामलीला में गए। अल्मोडा में रामलीला की तालीम उन दिनो गिरीश पाण्डे जी और हल्द्वानी मुखानी की रामलीला में तालीम भुवन कपिल दिया करते थे। योगेश जी की बहन से मिली जानकारी के अनुसार उनको स्व0 मोहन चन्द्र पाण्डे का रावण , भुवन चन्द्र तिवारी(शास्त्री जी)–हनुमान का अभिनय बहुत अच्छा लगता था। योगेश कुमार जोशी जी के परिवार में उनके बड़े भाई हेम चन्द्र जोशी अभिनय और तबला वादन, बडे भाई ललित मोहन जोशी अभिनय, चाचा के बेटे विनोद कुमार जोशी और सुनील कुमार जोशी रामलीला में अभिनय से जुड़े थे।

वर्तमान में योगेश कुमार जोशी जी का परिवार हल्द्वानी, उत्तराखण्ड में रहता हैं।

जगदीश सिंह भण्डारी

रामलीला के प्रतिष्ठित कलाकार जगदीश सिंह भण्डारी का जन्म 8 जुलाई 1975 को ग्राम टाटिक , पोस्ट बज्वाड,जिला अल्मोडा, उत्तराखण्ड में हुआ। आप स्व0 श्री त्रिलोक सिंह भण्डारी के सुपुत्र है। जगदीश सिंह भण्डारी जी ने अल्मोडा शहर मे होने वाली ढुगांधारा की रामलीला व नन्दा देवी की रामलीला में अभिनय किया। आपने रामलीला में अभिनय की शुरूआत 22 वर्ष की आयु में ढुगांधारा की रामलीला में परशुराम के अभिनय से की। इन रामलीलाओं में आपने परशुराम 1997 से 2012 तक (ढुगांधारा की रामलीला), अंगद 1998 से 2012 तक (ढुगांधारा की रामलीला), मकरध्वज 1997–1998 (ढुगांधारा की रामलीला), शबरी व सुमन्त 1999 (ढुगांधारा की रामलीला), परशुराम 2012 से 2015 तक (नन्दादेवी की रामलीला)का अभिनय किया। आपने परशुराम व अंगद का यादगार अभिनय कर रामलीला में दशको से भरपूर वाहवाही बटोरी।

रामलीला में आपके प्रेरक व्यक्ति व गुरू विनोद कुमार जोशी हैं। आपके समय रामलीला की तालीम दिनेश चन्द्र जोशी दिया करते थे तबले पर संगत हिमांशु जोशी किया करते थे। स्त्री पात्रों अभिनय पंकज बिष्ट व दीपक डगवाल किया करते थे। आपको भानु बिष्ट के द्वारा किए गए सुमन्त के अभिनय ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया।

आपने एम.एस.सी.भैतिकी से किया उसके उपरान्त सरकारी विद्यालय में शिक्षक के पद पर कार्यरत हैं।

वर्तमान में आप मौहल्ला ढुगांधारा, पो.आ. पोखरखाली अल्मोडा, उत्तराखण्ड में रहते है।

मनोज लाल साह

रामलीला के कलाकार मनोज लाल साह का जन्म 13 दिसम्बर 1970 को अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 जगदीश लाल साह जी के सुपुत्र हैं। आपने कक्षा बारह तक पढाई की फौज की नौकरी से सेवानिवृत हुए। मनोज लाल साह ने 12 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय शत्रुघन का श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब अल्मोडा में किया। उसके उपरान्त आपने लक्ष्मण, राम, देवगण, सुग्रीव, बाली, दूषण व रावण का अभिनय हुक्का क्लब की रामलीला में किया। रामलीला में आपकी प्रेरणा सभी वरिष्ठ कलाकार रहे जिनके अभिनय से प्रभावित होकर आप रामलीला की ओर गए। मनोज लाल साह बताते हैं कि हमें तालीम शिवचरण पाण्डे दिया करते हैं और तबले में धरणीधर पाण्डे और सुमन उस्ताद हुआ करते थे।

मनोज लाल साह जी के परिवार में उनसे पहले की पीढ़ी में उनके पिता जगदीश लाल साह– देवगण, मुनि व भिल्ल का अभिनय करते थे, आपके बाद की पीढ़ी में आपकी पुत्री कु0 निकिता साह ने राम का अभिनय किया और आपके पुत्र लक्षित साह ने बंदर, राक्षस, भरत, शत्रुघन का अभिनय हुक्का क्लब अल्मोडा की रामलीला में किया। आपको प्रभात कुमार शाह गंगोला का राम का अभिनय, शिवचरण पाण्डे का दशरथ का अभिनय व मुन्ना पाण्डे का परशुराम का अभिनय आज भी याद आता है।

वर्तमान में आपका पता डुबकिया, अल्मोडा, उत्तराखण्ड है।

कंचन कुमार तिवारी

रामलीला के कलाकार कंचन कुमार तिवारी का जन्म 28 मार्च 1963 को तल्ला कुंजपुर(कुवाड़खोला) अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 पूरन चन्द्र तिवारी जी के सुपुत्र हैं। आपने बी0काम0 तक पढाई की वर्तमान में आप कर्मकाण्ड के पंडित के रूप में की आजिविका का र्निवहन करते है।

कंचन कुमार तिवारी जी ने 1978 में 15 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय गौरी का श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की रामलीला में किया। उसके के उपरान्त आपने 1978 से 1982 तक गौरी, अहिल्या, जटायू, सम्पाती, 1983 से 1990 तक कौशल्या, केवट, जटायू, सम्पाती सन् 1991 से वर्तमान तक विश्वामित्र, सदन कुमार ऋर्षि, देवगण, वशिष्ठ आदि पात्रों का अभिनय हुक्का क्लब की रामलीला में किया। रामलीला में आपकी प्रेरणा और गुरू शिवचरण पाण्डे तथा पं0 तारा प्रसाद पाण्डे रहे। विद्यालयी शिक्षा तक संगीत आपके पाठ्यक्रम का हिस्सा रहा। आप आकाशवाणी के सुगम संगीत के बी0 हाई के कलाकार हैं।

श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की रामलीला का प्रदर्शन देश में होने वाले रामलीला महोत्सवों में समय–समय पर होता रहा। कंचन तिवारी ने भोपाल, इंदौर, ओरछा, अयोध्या व ब्यावर में होने वाले प्रदर्शन में अभिनय किया।

आपके समय में तालीम शिवचरण पाण्डे और राजेन्द्र तिवारी दिया करते थे प्रभात कुमार शाह, और राजन सिंह बिष्ट दिया करते हैं तथा रामलीला में तबले पर धरणीधर पाण्डे सहयोग करते थे। अपने समय के स्त्री पात्रों के अभिनय करने वाले कलाकारों का जिक्र करते हुए कंचन तिवारी बताते हैं कि राजेन्द्र तिवारी, संजय जोशी और शमशेर राणा–कैकई, भैरव तिवारी– सूर्पनखा, शबरी, कैकई , हरीश बिष्ट और राजू तिवारी –सीता ये सभी अभिनय के मापदण्ड के आधार पर प्रमुख हैं।

कंचन तिवारी जी के परिवार में उनसे पहले की पीढ़ीयों में उनके दादा रामदत्त तिवारी जी बद्रेश्वर की रामलीला, नन्दादेवी की रामलीला में हनुमान व विश्वामित्र का अभिनय करते थे फिर उनके पिता पूरन चन्द्र तिवारी जी बद्रेश्वर की रामलीला, नन्दादेवी की रामलीला और बागेश्वर की रामलीला में लक्ष्मण,सीता, कौशल्या, मंथरा और पहाडी राजा का अभिनय किया करते थे। आपके भाई ललित मोहन तिवारी लक्ष्मण, चचेरे भाई राजू तिवारी और हेम तिवारी राम,सीता का अभिनय किया करते थे। कंचन तिवारी के अनुसार भैरव तिवारी– सूर्पनखा (नर्तकी) और शबरी का जीवन्त अभिनय किया करते थे। सूर्पनखा के अभिनय में वह शास्त्रीय नृत्य कथक से प्रभावित नृत्य किया करते थे उनका अभिनय सदैव याद रहेगा।

वर्तमान में आपका पता मोहल्ला तल्ला कुंजपुर(कुवाड़खोला) अल्मोडा उत्तराखण्ड है।

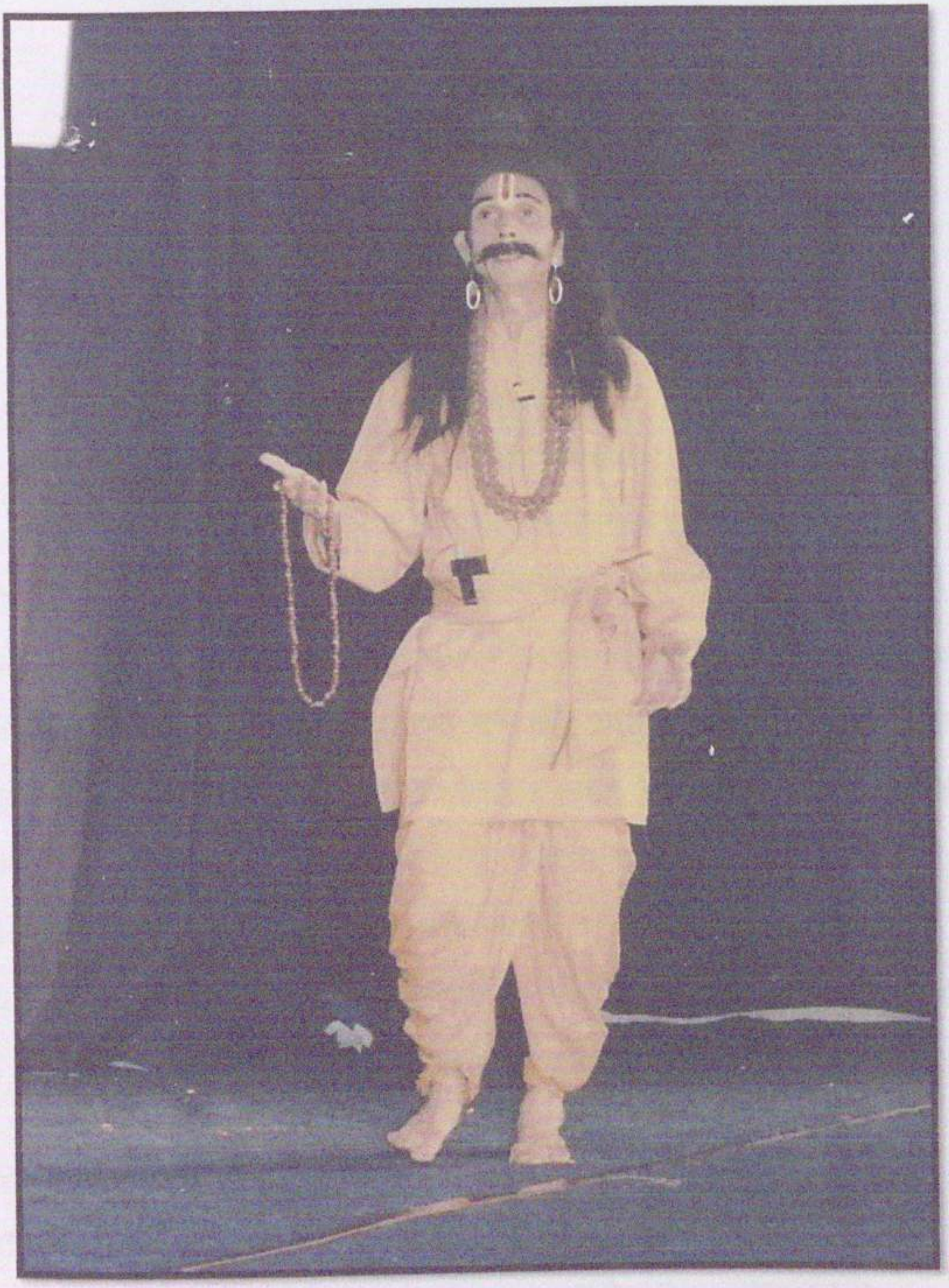

धरणीधर पाण्डे

रामलीला के कलाकार व तबला वादक धरणीधर पाण्डे का जन्म 03 जनवरी 1946 को जौहरी बाजार अल्मोडा में हुआ। आप स्व0चन्द्रमणी पाण्डे के सुपुत्र हैं। आपने स्नातकोत्तरव बी0एड0 की शिक्षा प्राप्त की और आप शिक्षा विभाग से प्राध्यापक के पद से सेवानिवृत हुए हैं। आपने लगभग 20 वर्ष की आयु में रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। पहला अभिनय आपने देवगण का 1966 में किया। उसके बाद आपने श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की रामलीला में जनक का अभिनय किया। रामलीला में आप अपना संगीत की शिक्षा आपने तारा प्रसाद पाण्डे जी से ली। रामलीला में आप अपने बडे भाई शिव चरण पाण्डे जी की प्रेरणा से गए। रामलीला में आप तारा प्रसाद पाण्डे , आनन्द सिंह बिष्ट व शिव चरण पाण्डे जी को गुरूतुल्य मानते हैं।

रामलीला में अभिनय के बाद आप रामलीला में तबला वादन से जुड गए अल्मोडा और आस पास के क्षेत्रों में होने वाली रामलीलाओं में आपने तबला वादन किया। जिनमें श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की रामलीला, नन्दादेवी की रामलीला, पोखरखाली की रामलीला, नारायण तेवाडी देवाल की रामलीला, ग्राम ज्योली हवालबाग की रामलीला, ग्राम अलई बाडेछीना की रामलीला शामिल हैं। आपके परिवार में आपसे पहले आपके बडे भाई शिवचरण पाण्डे ने मुख्य रूप से दशरथ और रामलीला में तालीम से जुडे । मेरे

बाद मेरे पुत्र मनीष पाण्डे , पुत्री नमिता उप्रेती, भतीजा राजेश पाण्डे, भतीजे का पुत्र निश्चल पाण्डे हुक्का क्लब अल्मोडा की रामलीला में अभिनय से जुडे।

धरणीधर पाण्डे जी बताते है कि उनके समय में रामलीला की तालीम तारा प्रसाद पाण्डे, शिवचरण पाण्डे,राजेन्द्र प्रसाद तेवाडी और स्व0आनन्द सिंह जी दिया करते थे। तबले पर स्व0 मोती राम, स्व0देवीलाल वर्मा, दिनेश जोशीऔर दिनकर पाण्डे हुआ करते थे। वहीं स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूष कलाकारों में स्व0 पूरन चन्द्र तिवारी, स्व0 भैरव दत्त, स्व0 भुवन कलाकार, स्व0 नन्दन जोशी, शमशेर राणा व राजेन्द्र तिवारी प्रमुख हैं। धरणीधर पाण्डे जी को कैकई की भावपूर्ण भूमिका में स्व0नन्दन जोशी, शबरी सूर्पनखा कैकई की भूमिका में स्व0 भैरव दत्त तिवारी, रावण की भूमिका में उदयलाल शाह, राम की भूमिका में जगन्नाथ सनवाल, अंगद की भूमिका में राजेन्द्र बोरा त्रिभूवन गिरी महाराज का अभिनय अच्छा लगा जो आज भी मानस पटल पर अंकित है।

वर्तमान में आप जौहरी बाजार, अल्मोडा, उत्तराखण्ड में रहते है।

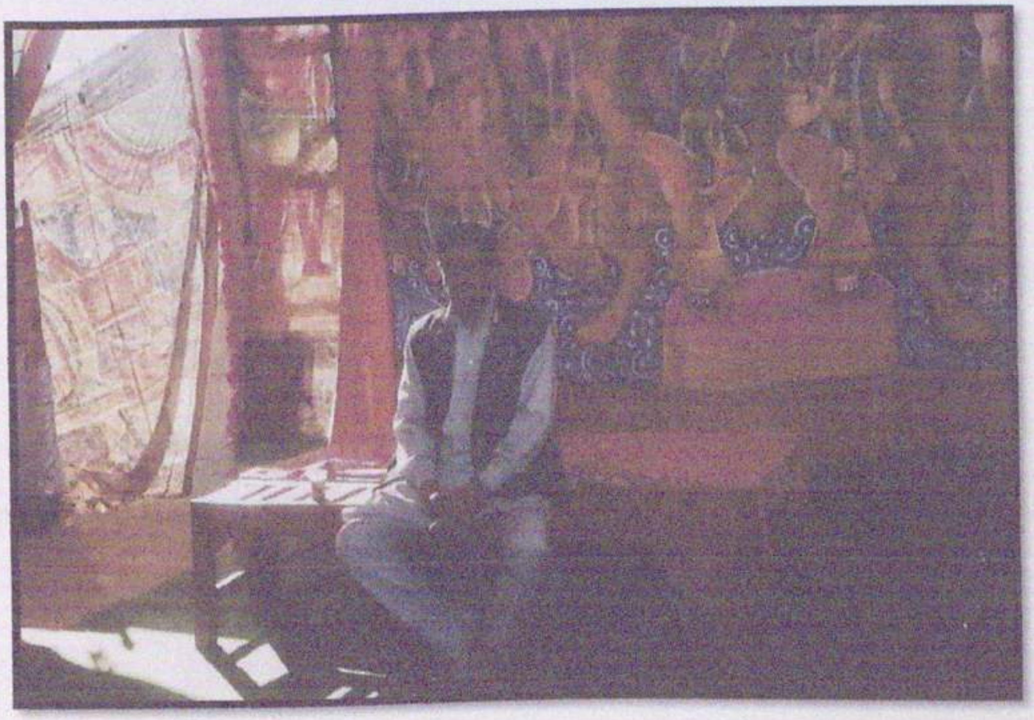

तुषार कान्त साह

रामलीला के कलाकार तुषार कान्त साह का जन्म 05 अगस्त 1967 को अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 उदयलाल साह व माता आशा साह जी के सुपुत्र हैं। आपने स्नातक तक पढाई की और अल्मोडा में अपना व्यवसाय करते हैं। तुषार कान्त साह जी ने 9 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय भरत का नन्दादेवी की रामलीला में किया। नन्दादेवी की रामलीला के अलावा आपने श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की रामलीला में अभिनय किया। इन रामलीलाओं में आपने भरत, शत्रुघन, सीता, केवट, और सुश्रेन वैध का अभिनय किया। आपको रामलीला में अभिनय अपने दादा चिरंजीलाल साह व पिता उदयलाल साह से विरासत में मिला। और इन्हीं की प्रेरणा से आप रामलीला और होलियों की ओर गए। रामलीला में अभिनय के अतिरिक्त आप रामलीला के स्टेज निर्माण और अल्मोडा के अतिविशिष्ठ दशहरा महोत्सव के संस्थापक सदस्यों में से हैं। आपके प्रयासों से अल्मोडे का दशहरा अपने वृहद रूप में सामने आ पाया है। तुषार कान्त साह बताते हैं कि हमें तालीम शिवचरण पाण्डे दिया करते हैं और तबले में धरणीधर पाण्डे और सुमन उस्ताद हुआ करते थे।वह रामलीला में अभिनय से अपने परिवार का सम्बंध बताते हुए कहते हैं कि मेरे दादा चिरंजीलाल साह व पिता उदयलाल साह रामलीला में अभिनय किया करते थे।

तुषार कान्त को उदयलाल साह का रावण का अभिनय, शिवचरण पाण्डे का दशरथ का अभिनय, चन्द्रशेखर पाण्डे का दशरथ का अभिनय, राजेन्द्र बोरा त्रिभूवन गिरी महाराज का अंगद का अभिनय, प्रभात कुमार शाह गंगोला का राम का अभिनय, ललित साह का हास्य अभिनय अच्छा लगा जो आज भी मुझे याद आता है।

वर्तमान में आपका पता कारखाना बाजार, अल्मोडा 263601 , उत्तराखण्ड है।

धीरेन्द्र मोहन पन्त

रामलीला के कलाकार धीरेन्द्र मोहन पन्त का जन्म 31 अक्टूबर 1958 को पश्चिमी पोखरखाली रानीधारा रोड अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री भैरव दत्त पन्त व माता स्व0 धनी देवी पन्त जी के सुपुत्र है। धीरेन्द्र मोहन पन्त ने 18 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। इन्होने पहला अभिनय देवगण का पोखरखाली की रामलीला में सन् 1976 में किया। उसके बाद आपने ताडिका,सुबाहु, द्वारपाल,घमंडी राजा, केवट, मंथरा, सूर्पनखा, खर, दूषण, तारा,बाली, अंगद, कुम्भकर्ण, अहिरावण, भील, सुश्रेन वैध, जटायू और परशुराम के पात्रो का अभिनय किया।

धीरेन्द्र मोहन पन्त जी ने एम0ए0 बी0एड0 और एम0एड0 तक की शिक्षा प्राप्त की है। वर्तमान में आप दुकान करते हैं। आप अल्मोडा शहर के अच्छे ज्योतिष माने जाते हैं।रामलीला में आप पं0 तारा प्रसाद पाण्डे जी को अपना गुरू मानते हैं। आपके समय में तालीम पं0 तारा प्रसाद पाण्डे और जीवन चन्द्र जोशी दिया करते थे। रामलीला में तबला दिनेश चन्द्र जोशी बजाया करते थे। रामलीला में जीवन चन्द्र जोशी का लक्ष्मण का अभिनय, शमशेर राणा का कैकई और सूर्पनखा का अभिनय, स्व0 भैरव तिवाडी का शबरी का अभिनय आज भी आपके मानस पटल पर अंकित है। रामलीला में अभिनय से मेरे बाद मेरा छोटा भाई भूपेन्द्र मोहन पन्त जुडा। वर्तमान में आपका पता धीरू जनरल स्टोर, रानीधारा रोड, पोखरखाली, अल्मोडा263601 (उत्तराखण्ड) है।

भूपेन्द्र मोहन पन्त

रामलीला के कलाकार भूपेन्द्र मोहन पन्त का जन्म 16 सितम्बर 1964 को पश्चिमी पोखरखाली रानीधारा रोड अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री भैरव दत्त पन्त व माता स्व0 धनी देवी पन्त जी के सुपुत्र है। भूपेन्द्र मोहन पन्त ने 12 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय शत्रुघन का पोखरखाली की रामलीला में सन् 1976 में किया। उसके बाद आपने भरत, शत्रुघन, बाणासुर, विश्वामित्र, विभिषण और देवगण के पात्रो का अभिनय किया।

भूपेन्द्र मोहन पन्त जी ने बी0एस0सी0, बी0एड0 तक की शिक्षा प्राप्त की है। वर्तमान में आप शिक्षक हैं। रामलीला में आप पं0 तारा प्रसाद पाण्डे जी और स्व0 राजेन्द्र प्रसाद तिवारी व जींवन चन्द्र जोशी को अपना गुरू मानते हैं। आपके समय में तालीम पं0 तारा प्रसाद पाण्डे और जीवन चन्द्र जोशी (जीबू दा)दिया करते थे। रामलीला में तबला दिनेश चन्द्र जोशी बजाया करते थे।

रामलीला में शमशेर राणा का कैकई और सूर्पनखा का अभिनय, स्व0 भैरव तिवाडी का शबरी का अभिनय हरीश पन्त और मुकेश पन्त का सीता का अभिनय आज भी आपके मानस पटल पर अंकित है। रामलीला में अभिनय से मेरे बडे भाई धीरेन्द्र मोहन पन्त जुडे उन्होने पोखरखाली की रामलीला में कई पात्रों का अभिनय किया।

वर्तमान में आपका पता रानीधारा रोड, पश्चिमी पोखरखाली, अल्मोडा263601 (उत्तराखण्ड) है।

जगन्नाथ पोखरिया

कुमाऊनी रामलीला के कलाकार जगन्नाथ पोखरिया जी का जन्म 1910 को ग्राम तल्ली पोखरी,नया गॉव, विकास खण्ड ओखलकाण्डा, तहसील धारी जिला नैनीताल में हुआ। आप एक समाजसेवी व संत प्रवृति के व्यक्ति थे। जीवनयापन के लिए ये पांडित्य का कार्य करते थे। आस पास के क्षेत्रों में उनका बहुत नाम व प्रतिष्ठा थी। इनके छोटे बेटे मोती राम पोखरिया जी बताते हैं कि वह अपने जींवन में युवा अवस्था के शुरू होते ही स्वतन्त्रता संग्राम के आन्दोलन में सक्रिय रूप से जुड़ गए और सम्भवतःवहीं से वह रामलीला के मंच से भीं जुड़े। हमने तो उनको दशरथ का सशक्त अभिनय करते हुए ही देखा। दशरथ के पात्र के अभिनय में सारे गाने रागों पर आधारित हैं कंठ उनका बहुत सुरीला था। उनका यह संस्कार हममें और फिर हमारे बाद की पीढ़ी में भी हस्तांतरित हुआ।सन् 1990 में उनकी मृत्यु हुई तब तक उनमें रामलीला के प्रति उत्साह बना हुआ था।

जगन्नाथ पोखरिया जी के परिवार में उनके बाद बडे त्रिलोचन पोखरिया ने राम, मथुरा दत्त जोशी ने लक्ष्मण और मोतीराम पोखरिया ने लक्ष्मण, राम, सूर्पनखा, कैकई , शबरी, सुलोचना, अंगद, परशुराम, तारा, मंदोदरी, केवट, बाली, बंदीजन, विभिषण, मेघनाद आदि पात्रों का अभिनय किया। जगन्नाथ पोखरिया जी के बच्चों के बाद की पीढ़ी में मथुरा दत्त जोशी जी के पुत्र हरीश जोशी ने लक्ष्मण, मोतीराम पोखरिया जी के पुत्र दीपक पोखरिया ने सीता और पंकज पोखरिया ने सीता, राम का अभिनय किया। रामलीला का यह संस्कार जगन्नाथ जी के नातियों के बेटों तक देखने को मिलता हैं इनमें गौरव पोखरिया ने सीता का अभिनय किया है।

वर्तमान में इनके पुत्र मोतीराम पोखरिया अपने पैत्रिक ग्राम तल्ली पोखरी,नया गॉव, विकास खण्ड ओखलकाण्डा, तहसील धारी जिला नैनीताल में रहते है।

डॉ0 तारा लाल साह

द्वाराहाट की रामलीला के कलाकार डॉ0 तारा लाल साह का जन्म 15 मार्च 1949 को ग्राम हाट द्वाराहाट मे हुआ। आप स्व0 श्री इन्द्र लाल साह व माता स्व0 श्रीमती गंगा देवी के सुपुत्र हैं। 14 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की, पहला अभिनय द्वाराहाट बाजार की रामलीला में गौरी व अहिल्या का किया। उसके उपरान्त इसी रामलीला में शत्रुघन, राम, लक्ष्मण, सीता, भरत, परशुराम, श्रवण कुमार, लवकुश काण्ड में सीता नारद मोह में नारद, मोहनी और शिव का अभिनय किया। तारा लाल साह बताते हैं कि 1963 से 2000 सन् तक वह रामलीला में अभिनय से जुडे रहे। हमारे पिता जी रामलीला में तबला बजाते थे उनकी वजह से ही रामलीला की ओर झुकाव हुआ। रामलीला में मेरे गुरू मोहन राम जी थे जोकि हमारे तालिम मास्टर भी थे। वह इस क्षेत्र के जाने माने संगीतकार थे रामलीला की तो सारी धुने उन्हे याद थी लेकिन कभी प्रकाश में नही आ पाए। मोहन राम जी के पिता भी एक कुशल सारंगी वादक थे और द्वाराहाट की रामलीला में सारंगी बजाते थे। स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूष कलाकारों में स्व0

राम प्रताप चौधरी– कैकई, स्व0 गणेश लाल वर्मा – सूर्पनखा का अभिनय करते थे।

तारा लाल साह कहते हैं कि उनके परिवार में सबसे पहले उनके पिता रामलीला में तबला वादन से जुड़े। उनके बाद बडे भाई बसन्त लाल साह अभिनय से और बड़ा बेटा रोहित साह– लक्ष्मण, भरत, मारिच, खरदूषण आदि का अभिनय किया। तारा लाल साह को गणेश लाल वर्मा के द्वारा खेला गया सूर्पनखा और ताडिका का अभिनय, राम प्रताप चौधरी के द्वारा खेला गया जनक, कैकई, अंगद, का अभिनय, बसन्त लाल साह के द्वारा खेला गया रावण का अभिनय, भवानी दास साह के द्वारा खेला गया ताडिका का अभिनय सबसे अच्छा लगा जो आज भी उनके मानस पटल पर अंकित है।

वर्तमान में तारा लाल साह जी का पत्राचार का पता – इन्द्रा फार्मेसी, द्वाराहाट, उत्तराखण्ड है।

जीवन चन्द्र जोशी

रामलीला के कलाकार व तालीम मास्टर जीवन चन्द्र जोशी का जन्म 1 जुलाई 1955 को ढूंगाधारा अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 जगदीश चन्द्र जोशी(ठेकेदार साहब के उपनाम से मशहुर)व माता सरोजनी जोशी के सुपुत्र है। आपने लगभग 9 वर्ष की आयु में रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। पहला अभिनय आपने सीता सखी का 1964 में पोखरखाली की रामलीला में किया। उसके बाद आपने इसी रामलीला में लक्ष्मण, मंथरा, कैकई का अभिनय किया।

रामलीला में आप अपना गुरू संगीत आचार्य तारा प्रसाद पाण्डे जी को मानते हैं जिनकी प्रेरणा से आप रामलीला की आकर आकृष्ट हुए उनसे ही आपने रामलीला की धुने सिखी जो आज आपके द्वारा अगली पीढी को हस्तांतरित हुई। आपके समय के तालीम मास्टरों में तारा प्रसाद पाण्डे, जीवन चन्द्र पन्त व जवाहर लाल शाह होते थे। तबले पर उन दिनो मिश्रा जी, मोतियॉ उस्ताद(शैल गॉव वाले) व दिनेश चन्द्र जोशी होते थे। ये सभी बहुत गुणीजन थे।

आपकी शैक्षिक योग्यता इंटर हैं। आपके पास इन्टर तक संगीत विषय के रूप में था। रामलीला में अभिनय के बाद आप तालीम से जुड़ गए अल्मोड़ा में होने वाली रामलीलाओं में आपने तालीम व हारमानियम वादन भी किया।

आपने पोखरखाली की रामलीला, नन्दादेवी की रामलीला, जाखनदेवी की रामलीला, ढूंगाधारा की रामलीला, धारानौला की रामलीला, नारायण तेवाडी देवाल की रामलीला में तालीम व हारमानियम वादन किया।

आपके परिवार में आपके बडे भाई स्व0 रमेश चन्द्र जोशी ने पोखरखाली व चीनाखान की रामलीलाओं में अभिनय, बडे भाई दिनेश चन्द्र जोशी ने शुरूआत में

अभिनय उसके बाद दर्जन भर रामलीलाओं में तालीम व तबला वादन, छोटे भाई सुधीर कुमार जोशी अभिनय से जुडे रहे।

जीवन चन्द्र जोशी जी बताते है कि कैकई और सूर्पनखा की भावपूर्ण भूमिका में शमशेर जंग राना और शंकर उप्रेती । शबरी व मन्थरा की भूमिका में भैरव जी। नन्दादेवी की रामलीला में हनुमान और दशरथ की भूमिका में चन्दा । रावण की भूमिका में धनीलाल शाह , बहादुर सिंह– परशुराम के अभिनय में, मनीदत्त पन्त मेघनाद की भूमिका में , केवट की भूमिका में दिवान गिरी ने मुझे प्रभावित किया।

वर्तमान में आप जगदीश निवास ढूंगाधारा रोड, बालेश्वर मन्दिर के निकट, अल्मोडा–263601 उत्तराखण्ड में रहते है।

हाजी कमाल अहमद

अल्मोडा हिन्दू मुस्लिम एकता भाईचारे की मिसाल रहा है। रामलीला में हाजी कमाल अहमद एक मेकअप मैन की हैसियत से जाने जाते हैं। हाजी कमाल अहमद का जन्म 1969 को अल्मोडा बाजार, अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 नूर अहमद के सुपुत्र हैं। आपने लगभग 32 वर्ष की आयु में श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की रामलीला से मेकअप का प्रारम्भ किया। रामलीला से मेकअप के लिए आपके आदर्श सईद अहमद हैं जोकि रामलीला से पिछले 43 वर्षो से जुडे हैं। हाजी कमाल अहमद ने हुक्का क्लब की रामलीला के बाद धारानौला की रामलीला, नन्दादेवी की रामलीला, कर्नाटक खोला की रामलीला तथा पिथौरागढ की रामलीला में मेकअप किया। आप मुख्यतः भिल्ल और राक्षसी पात्रों का मेकअप किया करते हैं।

आपके परिवार में आपके चाचा सईद अहमद ने अल्मोडा में खेली जाने वाली लगभग सभी रामलीलाओं में लगभग सभी कलाकारों का मेकअप किया। आपके बडे भाई स्व0 इकबाल अहमद ने मुरली मनोहर में होने वाली रामलीला में मेकअप किया। आप बताते हैं कि आपके द्वारा किए गए मेकअप में आपको उदयलाल शाह रावण के अभिनय में, राजा पाण्डे मेघनाद के अभिनय में और प्रकाश खर के अभिनय में अच्छे लगते थे। रामलीला के अतिरिक्त आपने रंगकर्मी निर्मल पाण्डे के निर्देशन में हुए नाटक अंधायुग में भी कलाकारों का मेकअप किया था।

वर्तमान में आप जौहरी बाजार अल्मोडा, अल्मोडा 263601 उत्तराखण्ड में रहते है।

कान्ता प्रसाद शाह

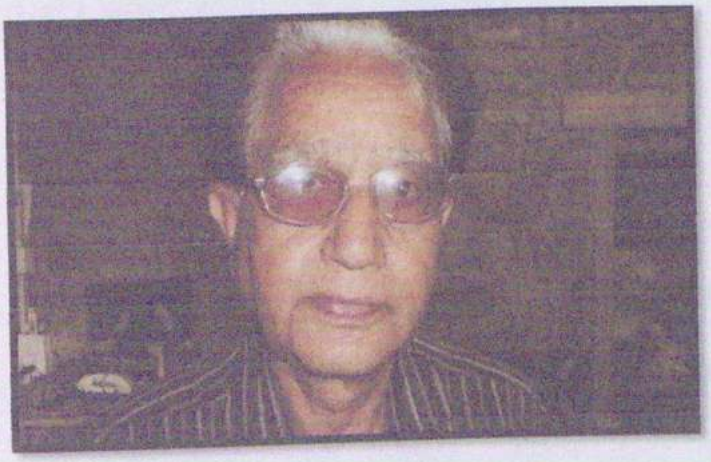

रामलीला के कलाकार कान्ता प्रसाद शाह का जन्म 25 जनवरी 1941 को अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 ईश्वरी लाल शाह के पुत्र हैं। आपने एम0ए0 तक की शिक्षा प्राप्त की और उसके उपरान्त अध्यापन कार्य किया आप शिक्षक के पद से सेवानिवृत हैं। आप नैनीताल में शारदा संघ नामक संगीत संस्थान व नैनीताल के नाट्य संस्था से जुडे रहे और अपनी सेवाए देते रहे।

कान्ता प्रसाद शाह ने 10 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय लक्ष्मण का गंगोला मोहल्ले के आंगन में होने वाली रामलीला में सन् 1951 में किया। उसके बाद आपने डुबकिया मोहल्ले में हुई रामलीला में लक्ष्मण और फिर हुग्ली फिल्ड में खेली जाने वाली रामलीला में पुनः लक्ष्मण के पात्र का अभिनय किया। कान्ता प्रसाद शाह बताते हैं कि उस समय रामलीला की तालीम युनियन क्लब में हुआ करती थी और हमें तालीम शिवलाल वर्मा और जवाहर लाल शाह दिया करते थे और तबला देवी लाल वर्मा(देवी उस्ताद) बजाया करते थे।

कान्ता प्रसाद शाह ने शास्त्रीय संगीत (सितार वादन) की शिक्षा प्रसिद्ध सितार वादक देवीराम आर्या ये प्राप्त की। वैसे तो सितार के संस्कार आपको अपने पिता ईश्वरी लाल शाह से प्राप्त हुए। रामलीला की ओर आप हुक्का क्लब में होने वाली बैठकी रामलीला से प्रभावित होकर गए।

कान्ता प्रसाद शाह जी से पहले उनके पिता ईश्वरी लाल जी रामलीला में संगीत पक्ष से जुडे हुए थे। इनके चाचा प्यारे लाल शाह बद्रेश्वर की रामलीला में लक्ष्मण का अभिनय किए थे । प्यारे लाल शाह जब बद्रेश्वर की रामलीला में लक्ष्मण का अभिनय करते थे उन दिनो राम का अभिनय नन्दन जोशी करते थे।

शाह जी बताते हैं कि तालीम शुरू होने से तिलपात्र होने तक रामलीला में अभिनय करने वाले लोगो के लिए प्याज, लहसून व अभद्र भाषा का प्रयोग वर्जित था। आज भी जिन कलाकारों के अभिनय की आपको याद है पुछे जाने पर आप बताते हैं कि चन्द्र सिंह नयाल(चन्दा)का हनुमान और दशरथ का अभिनय, केशव लाल शाह का परशुराम का अभिनय और मोहन नाई का कैकई का अभिनय मैं कभी नही भूल पाऊगा। हुक्का क्लब में होने वाली बैठकी रामलीला के कलाकारों के जिक्र आने पर कान्ता प्रसाद शाह बताते हैं कि बचपन की यादों में शिवलाल वर्मा , देवीलाल वर्मा , चन्द्र सिंह नयाल(चन्दा), मोहन नाई , बीजू भाई, जवाहर लाल शाह, ईश्वरी लाल शाह, केशव लाल शाह और भी कइ लोग हुआ करते थे।

वर्तमान में आप आनन्द कुटीर, फॉसी गधेरा, तल्लीताल नैनीताल उत्तराखण्ड में रहते है।

शिवराज सिंह कपकोटी

रामलीला के कलाकारों में अपनी विशेष जगह बनाने वाले शिवराज सिंह कपकोटी का जन्म 10 अगस्त 1978 को ग्राम कपकोट, लमगडा, उत्तराखण्ड में हुआ। आप श्री राम सिंह कपकोटी व माता मोहनी देवी के सुपुत्र है। आपने इंटरमिडिएट तक की पढाई की और सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में समाज की सेवा के कार्यो में संलग्न रहते हैं।

शिवराज सिंह जी ने 11 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय सीता का रामलीला कमेटी कपकोट में किया। उसके उपरान्त श्री रामलीला कमेटी लमगडा, ग्राम छडोजा लमगडा की रामलीला, ग्राम हथीखान लमगडा की रामलीला, ग्राम ध्यूली लमगडा की रामलीला में आपने कई पात्रो का अभिनय किया जिनमें सीता, लक्ष्मण मेघनाद, हनुमान, शबरी, सुलोचना, मंदोदरी,वनस्त्री, खर, दूषण, बाली, सुनैना, विभिषण आदि शामिल हैं। आप बताते है कि रामलीला में आपके गुरू उस समय के तालीम मास्टर स्व0 नैनराम थे। वह एक कुशल हारमोनियम वादक थे रामलीला की धुने तो उन्हे कंठस्थ थीं। उनके अलावा भोला दत्त पाण्डे भी तालीम दिया करते थे। तबले पर किशोर आर्या और मोती सिंह होते थे। आप रामलीला में अभिनय के अतिरिक्त प्रोमटर, स्टेज निर्माण व मेकअप विद्या से जुडे है।वर्तमान में आप अल्मोडा नन्दादेवी की रामलीला से जुडे हैं यहाँ पर आप रामलीला के पात्रों का मेकअप करते हैं। शिवराज सिंह बताते है कि उनके परिवार मे उनके बडे भाई नारायण सिंह हनुमान के पात्र का अभिनय किया करते थें।

वर्तमान में आप विश्वनाथ रोड़ निकट कालिका मन्दिर, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड में रहते है।

हेम चन्द्र जोशी

रामलीला के प्रतिष्ठित कलाकार हेम चन्द्र जोशी का जन्म 19 फरवरी 1951 को पाण्डेखोला अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री अमरनाथ जोशी व रेवती जोशी के सुपुत्र हैं। आपने स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त की और बिजली विभाग से सेवानिवृत है। हेम चन्द्र जोशी जी ने 20 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। 1971 में पाण्डेखोला अल्मोडा की रामलीला में बंदीजन का अभिनय किया। बंदीजन के अभिनय के बाद आपने कई वर्षो तक सुमन्त, सूर्पनखा, दशरथ, केवट, अंगद, परशुराम ,सुश्रेन वैध, जटायू और विभिषण का अभिनय किया।

हेम चन्द्र जोशी बताते हैं कि पाण्डेखोला में होने वाली रामलीला स्वय् में प्रेरणा बनी और पिता जी की संगीत की ओर रूचि मुझे रामलीला में अभिनय की ओर ले गई। रामलीला में आपके गुरू रेवाधर पाण्डे(भैरव मन्दिर के पुजारी) रहे बहुत अच्छा तबला वादन करते थे। आपके समय में रामलीला की तालीम गिरीश चन्द्र पाण्डे दिया करते थे। रामलीला में हारमोनियम गिरीश चन्द्र पाण्डे और तबला हरीश लाल शाह ओर हेमन्त गुरूरानी बजाया करते थे।

हेम चन्द्र जोशी जी के समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूष कलाकारों में सुनील जोशी व ललित मोहन जोशी – कैकई और सूर्पनखा का अभिनय किया करते थे।

आप बताते है कि अभिनय की दृष्टि से आपको जिन कलाकारो का प्रदर्शन अच्छा लगा उनमें केशव दत्त पन्त का रावण। भुवन चन्द्र तिवारी(शास्त्री जी) –दशरथ, हनुमान। रामदत्त पन्त–परशुराम। भुवन चन्द्र पाण्डे–कुम्भकरण और जोकर (हास्यअभिनेता) शामिल हैं।

हेम चन्द्र जोशी रामलीला के शुरूआती दिनो की याद करते हुए बताते हैं कि मुझे याद हैं कि उसे समय रामलीला को पक्का स्टेज बनाने के लिए हम लोगो ने 2 कि0मी0 दूर से अपने कंधों पर पत्थर ढोकर स्टेज का निर्माण किया था इतना जुडाव था रामलीला से हमारा।रामलीला उस समय हमारे लिए एक यज्ञ के समान हुआ करती थी। आपको बताऊ पाण्डेखोला की रामलीला जोकि सम्भवतः 1900 के शुरूआती दशक में शुरू हुई थी 1965 के आस पास कुछ वर्षो तक नहीं हुई फिर 1971 में पुनः रामलीला का मंचन शुरू हुआ। सन् तो अब याद नही लेकिन कुछ कलाकारों के नाम आपके माध्यम से अवश्य दर्ज करना चाहुंगा जिनमें र्स्वप्रथम रेवाधर पाण्डे रामलीला में तबला वादन, योगेश जोशी–राम, अरूण पाण्डे–लक्ष्मण, किरन पाण्डे–सीता, भुवन चन्द्र तिवारी(शास्त्री जी) –दशरथ, हनुमान,भेला दत्त पाण्डे–दशरथ , जीवन पन्त –दशरथ, राजेन्द्र प्रसाद पाण्डे– सुमन्त ,जनक, गिरीश चन्द्र पाण्डे(बोण्ड चच्चा नगर पालिका वाले) – खर दूषण, मेघनाद, मोहन चन्द्र पाण्डे– रावण, हेम चन्द्र पाण्डे (मौन पालन वाले)– रावण, लोकमान्य जी रामलीला में तबला वादन और रैलाकोट की रामलीला में तालीम मास्टर रहे। उमेश चन्द्र पाण्डे– जनक, विनोद जोशी – राम, हरीश पाण्डे – राम, मोहन चन्द्र पंत– राम, 1955–56 में केशव दत्त पन्त– रावण, राम दत्त पन्त–परशुराम ,जर्नादन तिवारी–त्रिजटा, भुवन चन्द्र पाण्डे– कुम्भकरण और जोकर, 1950 से पहले तारादत्त तिवारी – परशुराम, अश्विनी कमार पन्त– सीता व हरीश पाण्डे के संरक्षक होते थे।

आपके परिवार आपके छोटे भाई ललित मोहन जोशी अभिनय, छोटे भाई योगेश कुमार जोशी अभिनय, चाचा के बेटे विनोद कुमार जोशी और सुनील कुमार जोशी भी रामलीला में अभिनय से जुड़े थे।

वर्तमान में आप ए– 24 जज फार्म, हल्द्रानी, उत्तराखण्ड में रहते हैं।

जगत मोहन जोशी

रामलीला के कलाकार जगत मोहन जोशी का जन्म 16 नवम्बर 1964 को गल्ली,जाखनदेवी अल्मोडा उत्तराखण्ड में हुआ। आप स्व.श्री डी. पी. जोशी व माता स्व.गंगा जोशी के सुपुत्र है।

जगत मोहन जोशी जी ने 20 वर्ष की आयु में परशुराम के पात्र से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय बाल रामलीला जाखन देवी अल्मोडा में किया। उसके उपरान्त आपने रामलीला कमेटी जाखन देवी और लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब की रामलीलाओं में अभिनय किया। यहॉ पर आपने परशुराम, अंगद, केवट, दूषण, सुषेन वैध व कुम्भकरण का अभिनय किया। वर्तमान में भी आप परशुराम ओर केवट का अभिनय कर रहे हैं। आपने संगीत की शिक्षा पं0 तारा प्रसाद पाण्डे जी से प्राप्त की। रामलीला में आपके प्रेरणास्त्रोत व गुरू मोहन चन्द्र जोशी संगीत शिक्षक व तालीम मासटर और राजेन्द्र काण्डपाल हैं। आप कुमाऊनी बैठकी होली के गायक और उसके प्रचार के लिए बैठको का आयोजन अपने आवास पर करने के लिए भी शहर में जाने जाते हैं। आपने एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की वर्तमान में आप कोषागार अल्मोडा में सहायक कोषाधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। आपको स्व. मनोज कुमार जोशी के द्वारा किया गया राम का अभिनय आज भी याद है।

वर्तमान में आप 56, मल्ला गल्ली, जाखनदेवी, अल्मोडा , उत्तराखण्ड में रहते है।

सुधीर कुमार जोशी

रामलीला के कलाकार सुधीर कुमार जोशी का जन्म 17 जुलाई 1960 को ढूंगाधारा अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 जगदीश चन्द्र जोशी (ठेकेदार साहब के उपनाम से मशहुर)व माता सरोजनी जोशी के सुपुत्र है। आपने लगभग 19 वर्ष की आयु में रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। पहला अभिनय आपने परशुराम का 1979 में पोखरखाली की रामलीला में किया। उसके बाद आपने इसी रामलीला में खर, दुषण, मेघनाद, कुम्भकरण और रावण आदि पात्रों का अभिनय किया।

रामलीला में आप अपना गुरू तारा प्रसाद पाण्डे जी को मानते हैं जिनकी प्रेरणा से आप रामलीला की आकर अकृष्ट हुए उनसे ही आपने रामलीला की धुने सिखी । आपके समय में पोखरखाली की रामलीला में तारा प्रसाद पाण्डे तालीम दिया करते थे। तबले पर दिनेश चन्द्र जोशी व हारमोनियम पर जीवन चन्द्र जोशी हुआ करते थे।

आपकी शैक्षिक योग्यता एम0ए0, एस.सी.इ.आर.टी. से आपने विडियों प्रोडेक्शन कोर्स किया हैं। आपके पास इन्टर तक संगीत विषय के रूप में था। आपने अखिल भारतीय नाटक प्रतियोगिता में संगीतकार के रूप में अल्मोडा से प्रतिभाग किया।

आपके परिवार में आपके सबसे बडे भाई स्व0 रमेश चन्द्र जोशी ने पोखरखाली व चीनाखान की रामलीलाओं में अभिनय, मझले बडे भाई दिनेश चन्द्र जोशी ने शुरूआत

में अभिनय उसके बाद दर्जन भर रामलीलाओं में तालीम व तबला वादन, तीसरे नम्बर के बडे भाई जीवन चन्द्र जोशी ने अभिनय व शहर की पॉच रामलीलाओं में तालीम मास्टर के रूप में कार्य किया है।

सुधीर कुमार जोशी जी बताते है कि शमशेर जंग राना– कैकई। पिन्नू एलेक्जैण्डर– रावण। मनीदत्त पन्त– रावण। बहादुर सिंह– परशुराम। भैरव दा और शंकर उप्रेती – कैकई। आदि कलाकारों का अभिनय हमेशा याद रहेगा।

वर्तमान में आप जगदीश निवास ढूंगाधारा रोड, बालेश्वर मन्दिर के निकट, अल्मोडा–263601 उत्तराखण्ड में रहते है।

नवीन चन्द्र पन्त

रामलीला के कलाकार नवीन चन्द्र पन्त का जन्म 1900 को अघार खूंट में हुआ। आप स्व0 श्री पूर्णानन्द पन्त व माता नंदी पन्त के सुपुत्र थे। आपने कक्षा 10 तक की शिक्षा प्राप्त की और दुकान की। नवीन चन्द्र पन्त जी की मृत्यु 1940 में हुई।

नवीन चन्द्र पन्त जी की पुत्री श्रीमती भगवती उप्रेती बताती हैं कि उनके पिता ने पाण्डेखोला अल्मोडा की रामलीला में सम्भवतः 16–17 वर्ष की उम्र में राम के अभिनय किया होगा। राम के उपरान्त अगामी वर्षो में उन्होने कैकई, सूर्पनखा और परशुराम के पात्र का अभिनय किया ऐसा हम सुना करते थे। उनकी मृत्यु के कई वर्षो बाद उनके पुत्र ने रामलीला में अभिनय किया। जिनके नाम का उल्लेख यहाँ पर जानते हुए भी नही किया जा रहा। क्योकि उनके द्वारा उनके नाम को प्रकाशित व उनका उल्लेख न करने को कहा गया है।

वर्तमान में इनकी बेटी श्रीमती भगवती उप्रेती नन्दा देवी, तल्ला दन्या अल्मोडा में रहती हैं।

दीप लाल शाह

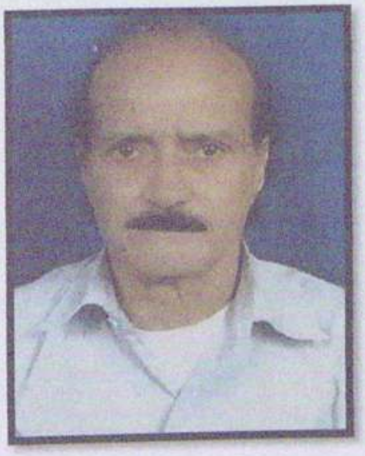

रामलीला के युवा कलाकार व रामलीला कमेटी नन्दा देवी के सदस्य दीप लाल शाह का जन्म 16 जनवरी 1949 को लाला बाजार , अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री भवानीदास शाह जी के सुपुत्र है।

दीप लाल शाह जी ने 12 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय 1961 में रावण सेना का नन्दा देवी अल्मोडा की रामलीला में किया। आपको रामलीला के मंच में जाने की प्रेरणा रामलीला के प्रतिष्ठित कलाकार जगन्नाथ सनवाल से मिली। स्व0 जगन्नाथ सनवाल और स्व0 भुवन कलाकार को आप रामलीला में अपना गुरू मानते हैं यह दोनो ही कलाकार उन दिनाके नन्दा देवी की रामलीला की तालीम दिया करते थे। नन्दा देवी की रामलीला में आपनें सुग्रीव, केवट, मारिच, सुबाहु, और सुश्रेन वैध का अभिनय किया। कुछ समय के लिए आप दिल्ली चले गए वहॉ पर भी आपका रामलीला का सस्कार आपको तिमारपुर में होने वाली कुमाऊॅनियों की रामलीला के मंच पर ले गया वहा पर आपने हास्य कलाकार का अभिनय किया जिसक उस समय काफी सराहा गया।अभिनय के अतिरिक्त आपने कार्यकारिणी और मेकअप से जुड कर भी रामलीला में अपना सहयोग दिया हैं। रामलीला में आपके बाद आपके छोटे भाई मुकुल प्रसाद शाह – लक्ष्मण व नारद व पुत्र गौरव कुमार शाह ने राम का अभिनय किया।

दीप लाल शाह बताते है कि मुझे स्व0 भुवन कलाकार का मंथरा का अभिनय, स्व0 केशव लाल शाह का रावण का अभिनय ,गोसाई नाथ गोस्वामी का सुमन्त का अभिनय, नन्दन जोशी और शमशेर राणा का कैकई का अभिनय हमेशा याद रहेगा। दीप लाल शाह जी रामलीला के पुराने समय के कलाकारों की जानकारी देते हुए बताते हैं कि चन्द्रसिंह नयाल–हनुमान,गोविन्द मैनेजर, प्यारे लाल शाह (पईया पहलवान)– अंगद, नन्दन जोशी– कैकई और सूर्पनखा, लक्ष्मी दत्त जोशी–हनुमान, जनक, सुमन्त, जगन्नाथ सनवाल–राम, दशरथ, भुवन कलाकार–, मंथरा, कौशल्या, भैरव तिवारी – शबरी, तारास दत्त पाण्डे(अत्री कुमार पाण्डे) – रावण, भगवत बिष्ट और राजन बिष्ट – मेघनाद, मदन कुमार चौपडा–ताडिका, ललित मोहन शाह– बाली, किरन लाल शाह– रावण, केशव लाल शाह– रावण, मन्ना शाह– जनक, धर्मानन्द कर्नाटक– केवट और भील, मुकुल शाह–नारद, गौरव कुमार शाह–राम, उदय लाल (स्वत्रन्त्रता संग्राम सैनानी)–अंगद और केवट, किशन लाल शाह–सीता, हरीश जुनेजा– महिला पात्र, अमरनाथ नेगी –सुमन्त शामिल थे।

वर्तमान में आपका पत्राचार का पता नन्दा देवी मार्ग, लाला बाजार, अल्मोडा , उत्तराखण्ड हैं।

त्रिलोचन पन्त

कुमाऊनी रामलीला के कलाकार त्रिलोचन पन्त का जन्म 03.09.1952 में नैनीताल में हुआ मुलतः ये लोग सुनराकोट अल्मोडा के रहने वाले हैं। आप स्व0 नित्यानन्द पन्त व स्व0 श्रीमती दुर्गा देवी पन्त के सुपुत्र हैं। आप चिकित्सा विभाग से सेवानिवृत हुए हैं। त्रिलोचन पन्त बताते हैं कि मुझे बचपन से ही रामलीला का शौक था हमारे घर में सभी भाईयों ने राम का अभिनय किया हैं। मैंने रामलीला में 10 वर्ष की उम्र से शुरू किया। पहला अभिनय अहिल्या का किया उसके उपरान्त कई वर्षो तक राम की भूमिका का निर्वाह किया। रामलीला में मेरे और भाईयो के प्रेरणा पिता जी ही रहे।

त्रिलोचन पन्त बताते हैं कि हमारे समय में महेश जोशी ने सीता का अभिनय किया। कन्नू उस्ताद ने सूर्पनखा का अभिनय किया। आपको कैलाश पन्त के द्वारा खेला गया राम का अभिनय , स्व0 चारू चन्द्र तिवारी के द्वारा किया गया लक्ष्मण का अभिनय , महेश जोशी के द्वारा किया गया सीता का अभिनय, राम प्रसाद वर्मा के द्वारा किया गया रावण का अभिनय, कल्लन उप्रेती के द्वारा किया गया मेघनाद का अभिनय और मदन मोहन जोशी के द्वारा खेला गया राम का यादगार अभिनय हैं। आपसे पहले की पीढ़ी में रामलीला से आपके पिता नित्यानन्द पन्त जुड़े थे जिन्होने रामलीला में कई वर्षो तक दशरथ का अभिनय किया। लगभग उनके साथ ही साथ मेर बड़े भाईयों चन्द्रशेखर पन्त, कैलाश चन्द्र पन्त व किशन चन्द्र पन्त ने रामलीला में अभिनय व निर्देशन किया। वर्तमान में आपका पत्राचार का पता प्यारें लॉज, कैण्ट तल्लीताल है।

अम्बा दत्त उप्रेती

रामलीला के युवा कलाकारों में अपने अभिनय से अपनी पहचान बनाने वाले अम्बा दत्त उप्रेती का जन्म 5 जनवरी 1975 को अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री गौरी त्त उप्रेती व माता स्व0 बसन्ती उप्रेती के पुत्र हैं। रामलीला में आपके गुरू व प्रेरणादायक व्यक्ति हेम चन्द्र जोशी हैं। अम्बा दत्त उप्रेती ने 11 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। पहला अभिनय अहिल्या और गौरी का नन्दादेवी की रामलीला में किया। अहिल्या, गौरी, शत्रुघन, भरत, सीता आदि का अभिनय किया।

अम्बा दत्त उप्रेती बताते है कि उन्हे किरन लाल शाह का रावण का अभिनय, अमरनाथ नेगी का अंगद व मारिच का अभिनय ने मुझे बहुत प्रभावित किया। उन दिनो रामलीला की तालीम हेम चन्द्र जोशी दिया करते थे और स्त्री पात्रों को अभिनय करने वाले कलाकारो में शरद लाल शाह सूर्पनखा, व शंकर उप्रेती मंथरा का अभिनय किया करते थे। आपके परिवार में रामलीला से आपके भाई शंकर उप्रेती मंथरा और खर, दूसरे भाई बसन्त उप्रेती शत्रुघन और लक्ष्मण, तीसरे भाई गणेश उप्रेती भरत, शत्रुघन और मकरध्वज के अभिनय से जुडे थे।

वर्तमान में आपके पत्राचार का पता उप्रेती टी स्टाल, नन्दादेवी बाजार, अल्मोडा 263601 उत्तराखण्ड है।

जीवन लाल

रामलीला के प्रतिष्ठित कलाकार व रामलीला के निर्देशक जीवन लाल जी का जन्म 21 फरवरी 1948 को मो0 जोशीखोला, राजपुरा अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री हरिराम जी के सुपुत्र है। जीवन लाल जी ने राजपुरा अल्मोडा की रामलीला , जसकोट की रामलीला व चौमू की रामलीला में अभिनय और निर्देशन दिया। 30 वर्ष की उम्र से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की।पहला अभिनय राजपुरा की रामलीला में सुमन्त का किया।रामलीला के इन मंचो में आपने सुमन्त और विश्वामित्र की भूमिका अदा की। आपने स्नातक की शिक्षा तक की पढाई की और शिक्षक बने और प्रधानाचार्य के पद से सेवानिवृत हुए। रामलीला में आपके गुरू व प्रेरक व्यक्ति रतन लाल जी हैं। आपके समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया जिनमें अजुर्न कुमार– सूर्पनखा, बच्ची सिंह –कौशल्या, सोनू कुमार– कैकई शामिल थे।

अजुर्न कुमार

रामलीला के प्रतिष्ठित कलाकार व सूर्पनखा के अभिनय से अपनी पहचान बनाने वाले कलाकार अजुर्न कुमार जी का जन्म 15-06-1976 को मोहल्ला जोशीखोला, राजपुरा अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री बच्ची लाल जी के सुपुत्र है। अजुर्न कुमार जी ने 20 वर्ष की उम्र से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। रामलीला में आपके गुरू व प्रेरक व्यक्ति जीवन लाल जिनसे आपने रामलीला में अभिनय के गुर सीखे। अजुर्न कुमार ने रामलीला में सूर्पनखा के पात्र के अभिनय में अल्मोडा में अपना स्थान बनाया है। इन्होने राजपुरा की रामलीला, सरकार की आली की रामलीला, दुगालखोला की रामलीला,पपरशैली की रामलीला, लोधिया की रामलीला में सूर्पनखा का अभिनय किया। आपने कक्षा 12 की तक की शिक्षा प्राप्त की वर्तमान में आप बेरोजगार हैं। आपके समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में राजीव कुमार- कैकई, विनीत कुमार-कौशल्या शामिल हैं।आपको तालीम जीवन लाल व रामलीला में तबलासुनील कुमार बजाते हैं। आपको लक्ष्मण के अभिनय में योगेश कुमार और परशुराम के अभिनय में आशीष कुमार का अभिनय हमेशा याद रहेगा। वर्तमान में आप मोहल्ला जोशीखोला,राजपुरा, अल्मोडा, उत्तराखण्ड में रहते है।

गिरीश लाल

रामलीला के प्रतिष्ठित कलाकार गिरीश लाल जी का जन्म14 जुलाई 1958 को मो0ओढखोला, राजपुरा अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री उत्तम राम जी के सुपुत्र है। गिरीश लाल जी ने राजपुरा अल्मोडा की रामलीला , खत्याड़ी की रामलीला में अभिनय और बासुरी वादन किया। 42 वर्ष की उम्र से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। पहला अभिनय राजपुरा की रामलीला में वशिष्ठ मुनि का किया।इन सभी रामलीलाओं में आपने केवट, देवगण, सुषेन वैध, वशिष्ठ मुनि,विश्वामित्र का अभिनय किया।

आपने कक्षा 7 तक की पढाई की और रोजगार के रूप में पेंटिग का कार्य करते हैं और सामाजिक कार्यो से जुडे रहते हैं। संगीत की शिक्षा आपने धीरेन्द्र जी से प्राप्त की। रामलीला में आपके गुरू व प्रेरक व्यक्ति रतन लाल व महावीर प्रसाद हैं। आपके समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया जिनमें अजुर्न कुमार– सूर्पनखा, संजीव कुमार– कैकई शामिल हैं। रामलीला की तालीम रतन लाल , महावीर प्रसाद , विनीत कुमार देते हैं। रामलीला में तबला सुनील कुमार, पंकज कुमार और अनुप कुमार बजाया करते हैं। आपके बाद की पीढ़ी में आपका पुत्र सुनील कुमार इन्द्र, देवगण आदि पात्रों का अभिनय करता है।

वर्तमान में आप मल्ला ओढखोला, पेयजल सिमेन्ट टंकी, दल्ला चौराहा के समीप, राजपुरा अल्मोडा, उत्तराखण्ड में रहते है।

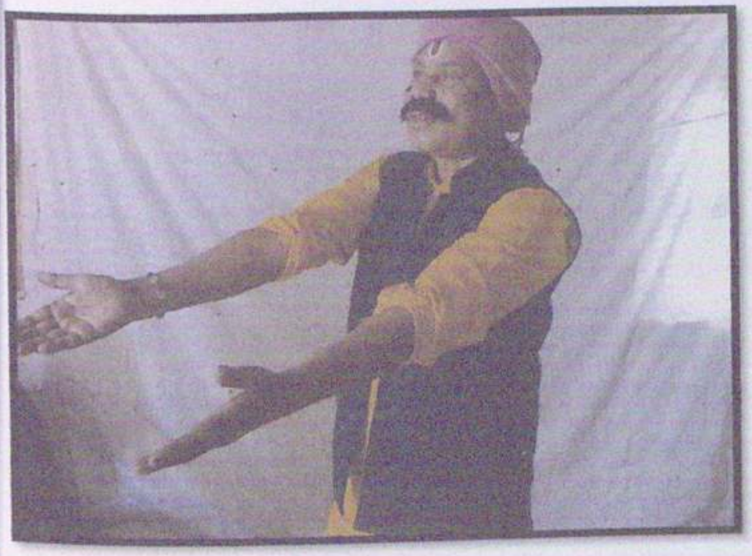

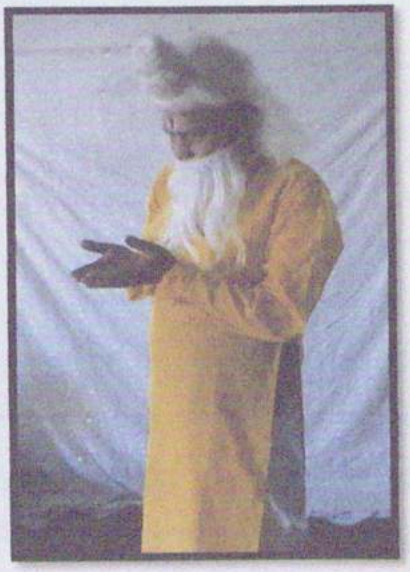

कंचन कुमार

रामलीला के कलाकार कंचन कुमार जी का जन्म 25 जुलाई 1974 को जोशीखोला, राजपुरा अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री किशन लाल जी के सुपुत्र है। कंचन कुमार ने राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में 16 वर्ष की उम्र से अभिनय की शुरूआत की। रामलीला में पहला अभिनय सुमित्रा का किया। राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में आपने सुमित्रा, सुग्रीव, बाली, मेघनाद, ताडिका व वर्तमान में 2010 से 2015 तक आपने हनुमान का अभिनय किया है। आपने स्नात्तकोतर तक की पढाई की हैं और वर्तमान में आप उत्तराखण्ड परिवहन निगम अल्मोड़ा में कार्यरत हैं।संगीत की शिक्षा आपने धींरेन्द्र जी से प्राप्त की। रामलीला में आपके गुरू व प्रेरक व्यक्ति जीवन लालजी हैं। आपके समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया जिनमें धर्मेन्द्र कनवाल और काशी राम – सूर्पनखा शामिल हैं। रामलीला हारमोनियम रतन लाल जी और तबला सुनील कुमार बजाया करते हैं। आपके बाद आपके भाई संतोष कुमार मेघनाद और सुधीर कुमार ने सीता का अभिनय किया। अभिनय की दृष्टि से आपको स्व0मोहन लाल जी के द्वारा किया गया ताडिका अभिनय आज भी याद आता है। वर्तमान में आप जोशी खोला, राजपुरा, अल्मोडा, उत्तराखण्ड में रहते है।

विनीत कुमार

रामलीला के कलाकार विनीत कुमार जी का जन्म 14 जनवरी 1988 को मल्ला दन्या, राजपुरा अल्मोडा में हुआ। आप श्री राजेन्द्र प्रसाद जी के सुपुत्र है। विनीत कुमार ने राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में 8 वर्ष की उम्र से अभिनय की शुरूआत की। रामलीला में पहला अभिनय अहिल्या का किया। राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में आपने अहिल्या, गौरी, सुलोचना, मन्दोदरी, शत्रुघन, भरत, कौशल्या, केवट, भिल्ल और शबरी का अभिनय किया है। आपने स्नात्तकोतर तक की पढाई की हैं और वर्तमान में आप बेरोजगार हैं।रामलीला में आपके गुरू व प्रेरक व्यक्ति चन्द्रशेखर आर्या और सुनील कुमार हैं। आपके समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में विपिन कुमार–मंथरा, विमलेश कुमार –कैकई, अजुर्न कुमार– सूर्पनखा संजीव कुमार–कैकई शामिल हैं। रामलीला में तालीम देने वालो में आपके अलावा सतीश कुमार दिया करते हैं। आपके परिवार में आपके पिता राजेन्द्र प्रसाद अध्यक्ष रामलीला कमेटी राजपुरा तथा भाई विकास कुमार रामलीला में बाली व अंगद का अभिनय और जय प्रकाश मकरध्वज व सुग्रीव का अभिनय करते हैं।अभिनय की दृष्टि से विनीत कुमार जी को महेन्द्र कुमार के द्वारा किया गया रावण, जय प्रकाश के द्वारा मकरध्वज, अर्जुन कुमार का सूर्पनखा का अभिनय,संजीव कुमार का मेघनाद का अभिनय, और विमलेश कुमार के द्वारा किए गए कैकई के अभिनय ने उन्हे सबसे ज्यादा प्रभावित किया। वर्तमान में आप मल्ला दन्या, राजपुरा, अल्मोडा, उत्तराखण्ड में रहते है।

संजीव कुमार आर्या

रामलीला के कलाकार संजीव कुमार आर्या(सोनू) का जन्म 15 नवम्बर 1983 को तल्ला जोशीखोला, धूनि मन्दिर के समीप, राजपुरा, अल्मोडा में हुआ। आप श्री राजेन्द्र प्रसाद के सुपुत्र है।

संजीव कुमार आर्या ने राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में 12 वर्ष की उम्र से अभिनय की शुरूआत की। रामलीला में पहला अभिनय भिल्ल का किया। राजपुरा अल्मोडा की रामलीला और सरकार की आली अल्मोडा की रामलीला में आपने राम, कैकई, परशुराम, भिल्ल, केवट,मेघनाद,बाली,जोगी रावण, रावण, आदि का अभिनय किया।

आपने कक्षा 9 तक की पढाई की हैं और वर्तमान में आप बेरोजगार हैं। रामलीला में आपके गुरू सुनील कुमार व प्रेरक व्यक्ति चन्द्रशेखर आर्या (बब्लू) हैं। रामलीला में तरलीम जीवन लाल व विनित कुमार निक्कू दिया करते हैं और तबला सुनील कुमार, विमलेश कुमार, अनूप कुमार और पंकज कुमार बजाया करते हैं।

आपके परिवार में आपके मामा अर्जुन कुमार सूर्पनखा के पात्र के के कुशल अभिनय के लिए जाने जाते हैं।

अभिनय की दृष्टि से आपको महेन्द्र कुमार के द्वारा किया गया रावण और अर्जुन कुमार के द्वारा किया गया सूर्पनखा का अभिनय आज भी याद आता है।

वर्तमान में आप तल्ला जोशीखोला, धूनि मन्दिर के समीप, राजपुरा, अल्मोड़ा उत्तराखण्ड में रहते है।

नवीन चन्द्र पन्त

रामलीला के कलाकार नवीन चन्द्र पन्त का जन्म 15 जून 1960 को ग्राम गल्ली अल्मोड़ा में हुआ। आप स्व0 श्री पूरन चन्द्र पन्त व माता स्व0 श्रीमती धनी देवी पन्त के सुपुत्र है। नवीन चन्द्र पन्त ने 11 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। इन्होने पहला अभिनय सीता का जाखनदेवी अल्मोड़ा की रामलीला में सन् 1971 में किया। उसके बाद नन्दा देवी की रामलीला, पाण्ड़ेखोला अल्मोड़ा की रामलीला, मुखानी हल्द्वानी की रामलीला, रामपुर रोड़ हल्द्वानी की रामलीला, ज्योलीकोट नैनीताल की रामलीला, देवलचौड़ हल्द्वानी की रामलीला, कोटाबाग नैनीताल की रामलीला शामिल हैं।

इनमे आपने जाखनदेवी की रामलीला में सीता और सुमन्त। नन्दा देवी की रामलीला में सुमन्त। पाण्ड़ेखोला की रामलीला में सुमन्त व परशुराम। मुखानी की रामलीला में मेघनाद। रामपुर रोड़ की रामलीला में जनक, मंथरा, सुमन्त, सुलोचना। देवलचौड़ की रामलीला में जनक, सुमन्त, सुलोचना। ज्योलीकोट की रामलीला में जनक। कोटाबाग की रामलीला में परशुराम और सुमन्त का अभिनय किया। इसके अलावा आपने बाल रामलीला जाखनदेवी, देवलचौड़ व कोटाबाग की रामलीला में तालीम और निर्देशन का कार्य किया।आप जिन भी रामलीला कमेटियों से जुड़े वहाँ पर आपने समय समय पर प्रोमटिंग का कार्य भी किया।

जाखनदेवी की रामलीला के तालीम मास्टर गिरीश चन्द्र जोशी जी को आप रामलीला में प्रेरक व्यक्तित्व व गुरू के रूप में देखते हैं। आपको रामलीला का संस्कार अपने पिता से मिला वह ग्राम गल्ली की रामलीला में परशुराम का अभिनय किया करते थे। अपके बाद आपके भांजे हेमन्त पाण्ड़े नंदा देवी की रामलीला और दीप चन्द्र पाण्डे पाण्डेखोला की रामलीला में अभिनय से जुड़े हैं।

नवीन चन्द्र पन्त बताते है कि उस समय स्त्री पात्रो का अभिनय करने वाले कलाकारों में लक्ष्मी दत्त तिवारी–कैकई, सुलोचना व मंथरा। चन्नू जोशी–सूर्पनखा और कैकई। शमशेर जंग राना–कैकई और सूर्पनखा। नवीन– कैकई ,सूर्पनखा शामिल थे।

अपने समय के तालिम मास्टरो का जिक्र करते हुए बताते हैं कि उन दिनो जाखनदेवी की रामलीला में गिरीश चन्द्र जोशी, नन्दादेवी की रामलीला में जगन्नाथ सनवाल, पाण्डेखोला की रामलीला में हेम चन्द्र पाण्ड़े, रामपुर रोड़ हल्द्वानी की रामलीला में लक्ष्मीदत्त तिवारी, अशोक टण्डन व वैष्णव जी, देवलचौड़ की रामलीला में नवीन चन्द्र पाण्डे व गजेन्द्र पाल तालीम दिया करते थे।

रामलीला में किस कलाकार का अभिनय आपको अच्छा लगा पुछे जाने पर आप बताते है कि बहादुर सिंह बिष्ट–परशुराम(जाखनदेवी), मनोज पाण्डे–राम (जाखनदेवी), उदयलाल साह– रावण(नन्दादेवी), शरद तिवारी – मेघनाद (जाखनदेवी), राजेन्द्र तिवारी–कुम्भकरण (जाखनदेवी), कुन्ना जोशी–जनक (जाखनदेवी), नवीन पाण्डे–शबरी(देवल चौड़), प्रदीप कर्नाटक–रावण (मुखानी), स्व0 भानु पन्त–राम (पाण्डेखोला), दीप पाण्डे–राम (पाण्डेखोला), धीरज पाण्डे– सुमन्त (पाण्डेखोला), पिताम्बर दत्त पाण्डे–रावण (ज्योलीकोट), उमेश पाण्डे–रावण (पाण्डेखोला), गजेन्द्र पाल रावण(देवलचौड) ,नवीन पाठक–हनुमान (ज्योलीकोट), प्रमोद तिवारी– हनुमान (देवलचौड) ने अविस्मरणीय अभिनय किया था।

वर्तमान में आपका पत्रव्यवहार का पता शिव पुरम, तल्ला हिम्मतपुर, पो0 आ0 हरिपुर नायक , हल्द्वानी है।

आशीष कुमार

रामलीला के कलाकार आशीष कुमार का जन्म 10 जनवरी 1992 को मल्ला राजपुरा, अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री नारायण राम जी के सुपुत्र है। आशीष कुमार ने राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में 10 वर्ष की उम्र से अभिनय की शुरूआत की। रामलीला में पहला अभिनय भरत का किया। राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में आपने भरत, लक्ष्मण, राम व परशुराम का अभिनय किया। आपने कक्षा 12 तक की पढाई करने के उपरान्त फार्मेसी की वर्तमान में आप फार्मासिस्ट हैं। रामलीला में तालीम जीवन लाल, सुनील कुमार व विमलेश कुमार दिया करते हैं और तबला विमलेश कुमार बजाया करते हैं। आपके परिवार में आपके मामा अर्जुन कुमार सूर्पनखा के पात्र के कुशल अभिनय के लिए तथा भाई संजीव कुमार कैकई व मेघनाद के अभिनय के लिए जाने जाते हैं। अभिनय की दृष्टि से आपको अर्जुन कुमार के द्वारा किया गया सूर्पनखा का अभिनय आज भी याद आता है। वर्तमान में आप मल्ला राजपुरा, अल्मोडा उत्तराखण्ड में रहते है।

अंकित आर्या

रामलीला के कलाकार अंकित आर्या का जन्म 19 अगस्त 1996 को मल्ला ओढखोला, राजपुरा, अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री नारायण राम जी के सुपुत्र है। अंकित आर्या ने राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में 11 वर्ष की उम्र से अभिनय की शुरूआत की। रामलीला में पहला अभिनय शत्रुघन का किया। राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में आपने शत्रुघन, राम, रावण, मेघनाद, विराट व परशुराम का अभिनय किया। आपने कक्षा 12 की पढाई कर रहे है। रामलीला में आपके गुरू जीवन लालजी हैं जिनसे आपने रामलीला की धुने सीखीं। रामलीला की तालीम जीवन लाल, सुनील कुमार, चन्द्रशेखर आर्या व विमलेश कुमार दिया करते हैं और तबला सुनील कुमार बजाया करते हैं। आपके परिवार में आपके मामा अर्जुन कुमार सूर्पनखा के पात्र के कुशल अभिनय के लिए तथा भाई संजीव कुमार कैकई व मेघनाद के अभिनय के लिए, भाई आशीष कुमार राम, लक्ष्मण और परशुराम के अभिनय के लिए जाने जाते हैं। अभिनय की दृष्टि से आपको अर्जुन कुमार के द्वारा किया गया सूर्पनखा का अभिनय आज भी याद आता है। वर्तमान में आप मल्ला ओढखोला, राजपुरा, अल्मोडा उत्तराखण्ड में रहते है।

ललित कुमार आर्या

रामलीला के कलाकार ललित कुमार आर्या का जन्म 15जुलाई 1977 को मल्ला राजपुरा, अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री बहादुर लाल जी के सुपुत्र है। ललित कुमार आर्या ने राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में 18 वर्ष की उम्र से अभिनय की शुरूआत की। रामलीला में पहला अभिनय सीता का किया। राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में आपने सीता, लक्ष्मण, राम, विश्वामित्र व मंथरा का अभिनय किया।

आपने स्नातक की पढाई करने के उपरान्त मजदूरी कर जीवनयापन करते हैं। रामलीला में आपके गुरू स्व0 श्री रतन लाल व सुनील कुमार हैं जिनसे आपने रामलीला की धुने सीखी। रामलीला की तालीम रतन लाल दिया करते थे और तबला सुनील कुमार बजाते थे। ललित कुमार आर्या के समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूष कलाकारों में जगदीश लाल–मंदोदरी और सन्तोष कुमार– कैकई शामिल हैं। अभिनय की दृष्टि से आपको राम के अभिनय में विमलेश कुमार का अभिनय आज भी याद आता है।

वर्तमान में आप मल्ला राजपुरा, अल्मोडा उत्तराखण्ड में रहते है।

महेन्द्र कुमार

रामलीला के कलाकार महेन्द्र कुमार का जन्म 14 फरवरी 1976 को जोशी खोला, राजपुरा, अल्मोडा में हुआ। आप श्री प्रताप राम जी के सुपुत्र है। महेन्द्र कुमार ने राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में 29 वर्ष की उम्र से अभिनय की शुरूआत की। रामलीला में पहला अभिनय देवगण का किया। राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में आपने देवगण, कालिका, वशिष्ठ मुनि, मंत्री, केवट, का अभिनय किया। आपने कक्षा आठ तक पढाई के उपरान्त कैटरिंग का कार्य करते हैं। रामलीला में आप अपना गुरू सुनील कुमार को मानते हैं। रामलीला की तालीम जीवन लाल और सुनील कुमार दिया करते है। आपके समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूष कलाकारों में संजीव आर्या–कैकई , त्रिलोक कुमार –मंदोदरी और अजुर्न कुमार– सूर्पनखा शामिल हैं। अभिनय की दृष्टि से आपको अंकित आर्या का शत्रुघन, राम, रावण, मेघनाद, विराट व परशुराम का अभिनय तथा विनित कुमार का मन्दोदरी, शत्रुघन, भरत, कौशल्या का अभिनय आज भी याद आता है।

वर्तमान में आप जोशी खोला, राजपुरा, अल्मोडा अल्मोडा उत्तराखण्ड में रहते है।

योगेश कुमार

रामलीला के कलाकार योगेश कुमार का जन्म 10 जून 1991 को मल्ला ओढखोला, राजपुरा, अल्मोडा में हुआ। आप श्री दिनेश लाल जी के सुपुत्र है। योगेश कुमार ने राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में 13 वर्ष की उम्र से अभिनय की शुरूआत की। रामलीला में पहला अभिनय शत्रुघन का किया। राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में आपने शत्रुघन , भरत व लक्ष्मण का अभिनय किया।

आपने कक्षा बारह तक पढाई के उपरान्त स्वंय का करोबार शुरू किया । रामलीला में आप अपना गुरू जीवन लाल जी को मानते हैं। रामलीला की तालीम जीवन लाल और हारमोनियम वादक विनीत कुमार, तबले पर नरेन्द्र कुमार होते है। आपके चाचा नरेन्द्र कुमार रामलीला में राम का अभिनय किया करते थे। अभिनय की दृष्टि से आपको पंकज कुमार का सीता अभिनय आज भी याद आता है।

वर्तमान में आप मल्ला ओढखोला, राजपुरा, अल्मोडा उत्तराखण्ड में रहते है।

रवि कुमार

रामलीला के कलाकार रवि कुमार का जन्म 1 अगस्त 1995 को मल्ला दन्या, राजपुरा, अल्मोडा में हुआ। आप श्री पूरन लाल जी के सुपुत्र है। रवि कुमार ने राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में 13 वर्ष की उम्र से अभिनय की शुरूआत की। रामलीला में पहला अभिनय वनवासनी का किया। राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में आपने मुनि , वनवासनी और सुबाहु का अभिनय किया। आपने कक्षा 11 तक पढाई की उसके उपरान्त स्वंय का करोबार शुरु किया । रामलीला में आप अपना गुरू सुनील कुमार को मानते हैं। रामलीला की तालीम विमलेश कुमार,सतीश कुमार और तबले पर सुनील कुमार होते है। आपके पिता पूरन लाल रामलीला में मारिच और कुम्भकरण का अभिनय किया करते थे। अभिनय की दृष्टि से आपको संजीव आर्या का मेघनाद का अभिनय याद आता है। वर्तमान में आप मल्ला दन्या, राजपुरा,अल्मोडा उत्तराखण्ड में रहते है।

जितेन्द्र कुमार

रामलीला के कलाकार जितेन्द्र कुमार का जन्म 16 अगस्त 1981 को ओढखोला, राजपुरा, अल्मोडा में हुआ। आप श्री जगदीश लाल जीं के सुपुत्र है।

जितेन्द्र कुमार ने राजपुरा अल्मोडा कीं रामलीला में 18 वर्ष की उम्र से अभिनय की शुरूआत की। रामलीला में पहला अभिनय अहिरावण का किया। राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में आप कार्यकारिणी के सदस्य हैं।

आपने कक्षा 12 तक पढाई की उसके उपरान्त स्वंय का करोबार शुरू किया । रामलीला में आप अपना गुरू सुनील कुमार को मानते हैं। रामलीला की तालीम सुनील कुमार और तबले पर पंकज कुमार होते है। अभिनय की दृष्टि से आपको संजीव आर्या का मेघनाद, अजुर्न कुमार का सूर्पनखा,विनीत कुमार कौशल्या दिपक कुमार औरसंजीव आर्या के द्वारा किया गया कैकई का अभिनय आज भी याद आता है।

वर्तमान में आप ओढखोला, राजपुरा, अल्मोडा उत्तराखण्ड में रहते है।

सुनील कुमार

रामलीला के कलाकार सुनील कुमार का जन्म 31 अक्टूबर 1975 को ओढखोला, राजपुरा, अल्मोडा में हुआ। आप श्री गिरीश लाल जीं के सुपुत्र है। सुनील कुमार ने राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में 25 वर्ष की उम्र से अभिनय की शुरूआत की। रामलीला में पहला अभिनय इन्द्र का किया। राजपुरा अल्मोडा की रामलीला में आपने इन्द्र, मायावीं, देवगण आदि का अभिनय किया । आपने कक्षा 9 तक पढाई कीं उसके उपरान्त स्वंय का पेंटिग का काम करते हैं। रामलीला में आप अपना गुरू जीवन लाल जीं को मानते हैं। रामलीला की तालीम जीवन लाल, सुनील कुमार विनीत कुमार और महावीर प्रसाद दिया करते थे । तबले पर सुनील कुमार, पंकज कुमार और विमलेश कुमार होते है। सुनील कुमार के परिवार में उनके पिता गिरीश लाल जीं ने देवगण, विश्वामित्र, सुश्रेन वैध रामलीला में बासुरी पर संगत करते हैं। अभिनय की दृष्टि से आपको संजीव आर्या के द्वारा किया गया मेघनाद का अभिनय आज भी याद आता है।

वर्तमान में आप ओढखोला, राजपुरा, अल्मोडा उत्तराखण्ड में रहते है।

रतन मोहन

रामलीला के कलाकार को मंच पर श्रृंगार के साथ प्रस्तुत करने में अपना योगदान देने वाले मेकअप मैन रतन मोहन का जन्म 25 अगस्त 1989 को मल्ला ढल्ला, राजपुरा, अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री महेश लाल जीं के सुपुत्र है।

रतन मोहन ने राजपुरा अल्मोडा कीं रामलीला में 15 वर्ष की उम्र पात्रों के मेकअप करने की शुरूआत की। तब से वर्तमान तक आप राजपुरा की रामलीला में मेकअप किया करते हैं। आपने कक्षा 9 तक पढाई की उसके उपरान्त स्वंय कारोबार शुरू किया।

राजपुरा की रामलीला की तालीम मुख्यतः जीवन लाल दिया करते हैं ओर रामलीला में तबला सुनील कुमार बजाते हैं।

अभिनय की दृष्टि से आपको अजुर्न कुमार के द्वारा किया गया सूर्पनखा का अभिनय आज भी याद आता है।

वर्तमान में आप मल्ला दल्लॉ, राजपुरा, अल्मोडा उत्तराखण्ड में रहते है।

दिनेश चन्द्र जोशी

रामलीला के कलाकार दिनेश चन्द्र जोशी का जन्म 15 जनवरी 1958 को जोशी खोला, डाभर बेतालघाट उत्तराखण्ड में हुआ। आप स्व0 श्री ऊर्बादत्त जोशी के सुपुत्र दिनेश चन्द्र जोशी जी ने 12 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय जटायू व जाम्बंत का नवयुवक मंगल दल रामलीला कमेटी जोशीखोला डाभर, बेतालघाट में सन् 1970 से की। 1970 से 1974 तक इस रामलीला में खरदूषण, रावण, बाली, सुग्रीव, अंगद, जटायू , जाम्बन्त, सुमन्त और विभिषण का अभिनय किया उसके बाद 1978 में आप नौकरी की तलाश में दिल्ली चले गए वहाँ पर आप कुमाऊँ सांस्कृतिक रामलीला कमेटी शक्कूर बस्ती पंजाबी बाग से जुड गए और यहाँ पर आपने खरदूषण, सुमन्त, बाली, सुग्रीव, हनुमान के पात्रों का अभिनय 1984 तक किया।

आपने कक्षा 12 तक पढाई की उसके उपरान्त आपने विधुत विभाग में नौकरी की। रामलीला में आप अपना पहले गुरू का दर्जा दया किशन जोशी जी को देते हैं और दूसरा दिल्ली की रामलीला में आपके प्रेरणा रहे बाला दत्त जोशी जिनसे आपने रामलीला की धुने व अभिनय सीखा। बाला दत्त जोशी कुमाऊँ सांस्कृतिक रामलीला कमेटी शक्कूर बस्ती पंजाबी बाग की रामलीला में रावण व दशरथ का अभिनय किया करते थे। दिनेश चन्द्र जोशी बताते हैं हमारे परिवार में मेरे बडे भाई स्व0 आनन्द बल्लभ जोशी ने

1965 से 1975 तक नवयुवक मंगल दल रामलीला कमेटी जोशीखोला डाभर, बेतालघाट में महिला पात्रों (कैकई,सुनयना,मंदोदरी, सूर्पनखा और शबरी का अभिनय किया है।

दिनेश चन्द्र जोशी को रामलीला में जिन कलाकारों का अभिनय अच्छा लगा उनमें बाला दत्त पाण्डे–राम, हरीश चन्द्र जोशी–परशुराम, चन्द्रशेखर सत्यवर्ती–लक्ष्मण, पुरन पुरोहित–सीता, पुरन सिंह नेगी–खर और बाली तथा बाला दत्त जोशी– रावण व दशरथ का अभिनय शामिल हैं।

वर्तमान में आप 25/196 डेसू कालौनी, जनकपुरी, दिल्ली –58 में रहते है।

रेवाधर जोशी

रामलीला में शुरूआती दौर में अभिनय से जुड़े और उसके उपरान्त रामलीला के कुशल संगीत निर्देशको में अग्रिम पंक्ति के व्यक्ति रेवाधर जोशी का जन्म 12 फरवरी 1932 को ग्राम छत्तगुल्ला, द्वाराहाट, रानीखेत, जिला अल्मोडा ,उत्तराखण्ड में हुआ। आप स्व0 बच्चीराम जोशी के सुपुत्र हैं। आपने कक्षा 4 तक की शिक्षा प्राप्त की। आप ज्योतिष और वृत्ति का कार्य करते हैं। रेवाधर जोशी जी ने लगभग 35 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने सम्भवतः पहला अभिनय विश्वामित्र का ग्राम असगोली द्वाराहाट में खेली जाने वाली रामलीला में 1967 में किया आगे के वर्षो में द्वाराहाट के ग्राम असगोली और ग्राम सलना में विश्वामित्र, परशुराम, कैकई, सूर्पनखा, शबरी और केवट का अभिनय 16 वर्षो तक किया। अभिनय के साथ सन् 1975 से आपने रामलीला में तालीम देना शुरू कर दिया। रामलीला में आपके लिए प्रेरक व्यक्ति और गुरू गुसाई दत्त तिवारी जी रहे। आपके समय में रामलीला में हारमोनियम मास्टर ग्राम कोठार, ताडीखेत के मोहन राम हुआ करते थे। 1975 में आपके द्वारा ग्राम छत्तगुल्ला में रामलीला की शुरूआत हुई इस रामलीला के आप संस्थापक रहे।

रेवाधर जोशी रामलीला के एक कुशल तालीम मास्टर के रूप में द्वाराहाट रानीखेत के क्षेत्र में जाने जाते हैं। इन्होने रामलीला में तालीम मास्टर और संगीत निर्देशक के रूप

में 1975 से 2011 तक अपनी सेवाएें रामलीला के मंच को दी जिनमें ग्राम असगोली द्वाराहाट की रामलीला, ग्राम छत्तगुल्ला की रामलीला, ग्राम बसेरा की रामलीला, ग्राम किरौली की रामलीला, ग्राम सलना की रामलीला, इंदौर (म0प्र0) शामिल हैं । रेवाधर जोशी बताते हैं कि उन्होने प्रत्येक वर्ष दो रामलीलाओं में भागेदारी की । पहाडो में कुछ स्थानों पर अश्विन मास तथा कुछ जगह चैत्र की नवरात्री में रामलीला का मंचन होता है।

रेवाधर जोशी जी कहते हैं कि उन्होने संगीत की कोई विधिवत शिक्षा किसी गुरू के पास जाकर नहीं ली । रामलीला के संगीत को जितना भी सीखा वह गुसाई दत्त तिवारी जी से ही सिखा।

रेवाधर जोशी जी के परिवार में उनसे पहले कोई भी व्यक्ति रामलीला से जुडा हुआ नही था फिर उनके बाद उनके बेटे नवीन जोशी ने सीता, बेटे ललित जोशी ने सीता और लक्ष्मण, बेटे तारा दत्त जोशी ने राम, बेटे मनोहर दत्त जोशी ने लक्ष्मण व चचेरे भाई गोपाल दत्त जोशी ने कैकई का अभिनय किया।

वर्तमान में आप ग्राम छतगुल्ला, पो0आ0 छतगुल्ला, द्वाराहाट, रानीखेत, जिला अल्मोडा ,उत्तराखण्ड में रहते है।

पूरन चन्द्र पपनै

रामलीला के प्रतिष्ठीत कलाकार पूरन चन्द्र पपनै का जन्म 10 मार्च 1966 को शहर रानीखेत में हुआ। आप स्व0 श्री कमलापति पपनै जी व माता स्व0 भगवती पपनै जी के सुपुत्र हैं। आपने इन्टर तक की पढाई की और उसके उपरान्त प्राइवेट नौकरी की।

पूरन चन्द्र पपनै जी ने 10 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय वनस्त्री का खडी बाजार रानीखेत की रामलीला में किया। उसे उपरान्त इसी रामलीला कमेटी में आपने अहिल्या, तारा, सुग्रीव, मामा मारिच, हनुमान, सुमन्त,भरत, दशरथ, विश्वामित्र, द्वारपाल, नारद का अभिनय किया।

1976 से रामलीला में अभिनय का क्रम जो शुरू हुआ वह वर्ष 2015 तक लगातार चला। खडी बाजार रानीखेत की रामलीला के अतिरिक्त पपनै जी ने रामलीला कमेटी चिलियानौला बधाण रानीखेत में भी हनुमान के पात्र का अभिनय किया। रामलीला कमेटी जालीखान में नारद का अभिनय किया। 1982 से 2015 (32 वर्ष) से लगातार हनुमान के पात्र का अभिनय कर रहे हैं।रामलीला में खेले जाने वाले लव–कुश काण्ड में महर्षि वाल्मिकी, वशिष्ट के पात्रों का भी अभिनय किया। पूरन चन्द्र पपनै निजी जीवन में भी राम भक्त हैं। रामलीला में अभिनय के अतिरिक्त आप प्रोमटिंग का कार्य भी करते हैं।

आपके गुरू व प्रेरक व्यक्ति स्व0 श्री गणेश लाल साह, स्व0 श्री उदयनाथ साह, स्व0 श्री किशोरी लाल साह, श्री भुवन चन्द्र पपनै और नवीन चन्द्र बुदलाकोटी होते थे। रामलीला की तालीम उन दिनो स्व0 श्री शेखर पाण्डे, स्व0 श्री गणेश लाल साह, स्व0 श्री उदयनाथ साह व स्व0 श्री किशोरी लाल साह देते थे। रामलीला में हारमोनियम स्व0 श्री मोहन राम, स्व0 श्री रामनाथ व आनन्द राम तथा तबला स्व0 श्री किशोरी लाल साह, स्व0 श्री उदयनाथ साह, श्री निर्मल कुमार व श्री लियाकत अली बजाते हैं। पपनै जी के परिवार में भुवन चन्द्र पपनै ने सीता,जनक, कैकई, विश्वामित्र, वाल्मिकी तथा पुत्र ने शत्रुघन और कामदेव का अभिनय करता है।

आपको रामलीला में भुवन चन्द्र पपनै का कैकई अभिनय, नवीन चन्द्र बुधलाकोटी– परशुराम, किशोरी लाल–सूर्पनखा, गिरीश चन्द्र पाण्डे– सीता का यादगार अभिनय लगा।

वर्तमान में आप मकान न)–208 सी, लोअर खडी बाजार, रानीखेत, जिला अल्मोडा (उत्तराखण्ड) में रहते है।

चक्रधर पाण्डे

रानीखेत की रामलीला में अहम् स्थान रखने कलाकार चक्रधर पाण्डे का जन्म 15 मई 1968 को रानीखेत में हुआ। आप स्व0 ज्वाला प्रसाद पाण्डे व माता श्रीमती भगवती पाण्डे के सुपुत्र हैं। चक्रधर पाण्ड जी ने 13 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय शत्रुघन का खड़ी बाजार रानीखेत की रामलीला में किया। उसके उपरान्त आपने इसी रामलीला कमेटी में अंगद , परशुराम, दशरथ, विष्णु, सूर्पनखा, लवकुश काण्ड में सीता, शत्रुघन का अभिनय किया।

आपको जितनी वाह–वाही महिला पात्रों के अभिनय के लिए मिली उतनी ही पररशुराम व दशरथ के अभिनय के लिए भी मिली। चक्रधर पाण्डे ने एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की। आप रानीखेत के प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। रामलीला में आपकी प्रेरणा के मुख्य स्त्रोत स्व. शेखर पाण्डे जी रहे । रामलीला मेंआप अपना गुरू राजेन्द्र प्रसाद जोशी,दीपक अग्रवाल, डाॅ. गिरीश वैला,संदीप गोरखा,दीप चन्द्र पाण्डे , एल. डी. पाण्डे व गिरीश चन्द्र पाण्डे है।

चक्रधर पाण्डे बताते हैं कि उनके समय में महिला पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूष कलाकार नवीन चन्द्र बुद्धलाकोटी–सूर्पनखा,आर. पी. जोशी –कैकई, दीप चन्द्र पाण्डे– कैकई, परमानन्द जी– मन्थरा का अभिनय किया करते थे और उस समय हमारे तालीम मास्टर गणेश लाल साह, स्व. उदय नाथ साह, डॉ. गिरीश वैला, नवीन चन्द्र

बुद्धलाकोटी व स्व. शेखर पाण्डे होते थे। आपके रामलीला में तबला लियाकत अली और हारमोनियम स्व. मोहन राम बजाया करते थे और एक लम्बे समय से तबला लियाकत अली बजाते हैं। चक्रधर पाण्डे जी के रामलीला में अभिनय करने से पहले उनके बड़े भाई लक्ष्मी दत्त पाण्डे परशुराम, अंगद व विष्णु, का अभिनय और दूसरे नम्बर के भाई गिरीश चन्द्र पाण्डे वशिष्ठ और विश्वामित्र का अभिनय किया करते थे। चक्रधर पाण्डे जी के अनुसार रामलीला में उनको स्व. शेखर पाण्डे जी के द्वारा लवकुश काण्ड में खेला गया सीता का अभिनय व स्व. पोखरमल अग्रवाल जी के द्वारा लवकुश काण्ड में खेला गया राम का अभिनय जीवनपर्यनत याद रहेगा।

वर्तमान में चक्रधर पाण्डे जी का पत्राचार का पता – न्यू फुलवारी गिफट सैन्टर, सदर बाजार, रानीखेत उत्तराखण्ड है।

कैलाश चन्द्र पाण्डे

रानीखेत की रामलीला में अहम् स्थान रखने कलाकार कैलाश चन्द्र पाण्डे जी ने रामलीला में छोटे बड़े लगभग सभी पात्रों का अभिनय किया। कैलाश पाण्डे जी का जन्म 25 दिसम्बर 1953 को ताड़ीखेत रानीखेत में हुआ। आप स्व0 टीकाराम पाण्डे व माता स्व0 श्रीमती लक्ष्मी देवी के सुपुत्र हैं।

कैलाश पाण्डे जी ने 10 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय शत्रुघन का खड़ी बाजार रानीखेत की रामलीला में किया। उसके उपरान्त आपने इसी रामलीला कमेटी में राम, भरत, अंगद , परशुराम, बंदीजन, सुमन्त, खर आदि का अभिनय किया नारद मोह में रावण, शिव, विष्णु व लवकुश काण्ड में राम का अभिनय किया।

कैलाश पाण्डे जी बताते हैं कि रामलीला का मंच हमारे घर के सामने बनता था इसलिए सबसे पहला गुरू मेरा वही रामलीला का मंच है।इसके अलावा रामलीला में मेरे गुरू व प्रेरणादायक व्यक्तियों में स्व0 इन्द्र लाल वर्मा, दुर्गादत्त भट्ट, स्व0 देवीदत्त मैनाली, स्व0 जगन्नाथ साह, स्व0 गणेश लाल साह, स्व0 किशोरी साह, स्व0 मोहन चन्द्र जोशी शामिल हैं।स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूष कलाकारों में स्व0 मोहन चन्द्र जोशी, स्व0 किशोरी साह, स्व. शेखर पाण्डे, नवीन चन्द्र बुद्धलाकोटी, भीम सिंह मेहरा, भुवन पपनै, जीवन सिंह मेहरा, स्व0 गोपाल राम आर्या, डॉ. गिरीश वैला व स्व0 ज्वालादत्त सती (पोस्टमैन) प्रमुख हैं। कैलाश जी बताते हैं कि हमारे समय में रामलीला

की तालीम देने वालों में स्व0 गणेशलाल साह, स्व0 उदयनाथ साह, मोहन राम, ज्वालादत्त व कई ऐसे नाम और भी हैं जो अभी याद नहीं आ रहे वहीं तबले पर किशोरी लाल, उदयनाथ साह, प्यारूभाई(बांसूरी), मोहन चन्द्र जोशी(वायलिन), अमरनाथ साह(वायलिन)में होते थे। आपने रामलीला में अभिनय के अतिरिक्त निर्देशन, प्रोमटिंग का कार्यभार भी संभाला है।

कैलाश पाण्डे जी के परिवार में चचेरे भाई रमेश चन्द्र पाण्डे जोकि सुग्रीव, जनक और कौशल्या का अभिनय करते थे। स्व0 भारत नन्द पाण्डे ने सुमन्त, अंगद, लक्ष्मण, शत्रुघन आदि का अभिनय किया। सगे बड़े भाई महेश पाण्डे ने राम दल के लगभग सभी पात्रों का अभिनय किया। भतीजे गोपाल दत्त पाण्डे ने राम व सुमन्त का अभिनय किया। बचपन से रामलीला से जुडे हाने के कारण जिन कलाकारों का अभिनय ने कैलाश पाण्डे जी को प्रभावित किया उनमें पान सिंह जी के द्वारा किया गया रावण का अभिनय, दीवान सिंह रावत के द्वारा किया गया राम का अभिनय, भीम सिंह मेहरा –लक्ष्मण और सूर्पनखा, रूद्रदत्त पाण्डे–अंगद, चन्दन सिंह मेहरा–परशुराम, दशरथ और अंगद, पूरन मेहरा–राम, देवीदत्त मैनाली–सुमन्त और अंगद, गणेश दत्त जोशी–मेघनाद, नवीन चन्द्र बुद्धलाकोटी–सूर्पनखा और परशुराम, भोला दत्त काण्डपाल–जनक के अभिनय को कभी नहीं भुला जा सकता।

वर्तमान में कैलाश पाण्डे जी का पत्राचार का पता – 151, खड़ी बाजार, रानीखेत उत्तराखण्ड है।

मनोज सती

रानीखेत की रामलीला में अहम् स्थान रखने कलाकार मनोज सती जी का जन्म 3 सितम्बर 1984 को खडीबाजार रानीखेत में हुआ। आप स्व0 जगदीश चन्द्र सती व माता श्रीमती पुष्पा सती के सुपुत्र हैं। मनोज सती जी ने 9 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय बन्दर का खड़ी बाजार रानीखेत की रामलीला में किया। उसके उपरान्त आपने इसी रामलीला कमेटी मे दशरथ, खरदूषण, सूर्पनखा, विश्वामित्र, वशिष्ठ, मंथरा, मंदोदरी, त्रिजटा, सुमित्रा, अक्षय कुमार, ताडिका,सुबाहू, मारिच, विभिषण, बंदीजन,व नारद मोह में विष्णु का अभिनय किया।

मनोज सती बताते हैं कि 1993 में रामलीला बंद हो गई थी जिसे पुनः 7 वर्ष बाद उन्होने अपने साथी विनीत चौसियॉ के साथ दुबारा शुरू किया जिसमें उनके सहयोगी रहे हेमन्त सती, चेतन सती, गौरव मैनाली और सौरभ मैनाली । इस रामलीला की शुरूआत बच्चों की रामलीला से हुई श्रीधरगंज में प्रारम्भ हुई इस रामलीला का पूरा श्रेय स्व0 चन्द्रा मेहरा को जाता है। मनोज सती रामलीला में अपना गुरू मनोज खुल्बे को मानते हैं और प्रेरणा स्त्रोत एल0एम0 चन्द्रा है। मनोज सती ने रामलीला में अभिनय के अतिरिक्त निर्देशन, स्टेज निर्माण व सन 2000 में रामलीला कमेटी के अध्यक्ष रहे। मनोज सती बताते हैं कि उनके समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूषो में हर्षवर्धन– सीता, परमानन्द शायर–कैकई, मंथरा और मंदादरी, धनीलाल वर्मा–कैकई,

राजेन्द्र प्रसाद जोशी–कैकई, रविन्द्र बिष्ट– सीता, अमित तिवारी –सीता प्रमुख हैं। उन दिनों खडी बाजार की रामलीला में तालिम प्रमोद चन्द्र काण्डपाल दिया करते थे। रामलीला में हारमोनियम स्व0 भण्डारी जी (चिन्यानौला वाले) व स्व0 मोहन राम बजाया करते थे तथा तबले पर लियाकत अली और दुर्गाराम बजाया करते थे।

मनोज सती आज भी रामलीला के उन कलाकारों को याद करते हैं जिन्होने यादगार अभिनय किया उनमें रावण के अभिनय में राजेन्द्र सिंह बिष्ट उर्फ मुन्ना रावण, विभिषण के अभिनय में मोनिश भगत, सीता के अभिनय में हर्षवर्धन, कैकई के अभिनय में मोनिका जोशी, रावण के अभिनय में हेमन्त सती, लक्ष्मण के अभिनय में भुवन नेगी, रावण के अभिनय में दीपक अग्रवाल, परशुराम अंगद सूर्पनखा और लवकुश काण्ड में सीता के अभिनय में चक्रधर पाण्डे, दशरथ के अभिनय में नवीन बिष्ट, कैकई के अभिनय में राजेन्द्र प्रसाद जोशी, कैकई के अभिनय में धनीलाल वर्मा, सूर्पनखा के अभिनय में योगेश शर्मा, सुक्षेन वैध और लवकुश काण्ड में धोबन के अभिनय में एल0एम0 चन्द्रा, नारद के अभिनय में पीयुष साह, कुम्भकरण के अभिनय में अजय साह, जोकर के अभिनय में कैलाश जाटव, सीता के अभिनय में आशुतोष पाण्डे, सूर्पनखा के अभिनय में भावेश पाण्डे, सूर्पनखा के अभिनय में योगेश शर्मा, शबरी के अभिनय में मनोज जोशी , सूर्पनखा के अभिनय में हरीश टम्टा, कैकई और सूर्पनखा के अभिनय में प्रमोद आर्या, कैकई और लवकुश काण्ड में सीता के अभिनय में दीप चन्द्र पाण्डे शामिल हैं।

वर्तमान में मनोज सती जी का पत्राचार का पता – 429, खड़ी बाजार, रानीखेत उत्तराखण्ड है।

चन्द्र शेखर पाण्डे

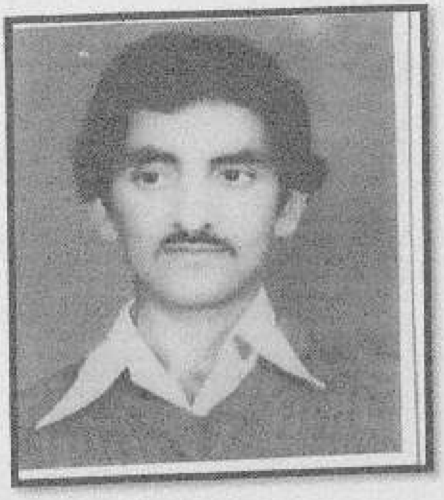

रानीखेत की रामलीला के स्तम्भ चन्द्र शेखर पाण्डे रामलीला के एक मझे हुए कलाकार होने के साथ ही साथ रामलीला के तालीम मास्टर भी रहे उन्होने कई कलाकार तैयार किये जिन्होने आगे के वर्षो में रामलीला को नए आयाम दिए। इस महान कलाकार चन्द्र शेखर पाण्डे का जन्म 12 फरवरी 1950 को रानीखेत मे हुआ और मृत्यु मात्र 37 वर्ष की आयु में सन् 1987 में हुई। आप स्व0 आनन्द बल्लभ पाण्डे व माता स्व0 श्रीमती रेवती पाण्डे के सुपुत्र थे। 12 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की, पहला अभिनय खडी बाजार की रामलीला में होने वाले लवकुश काण्ड में कुश का किया। उसके उपरान्त इसी रामलीला कमेटी के तहत होने वाली रामलीला में सीता, जनक, कैकई का कुशल अभिनय किया। रामलीला कमेटी जालली में सुमन्त का अभिनय किया। अभिनय के अतिरिक्त रामलीला में तालीम मास्टर, निर्देशन, मेकअप व प्रोमटर के दायित्व को भी बड़ी कुशलता से निभाया।

इनके भाई दीप पाण्डे बताते हैं कि चन्द्र शेखर पाण्डे जी के समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में स्व0 गोपाल राम आर्या, नवीन चन्द्र बुद्धलाकोटी, भुवन पपनै, स्व0 किशोरी साह, जीवन सिंह मेहरा, डॉ. गिरीश वैला प्रमुख थे। रामलीला की तालीम देने वालों में स्व0 मोहन राम, स्व0 गणेशलाल साह, स्व0

उदयनाथ साह तथा तबले पर स्व0 गदालु राम, स्व0 किशोरी लाल, उदयनाथ साह, प्यारे लाल(बांसूरी) बजाते थे।

चन्द्र शेखर पाण्डे जी के परिवार में उनके छोटे भाई दीप पाण्डे– बंदीजन सुमन्त कैकई, बेटा योगेश पाण्डे– विश्वामित्र के अभिनय के माध्यम से जुडे।

वर्तमान में चन्द्र शेखर पाण्डे जी के परिवार का पत्राचार का पता – आनन्द जनरल स्टोर, सदर बाजार, रानीखेत, उत्तराखण्ड है।

दीप चन्द्र पाण्डे

रानीखेत की रामलीला के कलाकार दीप चन्द्र पाण्डे का जन्म 12 दिसम्बर 1964 को रानीखेत मे हुआ। आप स्व0 आनन्द बल्लभ पाण्डे व माता स्व0 श्रीमती रेवती पाण्डे के सुपुत्र हैं। 14 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की, पहला अभिनय खडी बाजार की रामलीला में शत्रुघन का किया। उसके उपरान्त इसी रामलीला में बंदीजन, सुमन्त, कैकई और लवकुश काण्ड में सीता व दुर्वाशा ऋर्षि तथा नारद मोह में नारद का अभिनय किया। आपने स्नातक की शिक्षा प्राप्त की और विधुत विभाग में कार्यरत हैं। रामलीला में आपके प्रेरणा व गुरू आपके बड़े भाई स्व0 चन्द्र शेखर पाण्डे और राजेन्द्र प्रसाद जोशी रहे।

दीप पाण्डे बताते हैं कि उनके समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में राजेन्द्र प्रसाद जोशी, चक्रधर पाण्डे, अमित तिवारी, रविन्द्र बिष्ट, भावेश पाण्डे, परमानन्द, भुवन पपनै, धनीलाल वर्मा,गौरव साह, गौरव नेगी, कैलाश भगत शामिल हैं। रामलीला की तालीम स्व0 मोहन राम, स्व0 रामनाथ, आनन्द राम, संदीप गोरखा दिया करते थे। तबला दुर्गा राम, गुसाई राम, लियाकत अली व प्यारे लाल(बांसूरी) बजाते थे।

दीप पाण्डे जी बताते हैं कि उनके परिवार में उनके बड़े भाई स्व0चन्द्र शेखर पाण्डे– सीता कैकई जनक आदि, भतीजा योगेश पाण्डे– विश्वामित्र, बड़े भाई लक्ष्मी दत्त

पाण्डे–अंगद और परशुराम, छोटा भाई गिरीश पाण्डे– विश्वामित्र वशिष्ठ और दुर्वाशा, छोटा भाई चक्रधर पाण्डे–दशरथ अंगद परशुराम सूर्पनखा आदि अभिनय से जुड़े। इतने वर्षो तक रामलीला के मंचन से जुडे दीप पाण्डे को लवकुश काण्ड में चन्द्र शेखर पाण्डे के द्वारा किया गया सीता का अभिनय सबसे अच्छा लगा जो आज भीं उनको अभिनय की प्रेरणा का काम करता है।

वर्तमान में दीप चन्द्र पाण्डे जीं का पत्राचार का पता – आनन्द जनरल स्टोर, सदर बाजार, रानीखेत, उत्तराखण्ड है।

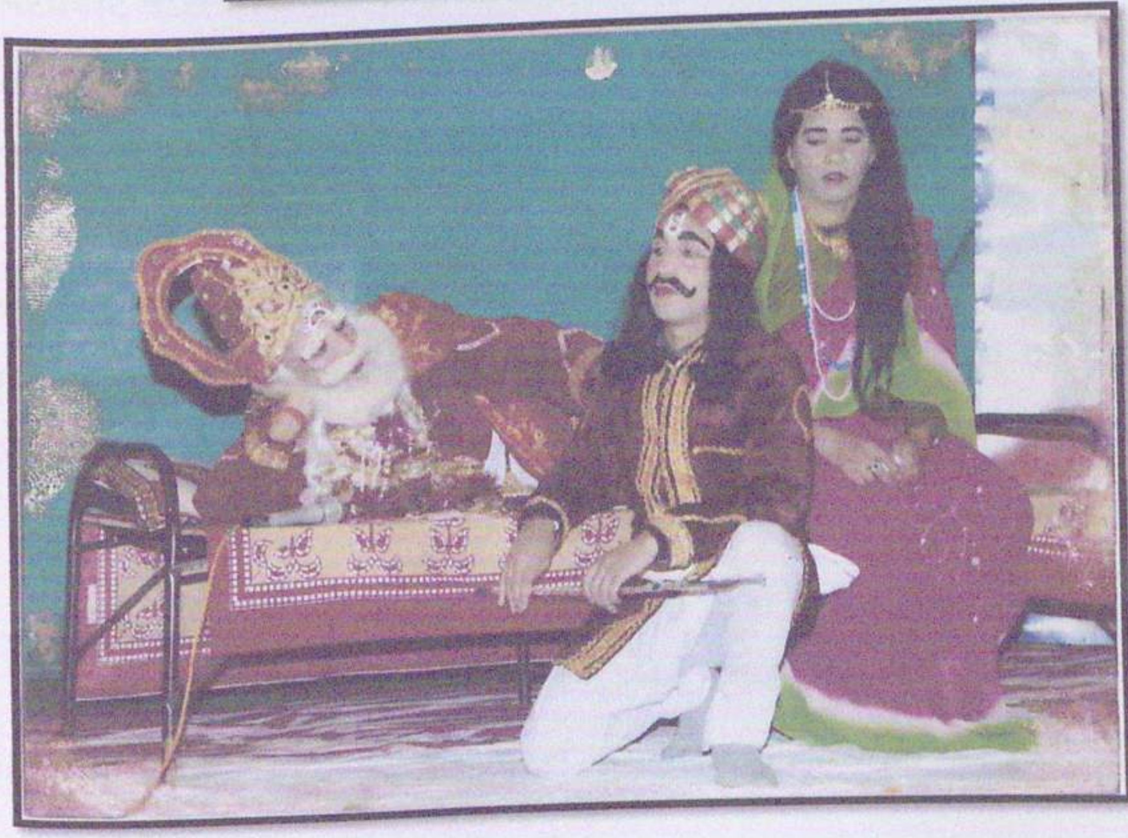

परमवीर सिंह मेहरा

रानीखेत की रामलीला के कलाकार परमवीर सिंह मेहरा का जन्म 26 जनवरी 1990 को रानीखेत मे हुआ। आप श्री हरबंश मेहरा व माता श्रीमती देवकी मेहरा के सुपुत्र हैं। 10 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की, पहला अभिनय श्रीधरगंज रानीखेत की रामलीला में राम का किया। उसके उपरान्त खड़ी बाजार की रामलीला में राम, लक्ष्मण, परशुराम, अंगद, दशरथ का अभिनय किया। परमवीर सिंह मेहरा ने संगीत की विधिवत शिक्षा अपनी बड़ी बहन स्व0 चन्द्रा मेहरा से प्राप्त की। जोकि संगीत की शिक्षिका थीं।

परमवीर ने स्नातक की शिक्षा प्राप्त की और अपना व्यवसाय करते हैं। रामलीला में इनकी प्रेरणा व गुरू बड़ी बहन स्व0 चन्द्रा मेहरा और पिता हरबंश मेहरा के अतिरिक्त चक्रधर पाण्डे, हरीश टम्टा, पूरन पपनै, मोहन राम रहे।

परमवीर बताते हैं कि उनके समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में चक्रधर पाण्डे–सूर्पनखा के अभिनय में, दीप चन्द्र पाण्डे– कैकई, राजेन्द्र प्रसाद जोशी– कैकई, दीपक साह– कैकई, मंथरा, शबरी, मन्दोदरी, वनस्त्री का अभिनय, अभिषेक मेहरा, रविन्द्र बिष्ट, गौरव साह, अमित तिवारी–सीता का अभिनय किया करते थे। रामलीला की तालीम स्व0 मोहन राम, हरबंश मेहरा, हरीश टम्टा, चक्रधर पाण्डे, पूरन पपनै, राजेन्द्र जोशी और दीप चन्द्र पाण्डे दिया करते थे।

परमवीर मेहरा जी के परिवार में उनसे पहले उनकी बड़ी बहन चन्द्रा मेहरा, पिता हरबंश मेहरा व छोटा भाई परमजीत मेहरा रामलीला में अभिनय व निर्देशन से जुड़े।

परमवीर मेहरा को चक्रधर पाण्डे के द्वारा खेला गया सूर्पनखा का अभिनय और हरीश टम्टा के द्वारा खेला गया परशुराम का अभिनय सबसे अच्छा लगा जो आज भी उनके मानस पटल पर अंकित है।

वर्तमान में परमवीर मेहरा जी का पत्राचार का पता – दुर्गा जनरल स्टोर, सदर बाजार, रानीखेत, उत्तराखण्ड है।

परमजीत सिंह मेहरा

रानीखेत की रामलीला के कलाकार परमजीत सिंह मेहरा का जन्म 20 जनवरी 1990 को रानीखेत मे हुआ। आप श्री हरबंश मेहरा व माता श्रीमती देवकी मेहरा के सुपुत्र हैं। 10 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की, पहला अभिनय श्रीधरगंज रानीखेत की रामलीला में लक्ष्मण का किया। उसके उपरान्त खड़ी बाजार की रामलीला में राम, लक्ष्मण, भरत, जनक, हनुमान, अंगद आदि का अभिनय किया। इनको सबसे ज्यादा ख्याति रानीखेत में लक्ष्मण के अभिनय से मिली इनका अभिनय लोगो को इतना पसन्द आया कि लोगो ने इन्हे लक्ष्मण के नाम से ही बुलाना शुरु कर दिया।

परमजीत सिंह मेहरा ने संगीत की विधिवत शिक्षा अपनी बड़ी बहन स्व0 चन्द्रा मेहरा से प्राप्त की। जोकि संगीत की शिक्षिका थीं और प्रयाग संगीत समिति से गायन में प्रभाकर की उपाधी प्राप्त की।

परमवीर ने स्नातकोत्तर तक की शिक्षा प्राप्त की और अपना व्यवसाय करते हैं। रामलीला में इनकी प्रेरणा व गुरू बड़ी बहन स्व0 चन्द्रा मेहरा और पिता हरबंश मेहरा के अतिरिक्त चक्रधर पाण्डे, लियाकत अली, हेमन्त मेहरा व डॉ0 गिरीश वैला है।

परमजीत बताते हैं कि उनके समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में चक्रधर पाण्डे, रविन्द्र बिष्ट,अभिषेक मेहरा, भावेश पाण्डे, गौरव साह,

गौरव नेगी, धनी लाल वर्मा शामिल है। रामलीला की तालीम हरबंश मेहरा, स्व0 मोहन राम, आनन्द राम, लियाकत अली, मुन्ना वाल्मीकि और दीप चन्द्र पाण्डे दिया करते थे।

परमजीत मेहरा जी के परिवार में उनसे पहले उनकी बड़ी बहन चन्द्रा मेहरा, पिता हरबंश मेहरा व बड़ा भाई परमवीर मेहरा रामलीला से जुड़े रहे। परमजीत मेहरा को हरीश टम्टा के द्वारा खेला गया परशुराम का अभिनय, चक्रधर पाण्डे के द्वारा खेला गया सूर्पनखा का अभिनय और मनोज अग्रवाल के द्वारा खेला गया रावण का अभिनय तथा भुवन पपनै के द्वारा खेला गया दशरथ का अभिनय आज भी याद है।

वर्तमान में परमजीत मेहरा जी का पत्राचार का पता – दुर्गा जनरल स्टोर, सदर बाजार, रानीखेत, उत्तराखण्ड है।

लक्ष्मी दत्त पाण्डे

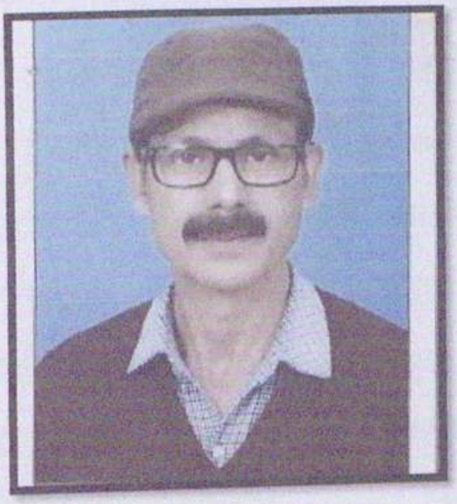

रानीखेत की रामलीला प्रतिष्ठित कलाकार लक्ष्मी दत्त पाण्डे का जन्म 2 मई 1958 को ग्राम भट्कोट द्वाराहाट में हुआ। आप स्व0 ज्वाला प्रसाद पाण्डे व माता स्व0 श्रीमती इन्दिरा पाण्डे के सुपुत्र हैं।

लक्ष्मी दत्त पाण्डे जी ने 30 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय नारद मोह में विष्णु का खड़ी बाजार रानीखेत की रामलीला में किया। उसके उपरान्त आपने इसी रामलीला कमेटी में दूषण, अंगद , परशुराम तथा गन्याधुली की रामलीला में खर का अभिनय किया। इनके द्वारा खेले गए परशुराम के अभिनय को दर्शको ने बहुत पसन्द किया।

लक्ष्मी दत्त पाण्डे जी ने एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की। आप रानीखेत के प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। रामलीला में आपकी प्रेरणा के मुख्य स्त्रोत व गुरु स्व. शेखर पाण्डे , स्व. गणेश साह व नवीन चन्द्र बुद्धलाकोटी रहे । लक्ष्मी दत्त पाण्डे बताते हैं कि उनके समय में महिला पात्रों का अभिनय करने वाले पुरुष कलाकारों में जीवन मेहरा–सीता, शेखर पाण्डे–सीता, गोपाल बडई–शबरी, अहिल्या, सुलोचना और मंथरा शामिल हैं। उस समय हमारे तालीम मास्टर गणेश लाल साह, स्व. उदय नाथ साह, स्व. शेखर पाण्डे, नवीन चन्द्र बुद्धलाकोटी तथा रामलीला में तबला किशोरी लाल बजाते थे।

लक्ष्मी दत्त पाण्डे जी के रामलीला में अभिनय करने से पहले उनके चचेरे बड़े भाई शेखर पाण्डे सीता का अभिनय व निर्देशन और छोटे भाई गिरीश चन्द्र पाण्डे वशिष्ठ और

विश्वामित्र का अभिनय, दूसरे नम्बर के भाई चक्रधर पाण्डे परशुराम, सूर्पनखा आदि पात्रों का अभिनय व तीसरे नम्बर के भाई हरीश पाण्डे अभिनय से जुड़े।

लक्ष्मी दत्त पाण्डे के अनुसार रामलीला में उनको कई लोगो के अभिनय अच्छे लगे जिनको वह यहाँ पर याद करना चाहते हैं। उनमें सर्वप्रथम स्व0 चन्द्रशेखर पाण्डे जी के द्वारा लवकुश काण्ड में खेला गया सीता का अभिनय व स्व0 पोखरमल अग्रवाल जी के द्वारा लवकुश काण्ड में खेला गया राम का अभिनय, जीवन मेहरा के द्वारा खेला गया सीता का अभिनय, दिवान सिंह के द्वारा खेला गया राम का अभिनय, भीम सिंह के द्वारा खेला गया लक्ष्मण का अभिनय, देवी दत्त मैनाली के द्वारा खेला गया लक्ष्मण व सीता का अभिनय, दिवान सिंह (चिन्यानौला वाले) के द्वारा खेला गया रावण का अभिनय, पूरन सिंह मेहरा के द्वारा खेला गया राम का अभिनय, भगत ड्राईवर के द्वारा खेला गया दशरथ और हनुमान का अभिनय, मोहन चन्द्र जोशी व किशोरी लाल का लवकुश काण्ड में खेला गया धोबन का अभिनय, गणेश चन्द्र जोशी के द्वारा खेला गया मेघनाद का अभिनय, चन्द्र लाल साह (चन्ना दाज्यू) के द्वारा खेला गया नारद का अभिनय, तथा रामलीला के दो अहम् व्यक्ति जिन्होने कलाकारो का एक लम्बे समय तक मेकअप किया उनमें भुवन साह और मोहन चौधरी शामिल हैं।

वर्तमान में लक्ष्मी दत्त पाण्डे जी का पत्राचार का पता – 486–ए , सदर बाजार, रानीखेत उत्तराखण्ड है।

राजेन्द्र प्रसाद जोशी

रामलीला के प्रतिष्ठीत कलाकार राजेन्द्र प्रसाद जोशी का जन्म 8 जुलाई 1971 को शहर रानीखेत में हुआ। आप स्व0 श्री पीताम्बर दत्त जोशी जी व माता देवकी जोशी जी के सुपुत्र हैं। आपने स्नातक तक की पढाई की और उसके उपरान्त आप रानीखेत में अपना स्वंय का रोजगार करते हैं।

राजेन्द्र प्रसाद जोशी जी ने 19 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय विभिषण का खडी बाजार रानीखेत की रामलीला में किया। उसके उपरान्त इसी रामलीला कमेटी में आपने कैकई, जनक, बन्दीजन, ताडिका, खरदूषण, अंगद, लवकुश काण्ड में भरत, सीता, वाल्मिकी, विष्णु आदि का अभिनय किया।

राजेन्द्र प्रसाद जोशी जी रामलीला के संदर्भ में गुरू व प्रेरक व्यक्तियों में जिन लोगो को मानते है उनमे स्व0 श्री देवी दत्त मैनाली, लाला पोखरमल व शेखर चन्द्र पाण्डे जी प्रमुख हैं जिनके अभिनय को देखकर रामलीला की ओर रूझान हुआ। सर्वप्रथम स्टेज पर आने के लिए सतीश तिवारी जी ने हौसला दिया। राजेन्द्र प्रसाद जोशी ने रामलीला में अभिनय के अतिरिक्त निर्देशन, मेकअप और प्रोमटिंग का कार्य भी किया।

राजेन्द्र प्रसाद जोशी बताते हैं कि उनके समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूषो में सुन्दर सिंह– सीता, भुवन पपनै और धनी लाल–कैकई, गोपाल राम–मंथरा और सुलोचना,रतन सिंह–मंथरा और मंदोदरी, भावेश पाण्डे गौरव सिंह, प्रमोद कुमार,चक्रधर पाण्डे और लीलाधर जोशी –सूर्पनखा, दीप पाण्डे– कैकई और सीता, गौरव साह– सीता,

कैलाश भगत–मोहनी, उमेश तिवारी–सीता का अभिनय किया करते थे। उन दिनों खडी बाजार की रामलीला में समय समय पर अलग अलग लोगो ने तालिम दी उनमें पीरू काण्डपाल, किरन साह, गोपू भाई, गिरीश वैला, मोहन चौधरी, गिरीश भटट्, गणेश साह, नवीन बुधलाकोटी, संदीप गोरखा, चक्रधर पाण्डे, दीप पाण्डे, पूरन पाण्डे, हरीश अम्टा, रमेश पाण्डे, हरबंश सिंह मेहरा शामिल हैं। रामलीला में हारमोनियम स्व0 मोहन राम, आनन्द राम, रामनाथ, मुन्ना भाई, चन्दन सिंह बजाया करते थे तथा तबले पर किशोरी लाल, लियाकत अली और दुर्गाराम व निर्मल होते थे वहीं बासूरी में प्यारे लाल समा बांध दिया करते थे।

राजेन्द्र प्रसाद जोशी के परिवार में चाचा मोहन चन्द्र जोशी – रावण के पात्र का अभिनय किया करते थे उन्होने पहले गॉव पनघट की रामलीला में अभिनय किया उसके उपरान्त दिल्ली मयूर विहार की रामलीला कमेटी के अध्यक्ष हैं। भाई कमलेश चन्द्र जोशी–कामदेव, नाना उमाशंकर जोशी–रामलीला मे अभिनय व निर्देशन ग्राम मनान की रामलीला में, भाई मनोज जोशी–राम,सुमन्त,सुग्रीव व जनक का अभिनय किया। आपको रामलीला में स्व0 शेखर पाण्डे जी द्वारा लवकुश काण्ड में सीता का यादगार अभिनय और मोती सिंह द्वारा खर–दूषण का अभिनय और वह दृश्य जिसमें उलटी चारपाई में उनका जलूस (मशालों सहित) कभी नहीं भूला जा सकता।

वर्तमान में राजेन्द्र प्रसाद जोशी जी का पत्राचार का पता – प्रेम रैस्ट्रोरेन्ट, सदर बाजार, रानीखेत उत्तराखण्ड है।

विनोद चन्द्र तिवारी

रानीखेत की रामलीला के कलाकार विनोद चन्द्र तिवारी का जन्म 10 जनवरी 1973 को गंम डढूली रानीखेत मे हुआ। आप स्व0 श्री सी0डी0 तिवारी व माता स्व0 श्रीमती नीमा तिवारी के सुपुत्र हैं। 12 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की, पहला अभिनय रामलीला कमेटी ग्राम डढूली में शत्रुघन का किया। उसके उपरान्त ग्राम डढूली में शत्रुघन के अभिनय के अगले साल भरत का अभिनय किया उसके उपरान्त खड़ी बाजार की रामलीला में विभिषण और जनक का अभिनय किया। जनक के पात्र से आपकी कलाकार के रूप में प्रतिष्ठा बडी।

विनोद चन्द्र तिवारी ने स्नातकोत्तर तक की शिक्षा प्राप्त की और अपना व्यवसाय करते हैं। तिवारी जी बताते हैं श्रीधरगंज रानीखेत के छोटे बच्चो के द्वारा रामलीला का मंचन अपने घर के आगे करना रामलीला की प्रेरणा बनी।

विनोद तिवारी बताते हैं कि उनके समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में दीप चन्द्र पाण्डे, चक्रधर पाण्डे, राजेन्द्र जोशी, गिरीश वैला, धनी लाल वर्मा, भुवन पपनै,अमित तिवारी शामिल है। रामलीला की तालीम स्व0 मोहन राम, आनन्द राम, हरबंश मेहरा, गिरीश वैला, चक्रधर पाण्डे और दीप चन्द्र पाण्डे दिया करते थे। तबले पर लियाकत अली, प्यारेलाल, मोहन राम व आनन्द राम होते थे।

विनोद तिवारी जी के परिवार में उनसे पहले उनके बड़े भाई सतीश चन्द्र तिवारी– लक्ष्मण, भतीजा अमित तिवारी– भरत सीता और परशुराम, पुत्र अभिषेक तिवारी– शत्रुघन, भरत, सीता व लव – कुश के अभिनय से जुडे।

विनोद तिवारी को स्व0 कैलाश चन्द्र तिवारी के द्वारा खेला गया रावण का अभिनय, चक्रधर पाण्डे के द्वारा खेला गया सूर्पनखा का अभिनय, अमित तिवारी के द्वारा खेला गया सीता का अभिनय, अभिषेक तिवारी– शत्रुघन, हेम चन्द्र चौधरी के द्वारा लव कुश काण्ड में राम का अभिनय,राजेन्द्र प्रसाद के द्वारा खेला गया कैकई का अभिनय, यतीश रौतेला के द्वारा खेला गया मेघनाद का अभिनय हमेशा याद रहेगा।

वर्तमान में विनोद तिवारी जी का पत्राचार का पता – अमित जनरल स्टोर, सदर बाजार, रानीखेत, उत्तराखण्ड है।

पीयूष साह

रानीखेत की रामलीला के कलाकार पीयूष साह का जन्म 10 नवम्बर 1991 को रानीखेत मे हुआ। आप स्व0 श्री दिनेश चन्द्र साह व माता श्रीमती लीला साह के सुपुत्र हैं। 17 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की, पहला अभिनय खड़ी बाजार रामलीला कमेटी रानीखेत में नटी का किया। उसके उपरान्त इसी रामलीला में विभिषण, अक्षय कुमार, सुबाहु, मेघनाद, रावण और नारदमोह में नारद का अभिनय किया। अक्षय कुमार के पात्र से आपकी कलाकार के रूप में प्रतिष्ठा बडी।

पीयूष साह ने स्नातकोत्तर तक की शिक्षा प्राप्त की और नौकरी करते हैं। पीयूष बताते हैं कि रामलीला के संदर्थ में उनके प्रेरणा स्त्रोत व गुरू तुल्य मनोज खुल्बे और चक्रधर पाण्डे है।हमारे समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में गौरव साह–सीता, गौरव नेगी–सूर्पनखा, मनोज जोशी–सीता, चक्रधर पाण्डे–सूर्पनखा, हिमांशु रावत–उर्वशी, विवेक शर्मा–मोहनी, परमानन्द शायर–मंदोदरी, राजेन्द्र जोशी–कैकई, अखिल साह–सीता शामिल है। रामलीला की तालीम मुन्ना भाई, आनन्द राम और लियाकत अली दिया करते थे। हारमोनियम में मुन्ना भाई, आनन्द राम तबले पर लियाकत अली होते थे।

पीयूष साह को मनोज खुल्बे के द्वारा खेला गया नारद का अभिनय और चक्रधर पाण्डे के द्वारा खेला गया सूर्पनखा, परशुराम, अंगद का अभिनय का अभिनय अविस्मरणीय लगा।

वर्तमान में पीयूष साह का पत्राचार का पता – 204–ए, मथुरा निवास, खड़ी बाजार, रानीखेत, उत्तराखण्ड है।

अजय साह

रानीखेत की रामलीला के कलाकार अजय साह का जन्म 25 जून 1963 को रानीखेत मे हुआ। आप स्व0 श्री द्वारका साह व माता स्व0 श्रीमती राजेश्वरी साह के सुपुत्र हैं। 27 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की, पहला अभिनय खड़ी बाजार रामलीला कमेटी रानीखेत में खर–दूषण का किया। उसके उपरान्त इसी रामलीला में शुरूआत से अब तक प्रत्येक वर्ष खर–दूषण का अभिनय किया साथ ही साथ कुम्भकरण का भी अभिनय प्रत्येक वर्ष वर्तमान तक किया। इसके अतिरिक्त लवकुश काण्ड में भरत का अभिनय किया।

अजय साह जी ने इन्टर तक की शिक्षा प्राप्त की और दुकान करते हैं। अजय साह बताते हैं कि रामलीला के संदर्थ में उनके प्रेरणा स्त्रोत व गुरू स्व0 गणेश लाल साह, स्व0 उदय नाथ साह, स्व0 किशोरी लाल साह, स्व0 देवी दत्त मैनाली जी हैं। हमारे समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में शेखर पाण्डे, गिरीश पाण्डे, गिरीश वैला, चक्रधर पाण्डे, भुवन चन्द्र पपनै शामिल है। रामलीला की तालीम स्व0 गणेश लाल साह, स्व0 उदय नाथ साह, स्व0 किशोरी लाल साह, स्व0 शेखर पाण्डे, संदीप गोरखा मुन्ना भाई दिया करते थे। हारमोनियम में गणेश लाल साह, मुन्ना भाई, संदीप गोरखा तबले पर स्व0 किशोरी लाल साह और लियाकत अली होते थे।

अजय साह जी के परिवार में उनके पिता रामलीला के प्रबन्धन व पुत्र प्रभात साह राम व सीता के अभिनय से रामलीला से जुडे हैं। अजय साह बताते हैं कि स्व0 शेखर पाण्डे के द्वारा खेला गया सीता का अभिनय और पूरन पपनै के द्वारा खेला गया हनुमान का अभिनय, प्रभात साह के द्वारा खेला गया सीता का अभिनय, अखिल साह के द्वारा खेला गया लक्ष्मण का अभिनय अविस्मरणीय लगा।

वर्तमान में अजय साह का पत्राचार का पता – प्रेम वाटिका, सुदामा पुरी, रानीखेत, उत्तराखण्ड है।

प्रभात साह

रानीखेत की रामलीला के कलाकार प्रभात साह का जन्म 8 फरवरी 1997 को रानीखेत मे हुआ। आप श्री अजय साह व माता श्रीमती निर्मला साह के सुपुत्र हैं। 9 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की, पहला अभिनय खड़ी बाजार रामलीला कमेटी रानीखेत में बन्दर व नर्तकी का किया। उसके उपरान्त इसी रामलीला में शुरूआत से अब तक सीता और फिर राम का अभिनय किया।

प्रभात साह स्नात्तक की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। वह बताते हैं कि रामलीला के संदर्भ में उनके प्रेरणा स्त्रोत व गुरू सर्वप्रथम उनके पिता अजय साह , लियाकत अली और राजेन्द्र जोशी हैं। हमारे समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में चक्रधर पाण्डे–सूर्पनखा, राजेन्द्र जोशी शामिल है। रामलीला की तालीम राजेन्द्र जोशी जी ने दी।

प्रभात साह के परिवार में उनके पिता अजय साह– खर–दूषण, त्रिजटा, ताड़का कुम्भकरण आदि का अभिनय और रामलीला कमेटी के अध्यक्ष रहे। प्रभात साह बताते हैं कि पूरन पपनै के द्वारा खेला गया हनुमान का अभिनय, अजय साह के द्वारा खेला गया कुम्भकरण का अभिनय अविस्मरणीय लगा।

वर्तमान में प्रभात साह का पत्राचार का पता – प्रेम वाटिका, सुदामा पुरी, रानीखेत, उत्तराखण्ड है।

किरन लाल साह

रानीखेत की रामलीला के कलाकार प्रभात साह का जन्म 12 मार्च 1953 को रानीखेत मे हुआ। आप स्व0श्री चिरंजीलाल साह व माता स्व0 श्रीमती माधवी साह के सुपुत्र हैं। 1962 में 9 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की, पहला अभिनय खड़ी बाजार रामलीला कमेटी रानीखेत में सीता सखी का किया। उसके उपरान्त इसी रामलीला में लवकुश काण्ड में दुर्मुख, लक्षमण और राम का अभिनय किया।

किरन लाल साह स्नात्तक की शिक्षा प्राप्त की और सरकारी सेवा से सेवानृवित हैं। वह बताते हैं कि रामलीला के संदर्भ में उनके प्रेरणा स्त्रोत व गुरू स्व0 पोखरमल अग्रवाल,स्व0 देवीदत्त मैनाली व किशोरी लाल जी हैं। हमारे समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में स्व0 शेखर पाण्डे,–सीता, स्व0 किशोरी लाल जी –धोबन, स्व0 मोहन चन्द्र जोशी– उर्वशी, शामिल थे। रामलीला की तालीम स्व0 गणेश लाल साह, स्व0 किशोरी लाल जी स्व0 उदयनाथ साह और मोहन चन्द्र जोशी जी ने दी। रामलीला में अभिनय के अतिरिक्त साह जी ने प्रोमटिंग का कार्यभार भी सम्भाला। साह जी को स्व0 पोखरमल अग्रवाल के द्वारा खेला गया राम का अभिनय, स्व0 देवीदत्त मैनाली के द्वारा खेला गया लक्ष्मण का अभिनय, स्व0 पान सिंह के द्वारा खेला गया रावण का अभिनय आज भी याद हैं।

वर्तमान में किरन लाल साह का पत्राचार का पता – 247 ए, जरूरी बाजार, रानीखेत, उत्तराखण्ड है।

हेम चौधरी

रानीखेत की रामलीला के कलाकार हेम चौधरी का जन्म 9 अप्रेल 1941 को रानीखेत मे हुआ। आप स्व0श्री जगन्नाथ चौधरी व माता स्व0 श्रीमती चन्द्रकला चौधरी के सुपुत्र हैं। 1962 में लगभग 13–14 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की, पहला अभिनय खड़ी बाजार रामलीला कमेटी रानीखेत में होने वाले नारद मोह में विष्णु का किया। इस अभिनय को आपके द्वारा 10 वर्षो तक किया गया। उसके बाद के वर्षो में लवकुश काण्ड में राम का अभिनय लम्बे अर्से तक किया।

हेम चौधरी जी ने आगरा विश्वविद्यालय से स्नात्तक की शिक्षा प्राप्त की और स्वयं का कारोबार किया। रामलीला में अभिनय के अतिरिक्त आपने निर्देशन व प्रोमटिंग का कार्यभार भी संभाला। वह बताते हैं कि रामलीला की तालीम स्व0 गणेश लाल साह, स्व0 उदयनाथ साह और स्व0 के.एल.जोशी देते थे।

रामलीला में गणेश लाल साह हारमोनियम, उदयनाथ साह तबला, के.एल. जोशी तबला बाजाया करते थे। हेम चौधरी जी के पिता जगन्नाथ चौधरी रामलीला कमेटी के प्रबन्धक रहे उन्ही की प्रेरणा से रामलीला की ओर आकर्षण बड़ा।

वर्तमान में हेम चौधरी जी का पत्राचार का पता –823 मनलोक भवन, नन्दा देवी मार्ग, जरूरी बाजार, रानीखेत, उत्तराखण्ड है।

अनिल सनवाल

रामलीला के प्रतिष्ठीत कलाकार, कुशल तालिम मास्टर , निर्देशक व होली गायिकी के सुपरिचित हस्ताक्षर अनिल सनवाल का जन्म 10 सितम्बर 1968 को नन्दादेवी अल्मोडा, उत्तराखण्ड में हुआ। आप रामलीला के प्रतिष्ठीत कलाकार पिता जगन्नाथ सनवाल व माता प्रेमा सनवाल के सुपुत्र हैं। आपके दादा मोतीराम सनवाल की गिनती शहर के अच्छे सितार वादको में होती थी वह बद्रेश्वर अल्मोडा में खेली जाने की रामलीला में सितार भी बजाया करते थे। दादा मोतीराम सनवाल बालक अनिल को अपने साथ संगीत की महफिलों में ले जाते। सम्भवतः परिवार में संगीत व रामलीला का माहौल व संगीत की महफिलों के मिले जुले प्रभाव के कारण अनिल सनवाल ने गायन की विधिवत् शिक्षा भातखण्डे हि0 संगीत महाविधालय से प्राप्त की। अनिल सनवाल ने 06 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। इन्होने पहला अभिनय शत्रुघन का सन् 1974 में नन्दा देवी की रामलीला में किया। उसके बाद इसी रामलीला में आपने अपने जीवन के महत्वपूर्ण 40 वर्ष दिए। इन वर्षो में आपने शत्रुघन, भरत, लक्ष्मण ,राम, परशुराम, अंगद व दशरथ की भूमिकाऐं निभाई और लगभग 21 वर्षो से आप नन्दा देवी की रामलीला में तालीम दे रहे हैं । आपने यहाँ की रामलीला में महिला पात्रों का अभिनय लड़कियों से करवाने की शुरूआत की ।

अनिल सनवाल ने कुमाऊँ विश्वविद्यालय से स्नातक करने उपरान्त पत्रकारिता का पेशा अपनाया। वह बतलाते है कि उनके समय में रामलीला की तालीम खीम सिंह दिया करते थे जोकि एक अच्छे हारमोनियम वादक थे।

नन्दा देवी की रामलीला से जुडे होने के कारण वह कहते है कि मैं अपनी रामलीला के कलाकारो के विषय में ही बता सकता हुँ जिनका अभिनय मुझे अच्छा लगा जो आज भी मेरे मानस पटल पर अंकित हैं उनमें सर्वप्रथम नाम आता है भैरव तिवारी जी का, जो शबरी का बहुत ही सुन्दर अभिनय किया करते थे । गाने में उनकी आवाज और अभिनय दोनो ही धरातल पर वह खरे उतरते थे। महिला पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में दूसरा नाम आता हैं शमशेर जंग राणा का वह भी कैकई का जीवन्त अभिनय किया करते थे बहुत ही परफेक्सन के साथ। एक और कलाकार का जिक्र करते हुए कहते हैं कि जीवन लाल शाह खर और मेघनाद का अच्छा अभिनय करते थे ।

वर्तमान में आप नन्दा देवी मन्दिर के समीप अल्मोडा में रहते हैं।

चिरंजीलाल वर्मा

रामलीला के कलाकार चिरंजीलाल वर्मा का जन्म 07 अप्रेल 1965 को दसाईथल सुनार गॉव गंगोलीहाट में हुआ। आप स्व0 श्री रामलाल वर्मा व स्व0 श्रीमती नारायणी देवी के पुत्र हैं। आपने हाई स्कुल तक की शिक्षा प्राप्त की और आप स्वर्णकार है। चिरंजीलाल वर्मा ने लगभग 10 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। 1975 में दसाईथल में इन्होने पहला अभिनय समुद्र का किया।

चिरंजीलाल वर्मा अल्मोडा व उसके आस पास के क्षेत्रों की कई रामलीलाओं से संबद्ध रहे हैं जिनमें मुख्य रूप से नन्दादेवी , धारानौला , दसाईथल, धौलछीना, नौगॉव जमरानी बैंड शामिल है। इन रामलीलाओं में इन्होने जनक, सुमन्त, कैकई, अंगद, दशरथ का अभिनय किया।

रामलीला में अभिनय की इच्छा स्वयं जागृत हुई और फिर घर वालो का भरपूर सहयोग मिला। वर्मा जी बताते हैं कि उनके पिता रामलीला के बहुत अच्छे कलाकार थे उनका सानिध्य तो न के बराबर मिला। जब मैं 7 वर्ष का था तब उनकी मृत्यु हो गई थी। सीधे–सीधे उनसे कुछ सीखा नही लेकिन रामलीला के संस्कार तो उन्ही से आए हैं। दसाईथल में भवानीलाल वर्मा तालीम मास्टर होते थे उन्हीं से अभिनय व गीतों आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उनके सानिध्य में रहकर ही चिरंजीलाल वर्मा ने निर्देशन की बारिकिया सिखी। चिरंजीलाल वर्मा रामलीला में अभिनय के अतिरिक्त तालीम देने का कार्य भी करते है। वर्मा जी बतातें है उनके समय के हारमोनियम व तबला वादको में नवीन लाल, भवानीलाल वर्मा, गोविन्द लाल वर्मा व हरीश लाल शामिल है।

चिरंजीलाल वर्मा से पहले इनके पिता रामलाल वर्मा दसाईथल व गंगोलीहाट में मंचित होने वाली रामलीलाओं में दशरथ का बडा सशक्त अभिनय किया करते। बडे भाई जीवनलाल वर्मा दसाईथल में जनक का अभिनय लम्बे समय तक किए। बडे भाई गिरीश लाल वर्मा ने भी दसाईथल में मेघनाद का अभिनय किया। आपके बाद की पीढ़ी में आपके बेटे मिथिलेश वर्मा ने नंदा देवी की रामलीला में लक्ष्मण का पार्ट खेला है।

रामलीला में कभी न भूले जाने वाले कलाकारों में दसाईथल की रामलीला के भूपाल सिंह का रावण का अभिनय, दसाईथल की रामलीला के मोहन पन्त का राम का अभिनय, लोहाघाट की रामलीला में दीप चन्द्र पन्त का अंगद का अभिनय, धारानौला की रामलीला में प्रसाद चन्द्र जोशी (परसी भाई) का रावण का अभिनय और अमरनाथ नेगी का अंगद का अभिनय, नन्दादेवी की रामलीला में शमशेर राणा का कैकई का अभिनय कभी भुलाए नहीं जा सकते।

वर्तमान में आप नन्दा देवी मन्दिर के समीप, अल्मोडा, जिला अल्मोडा–263601 उत्तराखण्ड में रहते हैं।

दीपक कुमार अग्रवाल

रानीखेत की रामलीला में अहम् स्थान रखने कलाकार दीपक अग्रवाल का जन्म 15 मार्च 1972 को रानीखेत में हुआ। आप श्री के. एल. अग्रवाल व माता श्रीमती कमला अग्रवाल के सुपुत्र हैं। दीपक अग्रवाल जी ने 25 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय रावण का खड़ी बाजार रानीखेत की रामलीला में किया। उसके उपरान्त आपने इसी रामलीला कमेटी में परशुराम और खरदुषण का अभिनय किया। रावण के अभिनय के लिए आपने पर्याप्त प्रसिद्धि पाई। रावण का अभिनय लगातार 12 वर्षो तक किया।

दीपक अग्रवाल बताते हैं कि रामलीला की ओर आकर्षण स्वंय से हुआ और रामलीला में उनके गुरू मोहन राम जी (ताड़ीखेत वाले) हैं। हमारे समय में महिला पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूष कलाकार परमानन्द जी– मन्थरा व मंदोदरी, भुवन पपनै– कैकई,चकधर पाण्डे– सूर्पनखा का अभिनय किया करते थे। रामलीला में मोहन राम और मुन्ना भाई हारमोनियम और लियाकत अली तबला बजाते थे।

दीपक अग्रवाल जी के अनुसार रामलीला में उनको दिवाकर जोशी के द्वारा खेला गया राम का अभिनय, अमित तिवारी के द्वारा खेला गया लक्ष्मण का अभिनय, नवीन बिष्ट के द्वारा खेला गया दशरथ का अभिनय, गजेन्द्र पाण्डें के द्वारा खेला गया परशुराम का अभिनय व मुन्ना भोट के द्वारा खेला गया रावण का अभिनय जीवनपर्यनत याद

रहेगा। दीपक अग्रवाल ने एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की। आप रानीखेत के प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। वर्तमान में आपका पत्राचार का पता – मकान न:– 175, शिव मन्दिर मार्ग, रानीखेत उत्तराखण्ड है।

डॉ0 गिरीश चन्द्र वैला

रानीखेत की रामलीला में अहम् स्थान रखने कलाकार डॉ0 गिरीश चन्द्र वैला का जन्म 24 फरवरी 1959 को रानीखेत में हुआ। आप श्री भोला दत्त वैला व माता स्व0 श्रीमती भगवती वैला के सुपुत्र हैं।

डॉ0 गिरीश चन्द्र वैला ने 13 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय शत्रुघन का खड़ी बाजार रानीखेत की रामलीला में किया। उसके उपरान्त आपने इसी रामलीला कमेटी में राम, लक्ष्मण, सीता, जनक, परशुराम आदि का अभिनय किया।

गिरीश वैला बताते हैं कि रामलीला की ओर आकर्षण स्वंय से हुआ और रामलीला में वह आना गुरू स्व0 शेखर पाण्डे जी को मानते हैं। रामलीला में वैला जी ने अभिनय के अतिरिक्त निर्देशन व प्रोमटिंग का कार्यभार भी संभाला।

वह बताते हैं कि हमारे समय में महिला पात्रों का अभिनय करने वाले प्रमुख पुरूष कलाकार स्व0 शेखर पाण्डे जी–सीता और कैकई, गोपाल राम–अहिल्या, मंदोदरी, सीता और सुलोचना का अभिनय किया करते थे। रामलीला में मोहन राम हारमोनियम और स्व0 गदालू राम तबला, उदयनाथ साह वायलिन, प्यारू बासुरी बजाते थे।

गिरीश वैला बताते हैं कि उनके मानस पटल पर कई महान विभूतियॉ उभर रही हैं जिनमें पोखरमल अग्रवाल, देवीदत्त मैनाली, पूरन सिंह मेहरा, उदयनाथ साह, गणेश

लाल साह,जगन्नाथ साह व कई अन्य लोग जिन्होने बिना किसी ट्रेनिग के सजीव अभिनय किया, जहॉ पोखरमल अग्रवाल जी ने राम के अभिनय से जनता को रोमांचित किया वहीं देवीदत्त मैनाली जी ने सुमन्त का अभिनय कर जनता को रोने पर मजबूर कर दिया। मेरी मॉ मुझे इस बात को बार बार सांझा करती थी कि सुमन्त का पात्र मैनाली जी जैसा कोई नही खेल सकता। मुझे उदयनाथ साह, गणेश लाल साह, किशोरी लाल, वर्मा जी, हेम चौधरी , कुन्दन नेगी, माहेश्वरी जी का अवश्य जिक करना पडेगा क्योंकि इन महान विभूतियों के बिना रामलीला का मंचन होना असंभव था। मैं अपने गुरू स्व0 शेखर पाण्डे जी का बहुत अहसानमंद हूँ जिन्होने मुझे इस क्षेत्र में आने के लिए प्रेरणा प्रदान की। उन्हीं के आर्शीवाद से में मंचन में अपने को संस्थापित कर पाया।

गिरीश वैला ने एम.ए., एल.एल.बी., पी.एच.डी. तक की शिक्षा प्राप्त की। आप रानीखेत के प्रतिष्ठित व्यापारी हैं।

वर्तमान में आपका पत्राचार का पता – वैला वस्त्र भण्डार, सदर बाजार, रानीखेत उत्तराखण्ड है।

कैलाश चन्द्र जाटव

रानीखेत की रामलीला में कलाकार कैलाश चन्द्र जाटव का जन्म 8 जुलाई 1963 को रानीखेत में हुआ। आप स्व0 श्री रूप चन्द्र व माता स्व0 श्रीमती शान्ति देवी के सुपुत्र हैं। कैलाश चन्द्र जाटव जी ने 18 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय रावण सेना का खड़ी बाजार रानीखेत की रामलीला में किया। उसके उपरान्त आपने इसी रामलीला कमेटी में सबरी, केवट, जटायू, सम्पाती आदि के पात्रों का अभिनय किया साथ ही साथ हास्य कलाकार के रूप में भी रामलीला के मंच पर आपने पर्याप्त ख्याति अर्जित की।

कैलाश चन्द्र जाटव बताते हैं कि रामलीला की ओर आकर्षण रामलीला के मंचन को देखने से हुआ। रामलीला में मैं अपने गुरू के रूप में नवीन चन्द्र बुद्धलाकोटी, गणेश लाल साह, किशोरी लाल मानता हूँ। हमारे समय में महिला पात्रों का अभिनय करने वाले पुरुष कलाकार भुवन चन्द्र पपनै– कैकई, शेखर पाण्डे– सीता, चक्रधर पाण्डे– सूर्पनखा का अभिनय किया करते थे। कैलाश चन्द्र जाटव जी के अनुसार रामलीला में उनको नवीन चन्द्र बुद्धलाकोटी के द्वारा खेला गया परशुराम का अभिनय, कान्हा साह के द्वारा खेला गया सुमन्त का अभिनय, जीवन भर याद रहेगा।

कैलाश चन्द्र जाटव जी ने बी.ए.(प्रथम वर्ष) तक की शिक्षा प्राप्त की। आप नौकरी करते हैं। वर्तमान में आपका पत्राचार का पता – कय्यूम बिल्डिंग, शिव मन्दिर मार्ग, रानीखेत उत्तराखण्ड है।

पूरन चन्द्र मठपाल

रामलीला के कलाकार पूरन चन्द्र मठपाल का जन्म 1941 को नैनीताल में हुआ। आप स्व0 श्री शिव दत्त मठपाल व माता स्व0 लक्ष्मी मठपाल के सुपुत्र थे। आपने बी0ए0 तक की शिंक्षा प्राप्त की और शास्त्रीय संगीत की विधिवत शिक्षा प्राप्त करते हुए विशारद की उपाधि प्राप्त की।

रामलीला में अभिनय की शुरूआत 7 वर्ष की आयु से की। पहला अभिनय बानर सेना में मिला। उसके बाद अहिल्या आदि का अभिनय करने बाद आपके कई वर्षो तक लक्ष्मण और फिर राम का अभिनय तल्लीताल नैनीताल की रामलीला में किया। तल्लीताल की रामलीला के अतिरिक्त आपने द्वाराहाट बाजार में होने वाली रामलीला में लक्ष्मण और राम का अभिनय किया।

रामलीला का संस्कार आपमें आपके पिता शिव दत्त मठपाल जी से आया। वह तल्लीताल की रामलीला में परशुराम का अभिनय किया करते थे उनके कुशल अभिनय के विषय में लोग आज भी उदाहरण देते हैं। पूरन मठपाल एक लेखक व कवि के रूप में भी अपनी पहचान बनाए हुए थे। सन् 2013 में आपका देहांत नैनीताल में हुआ। आपका परिवार नया बाजार 242, तल्लीताल नैनीताल में रहता है।

यतीश रौतेला

रानीखेत की रामलीला में कलाकार यतीश रौतेला का जन्म 8 जून 1973 को रानीखेत में हुआ। आप श्री विरेन्द्र सिंह रौतेला व माता श्रीमती पुष्पा रौतेला के सुपुत्र हैं।

यतीश रौतेला जी ने 9 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय शत्रुघन का खड़ी बाजार रानीखेत की रामलीला में किया। उसके उपरान्त आपने इसी रामलीला कमेटी में मेघनाद, खरदूषण रावण आदि के पात्रों का अभिनय किया साथ ही साथ निर्देशन और मंच संचालन का कार्यभार भी संभाला।

यतीश रौतेला बताते हैं कि रामलीला की ओर आने की प्रेरणा और गुरू गणेश लाल साह और किशोरीलाल जी हैं। हमारे समय में महिला पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूष कलाकारों में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति स्व0 गोपाल राम जी हैं। जोकि शबरी और मन्दोदरी का अभिनय किया करते थे।

यतीश रौतेला जी के अनुसार रामलीला में उनको स्व0 कैलाश चन्द्र तिवारी के द्वारा खेला गया रावण का अभिनय, चक्रधर पाण्डे के द्वारा खेला गया सूर्पनखा का अभिनय, नवीन चन्द्र बुद्धलाकोटी के द्वारा खेला गया परशुराम का अभिनय, हमेशा उन्हे याद रहेगा।।

यतीश रौतेला जी ने इन्टर तक की शिक्षा प्राप्त की। स्वंय का रोजगार करते हैं। वर्तमान में आपका पत्राचार का पता – सदर बाजार, रानीखेत उत्तराखण्ड है।

हरबंश सिंह महरा

रानीखेत की रामलीला में पूराने कलाकार हरबंश सिंह महरा का जन्म 12 अप्रेल 1954 को ग्राम चमीनी, द्वाराहाट रानीखेत में हुआ। आप स्व0 श्री दुर्गा सिंह महरा व माता स्व0 श्रीमती नन्दी महरा के सुपुत्र हैं। हरबंश सिंह महरा जी ने 12 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय शत्रुघन का खड़ी बाजार रानीखेत की रामलीला में किया। उसके उपरान्त आपने इसी रामलीला कमेटी में भरत के पात्र का अभिनय किया साथ ही साथ निर्देशन, तालिम मास्टर और प्रोमटिंग का कार्यभार भी संभाला।

हरबंश सिंह महरा बताते हैं कि रामलीला की ओर आने की प्रेरणा और गुरू गणेश चन्द्र जोशी, उदय नाथ साह और किशोरी लाल जी हैं जिनके प्रोत्साहन के चलते मैं रामलीला से जुड़ा। हमारे समय में महिला पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूष कलाकारों में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में स्व0 शेखर पाण्डे, राजेन्द्र प्रसाद जोशी, चक्रधर पाण्डे , रविन्द्र बिष्ट, अभिषेक महरा, गोरव नेगी, गौरव साह, धनीलाल वर्मा आदि हैं।

हरबंश सिंह महरा बताते हें कि उनके परिवार में उनसे पहले उनके पिता स्व0 श्री दुर्गासिंह महरा रावण और दशरथ का अभिनय करते थे। और मेरे बाद मेरे दोनो जुडवा बेटे परमवीर और परमजीत महरा ने राम, लक्ष्मण, परशुराम, अंगद, जनक आदि का अभिनय किया हैं। मेरी पुत्री स्व0 चन्द्रा महरा ने रानीखेत में कुछ वर्षो से बंद हुई

रामलीला को पुनः शुरू करने में पहल की उसने छोटे बच्चो की रामलीला करवाई। वह स्वंय शास्त्रीय संगीत की शिक्षिका थी। उस समय के छोटे बच्चे आज जवान हो गए हैं और उनके द्वारा ही रामलीला का मंचन सम्भव हो पाता है।

हरबंश सिंह महरा के अनुसार रामलीला में उनको अंगद रावण संवाद– अंगद का अभिनय में परमवीर महरा और रावण के अभिनय में मुन्ना अग्रवाल का अभिनय स्र्वाधिक प्रिय है। हरबंश सिंह महरा जी ने हाईस्कूल तक की पढाई की आपका स्वंय का कारोबार है।

वर्तमान में हरबंश सिंह महरा जी का पत्राचार का पता – दुर्गा जनरल स्टोर, सदर बाजार, रानीखेत उत्तराखण्ड है।

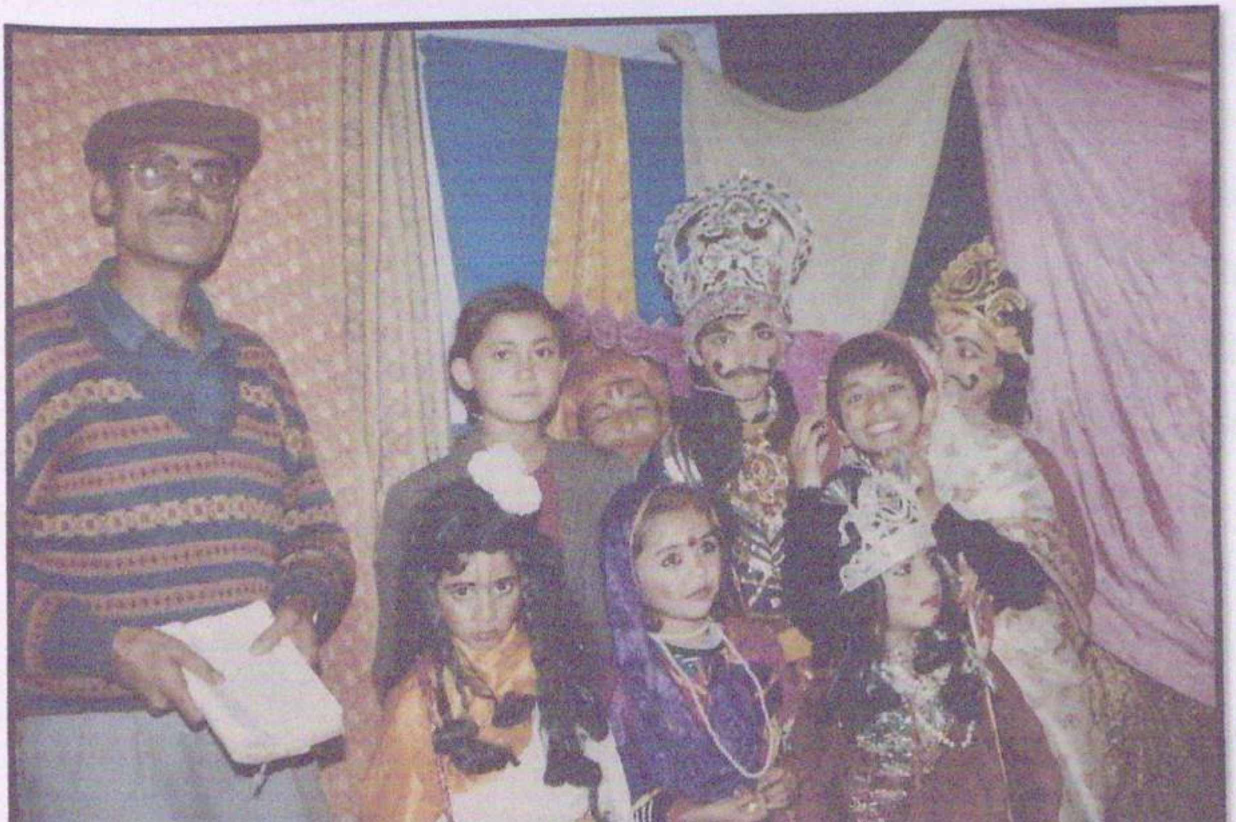

रजत पपनै

रानीखेत की रामलीला में कलाकार रजत पपनै का जन्म 23 अगस्त 2001 को रानीखेत में हुआ। आप श्री पूरन चन्द्र पपनै व माता श्रीमती रंजना पपनै के सुपुत्र हैं। रजत पपनै ने 12 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय कामदेव व राजा का खड़ी बाजार रानीखेत की रामलीला में किया। उसके उपरान्त आपने इसी रामलीला कमेटी में शत्रुधन के पात्र का अभिनय किया। आपको रामलीला की ओर आने की प्रेरणा और आपके गुरू आपके पिता पूरन चन्द्र पपनै हैं जिन्होने रामलीला में हनुमान और सुमन्त के अभिनय में ख्याति अर्जित की। रजत बताते हैं कि इनको तालिम पूरन पपनै और राजेन्द्र प्रसाद जोशी ने दी। रजत के परिवार में उनसे पहले उनके ताऊ भुवन पपनै–सीता, कैकई, जनक, वाल्मिकी, मंथरा। पिता पूरन पपनै– नारद, दशरथ, सुमन्त, भरत, हनुमान, विश्वामित्र, बनस्त्री, अहिल्या, द्वारपाल, मामा मारीच, सबरी, तारा, सुग्रीव व देवगण आदि का अभिनय करते हैं। रजत के अनुसार रामलीला में उनको पूरन पपनै जी के द्वारा खेला गया हनुमान का अभिनय सबसे अच्छा लगता है।

रजत पपनै कक्षा 10 के छात्र हैं। वर्तमान में इनका पत्राचार का पता – 208–सी, लोअर खड़ी बाजार, रानीखेत उत्तराखण्ड है।

प्रसाद चन्द्र जोशी

रामलीला के कलाकार प्रसाद चन्द्र जोशी का जन्म 11 नवम्बर 1960 को ग्राम दन्या, अल्मोडा, उत्तराखण्ड में हुआ। आप स्व0 श्री दमोदर जोशी व माता श्रीमती मोहिनी जोशी के सुपुत्र है। प्रसाद चन्द्र जोशी जी ने 12 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय लक्ष्मण का देवी मन्दिर, चीनाखान में होने वाली रामलीला में सन् 1972 में किया उसके बाद धरानौला की रामलीला में लक्ष्मण, परशुराम, केवट और रावण का अभिनय किया। रामलीला में आपके प्रेरणा स्त्रोत आपके पिता दामोदर जोशी और रामलीला के गुरू पूरन पाण्डे जी (रैमजे स्कूल)जोकि चीनाखान की रामलीला में सूर्पनखा, परशुराम, अंगद का अभिनय किया करते थे।

रावण के अभिनय से अल्मोडे मे अपनी विशेष पहचान बनाने वाले प्रसाद चन्द्र जोशी के प्रयासों से ही धारानौला की रामलीला का मंचन सम्भव हो पाया आप उसके सस्थापक सदस्य रहे। प्रसाद जोशी बताते हें कि उनके समय में रामलीला में हारमोनियम पर गिरजा शंकर पन्त तबले पर प्रसन्ना पाण्डे और कमल पन्त होते थे। उस समय के कुछ कलाकार जिनमें दिनेश जोशी– अंगद, अमर नाथ नेगी– अंगद

और सुमन्त, गिरजा पन्त– दशरथ, प्रसन्ना पाण्डे– मंदोदरी, हेम पाण्डे–सुशेन वैध शामिल थे।

प्रसाद चन्द्र जोशी के परिवार में उनके पिता दामोदर जोशी नैनीताल राम सेवक सभा में होने वाली रामलीला में अभिनय किया करते थे उन्हे उत्कृष्ठ अभिनय के लिए तिरंगा पुरस्कार में मिला था। वहीं भाई नवीन चन्द्र जोशी देवी मन्दिर, चीनाखान में राम का अभिनय करते थे उनका अभिनय आपको सबसे अच्छा लगा। आप बताते हैं कि लक्ष्मण शक्ति के समय राम के अभिनय में उनका विलाप इतना जिवन्त होता था कि दर्शक भी रो पडते थे।

वर्तमान में प्रसाद चन्द्र जोशी जी का पत्राचार का पता – न्यू कालौनी धारानौला अल्मोडा, उत्तराखण्ड है।

बसन्त लाल साह

द्वाराहाट की रामलीला के कलाकार बसन्त लाल साह का जन्म 1946 को ग्राम हाट द्वाराहाट मे हुआ। और मृत्यु मार्च 2015 को हुई। आप स्व0 श्री इन्द्र लाल साह व माता स्व0 श्रीमती गंगा देवी के सुपुत्र थे। 13 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की, पहला अभिनय द्वाराहाट बाजार की रामलीला में वनस्त्री का किया। उसके उपरान्त इसी रामलीला में 10 वर्ष परशुराम, 20 वर्ष रावण और 10 वर्ष दशरथ का अभिनय किया। तारा लाल साह बताते हैं कि हमारे पिता जी रामलीला में तबला बजाते थे उनकी वजह से ही भाई साहब का रामलीला की ओर झुकाव हुआ। रामलीला में उनके गुरू मोहन राम जी थे जोकि हमारे तालिम मास्टर भी थे। वह इस क्षेत्र के जाने माने संगीतकार थे रामलीला की तो सारी धुने उन्हे याद थी लेकिन कभी प्रकाश में नही आ पाए। मोहन राम जी के पिता भी एक कुशल सारंगी वादक थे और द्वाराहाट की रामलीला में सारंगी बजाते थे। स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले पुरूष कलाकारों में स्व0 राम प्रताप चौधरी– कैकई, स्व0 गणेश लाल वर्मा – सूर्पनखा का अभिनय करते थे।

बसन्त लाल साह जी के परिवार में उनसे पहले उनके पिता रामलीला में तबला वादन से जुड़े।उनके बाद छोटे भाई तारा लाल साह अभिनय से और बेटा महेश साह– सुग्रीव, शत्रुघन ,भरत व दूसरा बेटा लक्ष्मी लाल साह–बाली और सुमित्रा, भतीजा रोहित साह– लक्ष्मण, भरत, मारिच, खरदूषण आदि का अभिनय किया।

वर्तमान में तारा लाल साह जी का पत्राचार का पता – इन्द्रा फार्मेसी, द्वाराहाट, उत्तराखण्ड है।

परितोष पाण्डे

रामलीला के कलाकार परितोष पाण्डे का जन्म 7 सितम्बर 1984 को ग्राम बिलौरी, सोमेश्वर में हुआ। आप श्री मदन मोहन पाण्डे व माता श्रीमती हेमा पाण्डे के सुपुत्र है। परितोष पाण्डे ने 10 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय बाल अंगद का कालीखोली, द्वाराहाट में होने वाली रामलीला में सन् 1994 में किया उसके बाद द्वाराहाट बाजार की रामलीला में सीता, लक्ष्मण, भरत, सुबाहु, खर, हनुमान, अंगद, और केवट का अभिनय किया। रामलीला में आपके प्रेरणा स्त्रोत आपके पिता मदन मोहन पाण्डे और रामलीला के गुरू मोहन राम जी, श्री गंधर्वगिरी महाराज जी, तारा लाल साह जी, और विमल साह जी रहे। स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में स्व0 गणेश लाल साह– सूर्पनखा, कैकई, सुलोचना तथा नवजोती नेगी–सीता, बसन्त नान साह– सीता का अभिनय करते थे। परितोष के परिवार में उनके पिता मदन मोहन पाण्डे अभिनय से जुडे।

परितोष पाण्डे बताते हैं कि उनको महेश तिवारी के द्वारा खेला गया सुमन्त का अभिनय, तारा लाल साह के द्वारा खेला गया परशुराम का अभिनय, रितेश पन्त के द्वारा खेला गया लक्ष्मण का अभिनय, पूरन बिष्ट के द्वारा खेला गया रावण का अभिनय सबसे अच्छा लगा जो आज भी उनके मानस पटल पर अंकित है।

वर्तमान में परितोष पाण्डे जी का पत्राचार का पता – निकट मृत्युन्जय मन्दिर, द्वाराहाट उत्तराखण्ड है

राजेश कुमार त्रिपाठी

रामलीला के कलाकार राजेश कुमार त्रिपाठी का जन्म 30 मई 1961 को नैनीताल में हुआ। आप स्व0 जी0 आर0 त्रिपाठी जी के सुपुत्र हैं। आपने एम0 ए0, पर्यटन डिप्लोमा और एल0एल0बी0 तक पढाई की वर्तमान में आप वकालत करते हैं।

राजेश कुमार त्रिपाठी जी ने 1972 में 11 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय शिव का श्री रामलीला कमेटी तल्लीताल की रामलीला में किया। उसके के उपरान्त आपने 1972 से 2015 तक अभिनय के साथ ही साथ तालीम संचालन और संगीत व्यवस्था देखी। अभिनय की बात करे तो आपने दशरथ, परशुराम,अहिरावण, कुम्भकरण, विभिषण, ताडिका, रावण, मंदोदरी, कैकई सूर्पनखा, मकरध्वज, सुमन्त, केवट का अभिनय किया। आपने रावण और कैकई का अभिनय लगभग 10–10 वर्षो तक तथा कैकई आकर सूर्पनखा का अभिनय 5–5 वर्ष तक किया। रामलीला में आपकी प्रेरणा और गुरू दिनेश चन्द्र जोशी(कन्नू उस्ताद) रहे। कन्नू उस्ताद रामलीला और बैठकी होली के एक प्रतिष्ठित कलाकार रहे। रामलीला कमेटी के आप सचिव भी रहे

राजेश कुमार त्रिपाठी बताते हैं कि उनके समय में तालीम स्व0 बी0डी0ज्ञान, स्व0 एल0डी0 पाण्डे, स्व0 दिनेश चन्द्र जोशी, महेश नैपाली और स्व0 अनूप साह दिया

करते थे। रामलीला में तबले पर एल0डी0 पाण्डे, नरेन्द्र कुमार पन्त और नवीन बेगाना सहयोग करते थे।

अपने समय के स्त्री पात्रों के अभिनय करने वाले कलाकारों का जिक्र करते हुए कहते हैं कि पूरन चन्द्र पाण्डे– कैकई, स्व0 प्रदीप चौरसिया– सूर्पनखा, भुवन चन्द्र पाठक – सूर्पनखा, रवि कुमार–कैकई, सूर्पनखा, सीता, जगदीश पाण्डे– सीता, सूर्पनखा, मंदोदरी, सुलाचनो ये सभी अभिनय के मापदण्ड के आधार पर प्रमुख हैं।

राजेश कुमार त्रिपाठी के अनुसार स्व0 रमेश लाल साह के द्वारा खेला गया अंगद का अभिनय और स्व0 नत्थी लाल साह के द्वारा खेला गया शबरी का अभिनय कभी नहीं भुला जा सकता।

वर्तमान में राजेश कुमार त्रिपाठी जी का पत्राचार का पता मकान न0 17/4 रामजे रोड, तल्लीताल नैनीताल है।

जीवन हर्बोला

रामलीला के कलाकार जीवन हर्बोला का जन्म 1 नवम्बर 1984 को ग्राम तल्ला कौला बिलौरी, द्वाराहाट में हुआ। आप श्री सतीश चन्द्र हर्बोला व माता श्रीमती मुन्नी हर्बोला के सुपुत्र है। जीवन हर्बोला ने 10 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। पहला अभिनय वानर सेना का काली खोली, द्वाराहाट में होने वाली रामलीला में सन् 1994 में किया उसके बाद इसी रामलीला में ताडिका, अक्षय कुमार, मकरध्वज, खर दूषण, मारिच, सुबाहु आदि का अभिनय किया।

रामलीला में आपके प्रेरणा स्त्रोत शम्भू हर्बोला व गुरू मोहन राम जी रहे। स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में रवि हर्बोला– सीता, ललित मोहन हर्बोला–सुलोचना, मुकेश हर्बोला–सीता का अभिनय करते थे। जीवन हर्बोला के परिवार में उनके चाचा ललित मोहन हर्बोला अभिनय से जुडे।

जीवन हर्बोला बताते हैं कि उनको रमेश चन्द्र पन्त के द्वारा खेला गया रावण का अभिनय, सोबन सिंह के द्वारा खेला गया राम का अभिनय, मुकेश उपाध्याय के द्वारा खेला गया लक्ष्मण का अभिनय, संतोष मेहरा के द्वारा खेला गया राम का अभिनय, हरीश हर्बोला के द्वारा खेला गया रावण का अभिनय, संजीव जोसफ के द्वारा खेला गया

कुम्भकरण का अभिनय, घनानन्द पाण्डे के द्वारा खेला गया परशुराम का अभिनय, दिनेश साह के द्वारा खेला गया परशुराम का अभिनय, पूरन बिष्ट के द्वारा खेला गया अंगद का अभिनय, भाषित मठपाल के द्वारा खेला गया बाल–अंगद का अभिनय, अंकित मठपाल के द्वारा खेला गया लक्ष्मण व कामदेव का अभिनय सबसे अच्छा लगा जो आज भी उनके मानस पटल पर अंकित है।

वर्तमान में जीवन हर्बोला जी का पत्राचार का पता – तल्ला कौला, द्वाराहाट उत्तराखण्ड है।

मदन मोहन पाण्डे

रामलीला के कलाकार मदन मोहन पाण्डे का जन्म 25 जून 1957 को भरतपुर राजस्थान में हुआ आप मूलतः ग्राम बिलौरी, सोमेश्वर के रहने वाले हैं। आप स्व0 श्री बाला दत्त पाण्डे व माता श्रीमती बसन्ती पाण्डे के सुपुत्र है। मदन मोहन पाण्डे जी ने 22 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। पहला अभिनय मोहिनी का द्वाराहाट बाजार में होने वाली रामलीला में सन् 1979 में किया उसके बाद द्वाराहाट बाजार की रामलीला में नारद, मारिच, विभिषण, अंगद, रावण, द्वारपाल, केवट और रावण का अभिनय किया। उसके अलावा कालीखोली की रामलीला में अंगद, पूजाखेत की रामलीला में परशुराम, बिजेपुर की रामलीला में अंगद और विभिषण का भी अभिनय किया। मदन मोहन पाण्डे जी बताते हैं कि रामलीला में उनके लिए प्रेरणा स्त्रोत स्व0 रामप्रताप चौधरी जी थे तथा रामलीला में मेरे गुरू श्री जीवन लाल साह, स्व0 बसन्त लाल साह, स्व0 केशव मैनाली व डॉ0 तारा लाल साह जी रहे। स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में गोविन्द लाल साह– मोहिनी तथा प्रकाश पाण्डे– कैकई का अभिनय करते थे। रामलीला में मोहन राम हारमोनियम व तबला शरद ने बजाया।

पाण्डे जी के परिवार में उनके सुपुत्र परितोष पाण्डे रामलीला में अभिनय से जुड़े बाल अंगद से अभिनय की शुरूआत कर सीता, लक्ष्मण, भरत, सुबाहु, खर, हनुमान, अंगद और केवट का अभिनय किया।

मदन मोहन पाण्डे जी बताते हैं कि उनको महेश तिवारी के द्वारा खेला गया सुमन्त का अभिनय, शंकर लाल साह के द्वारा खेला गया मेघनाद का अभिनय, संतोष लाल साह के द्वारा खेला गया मेघनाद का अभिनय, बसन्त लाल साह के द्वारा खेला गया रावण का अभिनय सबसे अच्छा लगा जो आज भी उनके मानस पटल पर अंकित है।

वर्तमान में मदन मोहन पाण्डे जी का पत्राचार का पता – निकट मृत्युन्जय मन्दिर, द्वाराहाट उत्तराखण्ड है।

रवि हर्बोला

रामलीला के कलाकार रवि हर्बोला का जन्म 16 सितम्बर 1989 को ग्राम तल्ला कौला बिलौरी, द्वाराहाट में हुआ। आप स्व श्री तारा दत्त हर्बोला व माता श्रीमती लीला हर्बोला के सुपुत्र है। रवि हर्बोला ने 5 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। पहला अभिनय वानर सेना का काली खोली, द्वाराहाट में होने वाली रामलीला में सन् 1994 में किया उसके इसी रामलीला में अहल्यिा गौरी, सीता, कौशल्या, मंदोदरी, अनुसुया व पार्वती का अभिनय किया। रामलीला में अभिनय की प्रेरणा आपको रामलीला के मंचन को देखने से हुई रामलीला में आपके गुरू मोहन राम हैं। स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में अखिलेश पाण्डे– सुमित्रा, ललित मोहन हर्बोला–सुलोचना, योगेश भटट्–मोहनी, सूर्पनखा और सुलोचना का अभिनय करते हैं।

रवि हर्बोला बताते हैं कि उनको ललित मोहन हर्बोला के द्वारा खेला गया सुलोचना का अभिनय, आर. एस. नेगी के द्वारा खेला गया सूर्पनखा, कैकई और नारद का अभिनय सबसे अच्छा लगा जो आज भी उनको याद है।

वर्तमान में रवि हर्बोला जी का पत्राचार का पता – तल्ला कौला, द्वाराहाट उत्तराखण्ड है।

नारायण सिंह किरौला

रामलीला के कलाकार नारायण सिंह किरौला का जन्म 1935 को ग्राम मल्ली किरौली द्वाराहाट में हुआ और मृत्यु सन् 2000 में हुई। आप स्व0 श्री मदन सिह किरौला के सुपुत्र थे। नारायण सिंह किरौला जी ने 1950 से जब वह 15 वर्ष के थे तबसे रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। पहला अभिनय कैकई का मल्ली किरौली में होने वाली रामलीला में किया उसके बाद के वर्षो में इसी रामलीला में लगातार कई वर्षो तक सूर्पनखा का अभिनय किया।

नारायण सिंह किरौला जी के सुपुत्र देव सिंह किरौला बताते हैं कि उन दिनो स्त्री पात्रो का अभिनय मल्ली किरौली की रामलीला में कुन्दन सिंह किरौला– सीता व पान सिंह किरौला–सूर्पनखा व कैकई का अभिनय करते हैं। रामलीला की तालिम स्व0 लक्ष्मण सिंह किरौला,स्व0 बीरबल सिंह किरौला दिया करते थे। रामलीला में हारमोनियम बीरबल सिंह किरौला व ग्राम कफडा के स्व0 गुसाई दत्त तिवारी तबला बजाते थे।

देव सिंह किरौला बताते हैं कि हमारे पिता जी के बाद उनके बड़े बेटे दिवान सिंह किरौला ने मल्ली किरौली की रामलीला में राम का अभिनय किया। और फिर उनके छोटे बेटे यानि की मैं स्वंय ने भरत का अभिनय किया। हमारे पिता जी को बीरबल सिंह किरौला के द्वारा खेला गया दशरथ का अभिनय, मोहन सिंह किरौला के द्वारा खेला गया रावण का अभिनय, दीवान सिंह किरौला के द्वारा खेला गया राम का अभिनय, लक्ष्मण सिंह किरौला के द्वारा खेला गया परशुराम का अभिनय सबसे अच्छा लगा जो आज भी उनको याद है।

वर्तमान में नारायण सिंह किरौला जी के परिवार का पत्राचार का पता – ग्राम मल्ली किरौली, द्वाराहाट उत्तराखण्ड है।

देव सिंह किरौला

रामलीला के कलाकार देव सिंह किरौला का जन्म 27 जून 1959 को ग्राम मल्ली किरौली द्वाराहाट में हुआ। आप स्व0 श्री नारायण सिंह किरौला जी व माता दुर्गा देवी के सुपुत्र हैं। देव सिंह किरौला जी ने 1971 से जब वह 12 वर्ष के थे तबसे रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। पहला अभिनय भरत का मल्ली किरौली में होने वाली रामलीला में किया। रामलीला की ओर जाना आपके पिता स्व0 श्री नारायण सिंह किरौला जी की प्रेरणा से हुआ।

देव सिंह किरौला बताते हैं कि उन दिनो रामलीला की तालिम स्व0 लक्ष्मण सिंह किरौला,स्व0 बीरबल सिंह किरौला दिया करते थे। रामलीला में हारमोनियम बीरबल सिंह किरौला व ग्राम कफडा के स्व0 गुसाई दत्त तिवारी तबला बजाते थे देव सिंह किरौला बताते हैं कि हमारे पिता स्व0 श्री नारायण सिंह किरौला जी के बाद उनके बड़े भाई दिवान सिंह किरौला ने मल्ली किरौली की रामलीला में राम का अभिनय किया।

देव सिंह किरौला को बीरबल सिंह किरौला के द्वारा खेला गया दशरथ का अभिनय, लक्ष्मण सिंह किरौला के द्वारा खेला गया परशुराम का अभिनय, हरक सिंह किरौला के द्वारा खेला गया हनुमान का अभिनय अच्छा लगा जो आज भी उनको याद है।

वर्तमान में देव सिंह किरौला जी के परिवार का पत्राचार का पता – ग्राम मल्ली किरौली, द्वाराहाट उत्तराखण्ड है।

दिनेश चन्द्र साह

रामलीला के कलाकार दिनेश चन्द्र साह का जन्म 22 अप्रेल 1967 को द्वाराहाट में हुआ। आप स्व0 श्री नन्द लाल साह व माता स्व0 श्रीमती मोहनी देवी साह के सुपुत्र है। दिनेश चन्द्र साह जी ने 20 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय अंगद का कालीखोली द्वाराहाट में होने वाली रामलीला में सन् 1987 में किया उसके बाद इसी रामलीला मंच में आपने परशुराम, सुमन्त, विभिषण, हनुमान आदि के अतिरिक्त जरूरत पडने पर कई अन्य छोटे पात्रों का भी अभिनय किया। रामलीला में अभिनय की प्रेरणा दूरदर्शन व प्रत्यक्ष रूप में रामलीला के तालिम मास्टर मोहन उस्ताद से मिली।

दिनेश चन्द्र साह जी बताते हैं कि उनके परिवार में रामलीला के मंच से सर्वप्रथम उनके पिता श्री नन्द लाल साह जुडे उनके बाद इनके ज्येष्ठ भ्राता कैलाश चन्द्र साह और फिर उनसे छोटे भ्राता गिरीश चन्द्र साह रामलीला में अभिनय, तालिम व निर्देशन से जुडे।

दिनेश चन्द्र साह जी बताते हैं कि उनको रमेश चन्द्र काण्डपाल के द्वारा खेला गया अंगद का अभिनय सबसे अच्छा लगा जो आज भी उनके मानस पटल पर अंकित है।

दिनेश चन्द्र साह जी ने स्नात्कोत्तर (विज्ञान) व बी0एड किया है वर्तमान में आप शिक्षक हैं आपका पत्राचार का पता – कालिका रोड, कालीखोली, द्वाराहाट उत्तराखण्ड है।

कैलाश चन्द्र साह

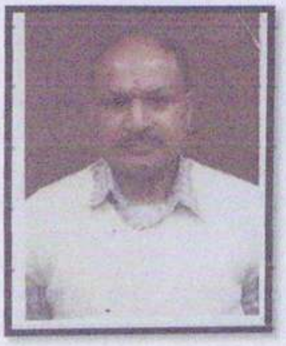

रामलीला के कलाकार कैलाश चन्द्र साह का जन्म 27 मार्च 1959 को द्वाराहाट में हुआ। आप स्व0 श्री नन्द लाल साह व माता स्व0 श्रीमती मोहनी देवी साह के सुपुत्र है। कैलाश चन्द्र साह जी ने 40 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय दशरथ का काली खोली, द्वाराहाट में होने वाली रामलीला में किया उसके बाद इसी रामलीला मंच में आपने निर्देशन का कार्य भी किया। रामलीला में जुडने की प्रेरणा रामलीला के तालिम मास्टर मोहन उस्ताद से मिली।

कैलाश चन्द्र साह जी बताते हैं कि उनके समय में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारो में आर0एस0 नेगी–कैकई राम प्रताप चौधरी–कैकई, कैलाश पन्त–सूर्पनखा का अभिनय करते थे।उन दिनो रामलीला की तालिम सोमेश्वर के मोहन उस्ताद और जालली के हरीश उस्ताद दिया करते थे। कन्नू उस्ताद और शरद लाल तबला बजाते थे। कैलाश चन्द्र साह जी बताते है कि हमारे परिवार में रामलीला के मंच से सर्वप्रथम मेरे पिता श्री नन्द लाल साह जुडे उनके बाद इनके छोटे भाई दिनेश चन्द्र साह और गिरीश चन्द्र साह रामलीला में अभिनय, तालिम व निर्देशन से जुडे। हमारे बाद की पींढी में मेरा पुत्र दीपांशु साह और भतीजा रामलीला में अभिनय से जुड़ा।

कैलाश चन्द्र साह जी बताते हैं कि उनको डॉ0 बसन्त लाल साह के द्वारा खेला गया रावण का अभिनय, राम प्रसाद चौधरी के द्वारा खेला गया परशुराम का अभिनय, कैलाश पन्त के द्वारा खेला गया अंगद का अभिनय, हरीश पन्त के द्वारा खेला गया दशरथ का अभिनय, कैलाश तिवारी के द्वारा खेला गया राम का अभिनय, महेन्द्र सिंह रौतेला के द्वारा खेला गया राम का अभिनय, ललित हर्बोला के द्वारा खेला गया कैकई और सुलोचना का अभिनय सबसे अच्छा लगा जो आज भी मेरे मानस पटल पर अंकित है।

वर्तमान में आपका पत्राचार का पता – कालिका रोड, कालीखोली, द्वाराहाट उत्तराखण्ड है।

भीम सिंह किरौला

रामलीला के कलाकार भीम सिंह किरौला का जन्म 6 दिसम्बर 1960 को ग्राम मल्ली किरौली द्वाराहाट में हुआ। आप श्री जय सिंह किरौला व माता धनुली देवी के सुपुत्र हैं। भीम सिंह किरौला जी ने 13 वर्ष आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। मल्ली किरौली में होने वाली रामलीला में खर दूषण, मारीच, सुबाहु का अभिनय किया। रामलीला की ओर जाना आपके पिता श्री जय सिंह किरौला जी की प्रेरणा से हुआ रामलीला में आपके गुरू बीरबल सिंह किरौला रहे।

भीम सिंह किरौला बताते हैं कि उन दिनो रामलीला की तालिम स्व0 बीरबल सिंह किरौला व स्व0 लक्ष्मण सिंह किरौला दिया करते थे। रामलीला में हारमोनियम बीरबल सिंह किरौला व ग्राम कफडा के स्व0 गुसाई दत्त तिवारी तबला बजाते थे। रामलीला में महिला पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में किशन सिंह किरौला – सूर्पनखा, कैकई, मनोहर सिंह भण्डारी– सीता शामिल थे। भीम सिंह किरौला बताते हैं कि मल्ली किरौली की रामलीला का मंच 156 वर्ष पुराना है जोकि लगभग 40 फीट x 30 फीट का है इस मंच में ग्रीन रूम की सुविधा भी तभी से कर दी गई थी। भीम सिंह किरौला बताते हैं कि हमारे पिता स्व0 श्री जय सिंह किरौला जी परशुराम का अभिनय करते थे। उनके बाद मेरे बड़े भाई किशन सिंह किरौला ने मल्ली किरौली की रामलीला में सूर्पनखा, कैकई का अभिनय तथा निर्देशन व मेकअप भी किया करते हैं और मेरे चचेरे भाई लक्ष्मण सिंह किरौला –रावण और परशुराम का अभिनय करते हैं।

भीम सिंह किरौला को लक्ष्मण सिंह किरौला के द्वारा खेला गया रावण का अभिनय अच्छा लगा जो आज भी उनको याद है।

वर्तमान में भीम सिंह किरौला जी का पत्राचार का पता – दुर्गा निवास, रानीखेत रोड़, द्वाराहाट उत्तराखण्ड है।

शम्भू दत्त हर्बोला

रामलीला के कलाकार शम्भू दत्त हर्बोला का जन्म 10 फरवरी 1976 को ग्राम तल्ला कौला बिलौरी, द्वाराहाट में हुआ। आप श्री मोहन चन्द्र हर्बोला व माता श्रीमती विमला हर्बोला के सुपुत्र है। शम्भू दत्त हर्बोला ने 15 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। पहला अभिनय मकरध्वज का काली खोली, द्वाराहाट में होने वाली रामलीला में सन् 1991 में किया उसके इसी रामलीला में रावण, खर दूषण, बाली, हनुमान, बंदीजन, विभिषण, कुम्भकरण, अहिरावण, मंथरा, सुक्षेन वैध, सुग्रीव, मारिच, जटायू, ताडिका और अक्षय कुमार आदि का अभिनय किया।

शम्भू दत्त हर्बोला बताते हैं कि रामलीला उनका झुकाव रामलीला को देखने से हुआ और रामलीला में मेरे गुरू मोहन राम जी रहे। स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में रवि हर्बोला– मंदोदरी,सीता। ललित मोहन हर्बोला–सुलोचना। हेम आर्या–सूर्पनखा का अभिनय करते थे। हमे तालिम मोहन राम दिया करते थे रामलीला में हारमोनियम भी वही बजाते थे औरउनके साथ तबले पर शरद लाल हुआ करते थे। शम्भू दत्त हर्बोला बताते हैं कि उनको दिनेश साह के द्वारा खेला गया अंगद का अभिनय, पूरन बिष्ट के द्वारा खेला गया रावण का अभिनय, संजीव जोसफ के द्वारा खेला गया कुम्भकरण का अभिनय सबसे अच्छा लगा जो आज भी मेरे मानस पटल पर अंकित है।

शम्भू दत्त हर्बोला ने स्नातकोत्तर तक की पढाई की और वर्तमान में ठेकेदारी करते हैं। इनका वर्तमान में का पत्राचार का पता – तल्ला कौला, द्वाराहाट उत्तराखण्ड है।

जीवन चन्द्र

रामलीला के कलाकार जीवन चन्द्र का जन्म 16 दिसम्बर 1989 को ग्राम बिजेपुर द्वाराहाट में हुआ। आप श्री पनराम व माता स्व0 श्रीमती भागीरथी देवी के सुपुत्र है। जीवन चन्द्र ने 19 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। पहला अभिनय मेघनाद का ग्राम बिजेपुर द्वाराहाट में होने वाली रामलीला में सन् 1989 में किया। मेघनाद के अलावा आपने इसी रामलीला में रावण का अभिनय किया। उसके बाद कालीखोली में होने वाली रामलीला में मेघनाद का अभिनय किया।

जीवन चन्द्र बताते हैं कि रामलीला उनका झुकाव रामलीला को देखने से हुआ और रामलीला में मेरे गुरू हरीश हर्बोला और हरीश तिवारी जी हैं। स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में नीरज तिवारी–कैकई। हेम चन्द्र–सुलोचना, सूर्पनखा, कैकई का अभिनय करते थे। हमे तालिम हरी राम दिया करते थे रामलीला में हारमोनियम भी वही बजाते थे और उनके साथ तबले पर शरद लाल हुआ करते थे। जीवन चन्द्र बताते हैं कि उनको बिजेपुर की रामलीला में दान सिंह के द्वारा खेला गया रावण का अभिनय और रमेश उप्रेती के द्वारा खेला गया कुम्भकरण का अभिनय सबसे अच्छा लगा जो मेरे मानस पर अंकित है।

जीवन चन्द्र का वर्तमान में पत्राचार का पता – बिजेपुर, द्वाराहाट उत्तराखण्ड है।

मनोज कुमार

रामलीला के कलाकार मनोज कुमार का जन्म 23 मार्च 1998 को रानीखेत में हुआ। आप श्री प्रकाश चन्द्र व माता स्व0 श्रीमती नीमा देवी के सुपुत्र है। मनोज कुमार ने 17 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। पहला अभिनय सूर्पनखा का खडी बाजार रानीखेत में होने वाली रामलीला में किया।

मनोज कुमार बताते हैं कि रामलीला उनका झुकाव रामलीला को देखने से हुआ और रामलीला में मेरे गुरू पूरन चन्द्र पपनै जी हैं। स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारों में भुवन पपनै–कैकई। शुभम्–उर्वशी और विशाल कुमार–सीता का अभिनय करते थे। हमे तालिम चक्रधर पाण्डे, पूरन चन्द्र पपनै और राजेन्द्र जोशी दिया करते थे रामलीला में हारमोनियम कुन्ना भाई और तबला लियाकत अली बजाते थे ।

मनोज कुमार बताते हैं कि उनके छोटे भाई विशाल कुमार ने सीता, भरत और शत्रुघन का अभिनय करते हैं। रामलीला में मुझे पूरन चन्द्र पपनै जी के द्वारा खेला गया हनुमान , नारद और सुमन्त का अभिनय सबसे अच्छा लगा जो मेरे मानस पर अंकित है।

मनोज कुमार का वर्तमान में पत्राचार का पता – कय्यूम बिल्डिंग ,शिव मन्दिर मार्ग, रानीखेत उत्तराखण्ड है।

भगवान दास साह

कुमाऊनी रामलीला के कलाकार भगवान दास साह जी का जन्म 2 जनवरी 1932 को नैनीताल में हुआ। आप स्व0 श्री श्याम लाल साह (आढती) के पुत्र थे। आपकी मृत्यु 14 नवम्बर 2013 को हुई। आप भगवान दास साह काकू के नाम से प्रसिद्ध हुए। सम्पूर्ण जीवन रामसेवक सभा को समर्पित रहा। भगवान दास साह जी ने मेघनाद और केवट के पात्र का अभिनय किया । अपने जीवन्त अभिनय के लिए वह हमेशा याद किए जाते रहेगें।

योगेश पन्त

रामलीला के कलाकार योगेश पन्त का जन्म 10 अगर्स्त 1974 को नैनीताल में हुआ। आप स्व0 गिरीश चन्द्र पन्त जी के सुपुत्र हैं। आपने एम0 ए0 संगीत विषय से किया है और वर्तमान में आप शिक्षक हैं।योगेश पन्त जी ने 1983 में 9 वर्ष की आयु से रामलीला में अभिनय की शुरूआत की। आपने पहला अभिनय शत्रुघन का श्री राम सेवक सभा नैनीताल में होने वाली रामलीला में किया।उसके उपरान्त आपने भरत, सीता, लक्ष्मण, और राम का अभिनय किया। रामसेवक सभा के बाद आपने रामलीला कमेटी सुखाताल में होने वाली रामलीला में कई वर्षो तक राम का अभिनय किया। आपने शास्त्रीय संगीत में गायन, तबला और सितार से विशारद की शिक्षा प्राप्त की। रामलीला में आप स्व0 जी0सी0पन्त जी को गुरू का दर्जा देते हैं। स्त्री पात्रों का अभिनय करन वालों में प्रमोद साह– सूर्पनखा, ब्रजमोहन जोशी–शबरी का अभिनय करते थे।

योगेश पन्त जी बताते है कि उनके परिवार में उनके चचेरे भाई मुकुल पन्त अल्मोडा की रामलीला के प्रमुख कलाकार और निर्देशक तथा बेटा दर्शु पन्त रामसेवक सभा की रामलीला में अभिनय करते है योगेश पन्त के अनुसार स्व0 नाथ लाल साह के द्वारा खेला गया शबरी का अभिनय कभी नही भुला जा सकता।

वर्तमान में योगेश पन्त जी का पत्राचार का पता मकान न0 243/3 जै लाल साह बाजार,मल्लीताल नैनीताल है।

शंकर दत्त उप्रेती

रामलीला के कलाकार शंकर दत्त उप्रेती का जन्म 1963 को थाना बाजार अल्मोडा में हुआ। आप स्व0 श्री प्राण दत्त उप्रेती व माता स्व0 गोविन्दी उप्रेती के सुपुत्र थे। आपने स्नात्कोत्तर तक की शिंक्षा प्राप्त की। शास्त्रीय संगीत की विधिवत शिक्षा प्राप्त की। आकाशवाणी में कार्यक्रम निष्पादक के पद पर कार्यरत रहते हुए आपकी मृत्यु हुई। रामलीला में अभिनय की शुरूआत 12 वर्ष की आयु से की। पहला अभिनय सीता का पोखरखली अल्मोडा में होने वाली रामलीला में किया। सीता के अभिनय के बाद आपने कई महिला पात्रों के अभिनय किए। आपकी आवाज बहुत ही सुरीली थी। आपने पोखरखाली की रामलीला, पाण्डेखोला की रामलीला, खत्याडी की रामलीला और जाखनदेवी की रामलीला में अीिनय किया। अल्मोडा के समीप के क्षेत्र लोधिया और चितई की रामलीला जोकि एक लम्बे समय चलने के बाद बंद हो गई थी उसे पुनः शुरू करवाने में शंकर दत्त उप्रेती का महत्वपूर्ण योगदान है।

शंकर दत्त उप्रेती का परिवार गैस गोदाम रोड , कुसुमखेड़ा , हल्द्वानी, नैनीताल में रहता है।

बद्रेश्वर की रामलीला

कुमाऊँनी शैली की रामलीला का प्रारम्भ बद्रेश्वर की रामलीला से माना जाता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार बद्रेश्वर की रामलीला शुरूआती दिनो में सूर्यास्त से पूर्व प्रारम्भ होकर 8 बजे रात्री तक समाप्त हो जाया करती थी। रामलीला की तालीम रक्षाबंधन से प्रारम्भ हो जाती थी। उन दिनो लाला बाजार में अधिकतर दुकाने खाली हुआ करती थी इस लिए तालीम वहीं पर हुआ करती थी। बद्रेश्वर की रामलीला के कलाकारों के विषय में जानकारी देते हुए नंदादेवी की रामलीला के कलाकार विनीत बंसल बताते हैं कि उन दिनो जौहरी बाजार के मोती राम जोशी श्रंगार किया करते थे। पाण्डेखोला के कई कलाकार अभिनय से जुडे थे। नवीन चन्द्र पाण्डे– राम, परमानन्द गुरूरानी– राम, शिवलाल वर्मा –लक्ष्मण, पींताम्बर तिवारी –सीता, पाटिया के के0 जोशी– कैकई, भैरव दत्त पन्त –परशुराम, प्रेम सिंह – दशरथ, गौरीशंकर– रावण, हीरा बल्लभ उप्रेती –रावण, भाव लाल साह –मेघनाद, चन्द सिंह नयाल– वाणासुर, भवान सिंह नयाल– विभिषण, मथुरा सिंह नयाल– दशरथ, मोहन सिंह रेतार– हनुमान, निरमा नन्द पाण्डे– कैकई, इनके अतिरिक्त केशव लाल साह, नन्दन जोशी ने अभिनय किया। 1930 के रामलीला मंचन की यादों को बताते हैं वरिष्ठ साहित्यकार विपिन चन्द्र जोशी आइए इनके संस्मणों के आधार पर इस रामलीला का चित्र खीचने का प्रयास करते हैं। बद्रेश्वर मन्दिर के पार्श्व में तब एक विस्तृत आयाताकार मैदान था। दक्षिण की ओर ऊँची दिवार थी। पूर्व की ओर बद्रेश्वर का फाटक था तथा उससे लगी लम्बी सी दिवार जो मन्दिर के उत्तरी भाग तक फैली थी। बीच के उसी भाग में रामलीला होती थी। मैदान के पश्चिमी सिरे पर सुन्दर सा रंगमंच बनाया जाता था।

श्री गोविन्द लाल साह रामलीला के समर्पित मैनेजर होते थे। रामलीला पैट्रोमैक्स की रोशनी में होती थीं कई दूकानें अगल बगल सजती थीं बच्चे लयलकडी

खरीदते थे। भीड खूब जुटती थी। स्टेज के सामने दर्शको के लिए दरिया बिछी रहती थी। कई दर्शक पूरब और दक्षिण दिशा की दिवारों में बैठकर लीला का आनन्द लेते थे।

लीला में बहुत सुन्दर दृश्य दिखाए जाते थे।राम धनुर्भंग के पश्चात् एक दृश्य आज भी याद है पर्दा खुलते ही शिव जीं कैलाश पर्वत में दिखाई देते थे। जटा जूट माथे पर चन्द्रमा। सिर से गंगा झरती हुई। नीचे तपस्या रत परशुराम। गोविन्द मैनेजर परशुराम का अभिनय करते थे।देवी दत्त पन्त एम0पी0 सीता हरण के लिए आए हुए जोगी रावण का अभिनय करते थे। हेमन्त पाण्डे वैध जीं रावण का अभिनय करते थे। जगन्नाथ वर्मा सूर्पनखा का अभिनय, चन्दा हनुमान और सुमन्त का अभिनय, पंईयाँ पहलवान खरदूषण का अभिनय और अभिनय में उनके द्वारा विधुत की गति से तलवार घुमाना आज भी याद आता है। सन् 1948 में बद्रेश्वर के स्थान पर विवाद उत्पन्न हो गया, रामलीला पर पाबन्दी लगा दी गई । जनता ने आन्दोलन किया धारा 144 लगा दी गई गिरफ्तारिया हुई। रामलीला के मंचन का क्रम टूटा। फिर 1954 में शरदोत्सव हुआ जिसमें डॉ भवानी दत्त पाण्डे की अध्यक्षता में जीं0आई0सी0 में रामलीला का भव्य आयोजन हुआ। कालान्तर में बद्रेश्वर की राम लीला जीं0आई0सी0 से होती हुई त्यूनरा और फिर नंदा देवी मन्दिर में होने वाली रामलीला तक की यात्रा तय करती है।

श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब

श्री लक्ष्मी भण्डार हुक्का क्लब के तत्वावधान में रामलीला का मंचन किया जाता है। इस क्लब की स्थापना सन् 1907 में हुई । जिसे सन् 1996 में रजिस्टर्ड किया गया। हुक्का क्लब की रामलीला के विषय में हुक्का क्लब के सचिव व रामलीला को समर्पित व्यक्तित्व श्री शिव चरण पाण्डे बताते हैं कि हुक्का क्लब में बैठकी रामलीला (पितृ पक्ष में) जनश्रृति के आधार पर वर्ष 1935–36 से की गई। किन किन लोगो ने की अब इसका स्मरण कर पाना सम्भव नहीं है। कहा जाता है कि इस बैठकी रामलीला में बर्देश्वर की रामलीला के पात्र भी नियमित रूप से भाग लेते थे।

वर्ष 1978 से वर्तमान रंगमंचीय रामलीला की स्थापना और प्रारम्भ करने का श्रेय मुख्यतया निम्न महानुभावों को जाता है जिनमें श्री शंकर लाल साह,श्री शिव चरण पाण्डे, श्री श्याम लाल साह, श्री राजेन्द्र बोरा(त्रिभुवन गिरी), श्री जगदीश लाल साह, श्री चारू तिवारी, स्व0 लक्ष्मी लाल साह बैंकर्स, स्व0 रवीन्द्र लाल साह, स्व0 राजेन्द्र लाल साह, स्व0 जगदीश लाल साह, स्व0 पूरन चन्द्र तिवारी, स्व0 गोपाल कृष्ण तिवारी, स्व0 उदय लाल साह, स्व0 मोहन चन्द्र तिवारी प्रमुख हैं। रामलीला का अपनी एक विशेषता है कि इसका कलाकार एक छोटे पात्र से रामलीला में अभिनय की शुरूआत करता है और फिर अपने जीवन में रामलीला के कई पात्रों के अभिनय करता है। इस लिए जितने कलाकारों के बारे में जानकारी मिल सकी उनमें श्री शिव चरण पाण्डे, श्री श्याम लाल साह, श्री राजेन्द्र बोरा(त्रिभुवन गिरी),धरणीधर पाण्डे, मोहन चन्द्र पाण्डे, सुबोध कुमार साह, राजन सिंह बिष्ट, प्रभात कुमार साह, मनोज साह, हेम चन्द्र तिवारी, हेम त्रिपाठी, ललित मोहन जोशी, प्रकाश बिष्ट(सीनियर), प्रकाश बिष्ट(ज्यूनियर), दिनेश चन्द्र पन्त, राजेन्द्र पाण्डे, मनीष पाण्डे, ललित मोहन साह, के0 डी0 तिवारी, पवन वर्मा, कु0 किरन टम्टा, कु0 निकिता साह, कु0 ममता वाणी, श्रीमती चंचल तिवारी, राजेन्द्र तिवारी, मदन मोहन जोशी, चन्दन आर्या, हेम काण्डपाल, भाष्करा नन्द पाण्डे,

अभय साह, हरीश चन्द्र त्रिपाठी, ललित मोहन जोशी, दीप चन्द्र पाण्डे, श्रीमती कृतिका, लक्षित साह, कुमारी पूजा थापा, पंकज कुमार साह, अखिल कार्की, नवीन बिष्ट, श्रीमती पुष्पा, योगेश जोशी, विनीत बिष्ट, अभय उप्रेती, सुबोध नयाल, श्रीमती रश्मि साह, कु0 गीतांजली रावत, सूरज रावत, दीपक रावत, दिवान कनवाल, संतोष काण्डपाल, कंचन सिंह बिष्ट, तुषारकान्त साह, रोहित साह, धीरज साह, जगत मोहन जोशी, कुमारी चन्द्रकला भटट्, कु0 नवेदिता पन्त, कु0 दिव्या आर्या, विनोद थापा, शमशेर राणा, युवराज जोशी, कु0 वर्तिका साह, कु0 नम्रता बिष्ट, गोपाल राणा, संजय जोशी, हेम चन्द्र जोशी, मोहित कुमार आर्या, जगदीश गुप्ता, रक्षित कार्की, श्रीमती ज्योति राणा, कुमारी प्राची जोशी, कु0 कमला आर्या, कु0 विमला मेहरा, कंचन तिवारी, ब्रजेश साह, मनन साह, कु0 तनुजा साह, नरेन्द्र चुफाल, कु0 सुप्रिया साह, कु0 ईशा रस्तोगी, कु0 बबिता बिष्ट, कु0 सुनीता पाण्डे, कु0 जया मेर, कु0 बसन्ती मेर, कु0 सुनीता आर्या, प्रकाश सनवाल, कु0 पूनम साह, मंयक बिष्ट, मानस साह, विनय जोशी, कु0 तोषिता पाण्डे, कु0 वर्णिका बोरा, निखिल जोशी, कु0 मोनिका पाण्डे, नवीन वर्मा, कुमुद साह, अजय बिष्ट, गोकुल बिष्ट, कु0 मेघा साह, कु0 ममता आर्या, कु0 शोभा मेर, कु0 भावना बजेठा, कु0 प्राची जोशी, प्रज्जवल जोशी, कु0 शिवानी जोशी,श्रीमती ज्योति साह, कु0 हेमा मेर, कु0 नेहा जोशी, दिवान बिष्ट, जगत तिवारी, कु0 उर्वशी साह, कु0 भावना कार्की, कु0 शोभा मेर के नाम लिए जा सकते हैं। संस्था के दिवंगत हुए कलाकारो में स्व0 उदय लाल साह, स्व0 पूरन चन्द्र तिवारी, स्व0 मोहन चन्द्र तिवारी, स्व0 जगदीश लाल साह, स्व0 मोहन राम, स्व0 भैरव दत्त तिवारी, स्व0 रमेश चन्द्र साह, स्व0 हरेन्द्र सिंह नयाल, स्व0 जीवन सिंह रावत शामिल हैं। हुक्का क्लब की रामलीला में स्त्री पात्रों का अभिनय करने वाले कलाकारो में संजय जोशी, हेम चन्द्र जोशी, राजेन्द्र तिवारी, स्व0 भैरव तिवारी, स्व0 पूरन चन्द्र तिवारी, जगदीश वर्मा, स्व0 मोहन राम, शमशेर राणा शामिल हैं।

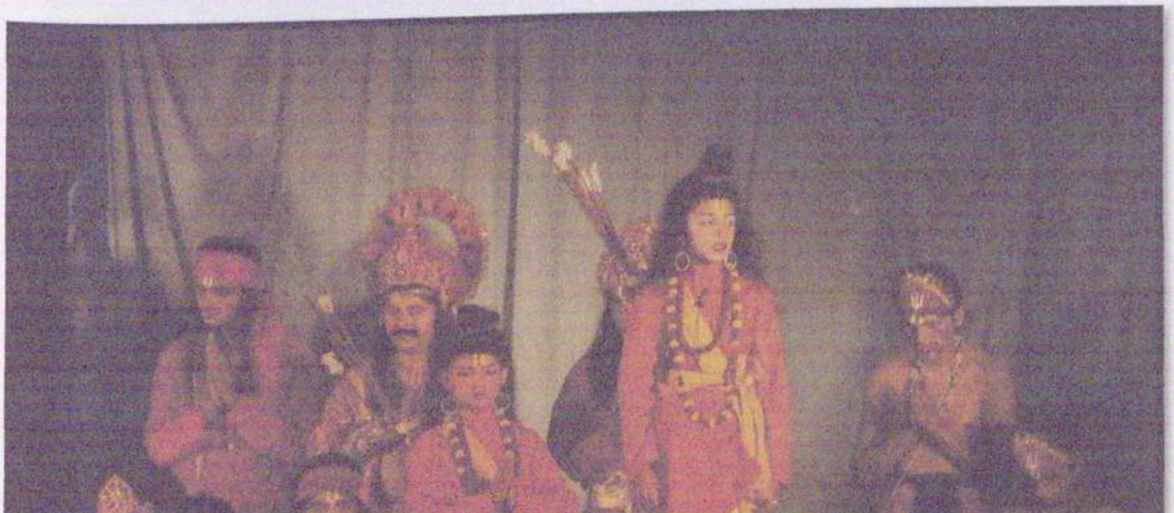

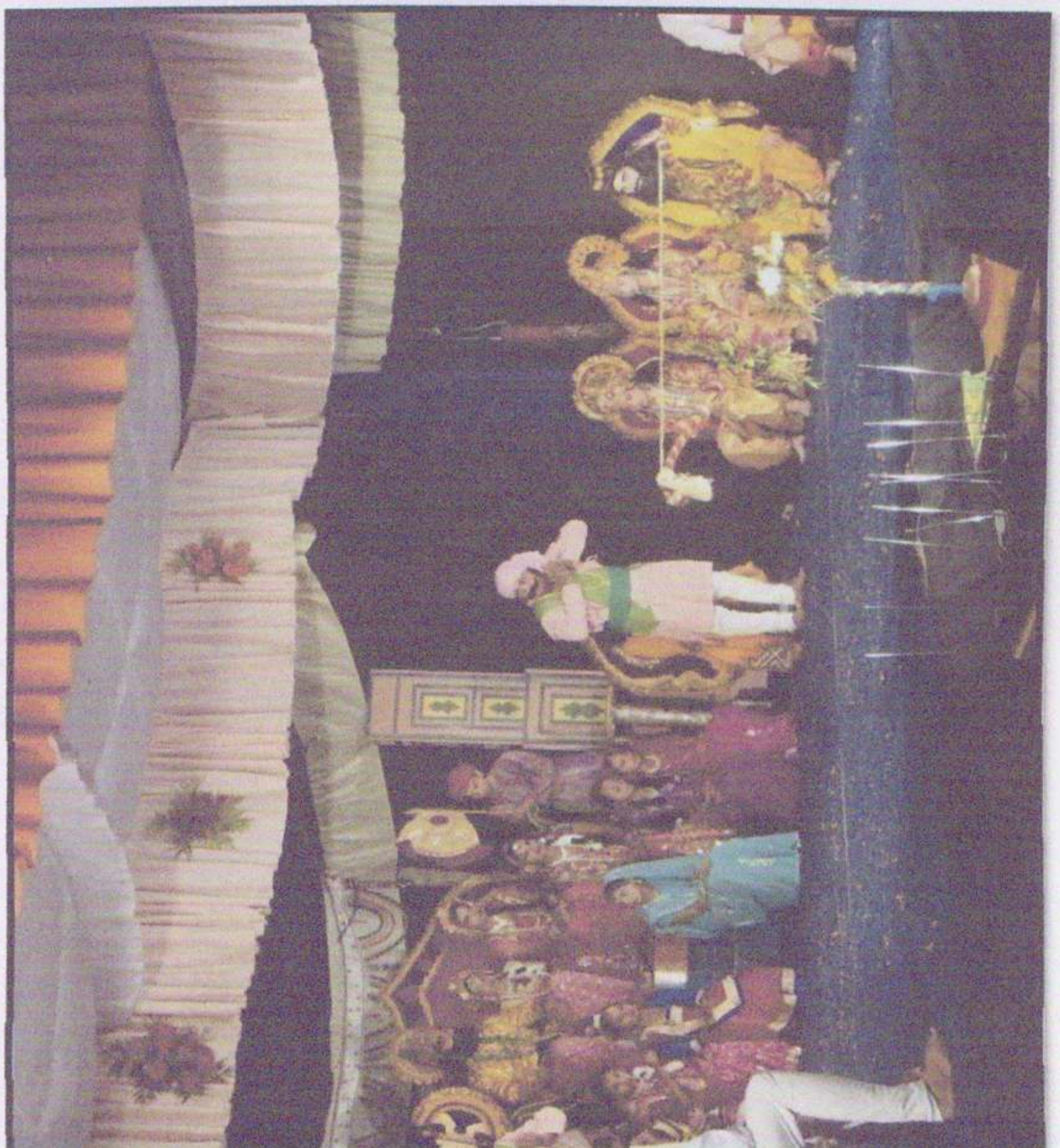

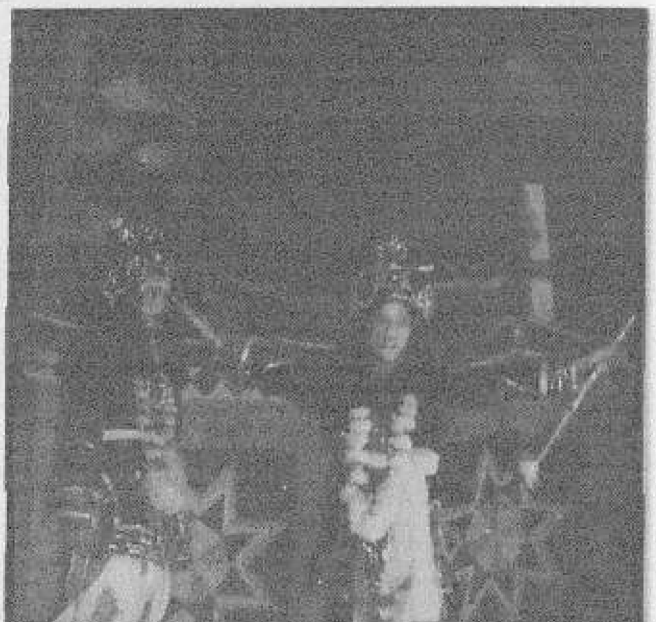

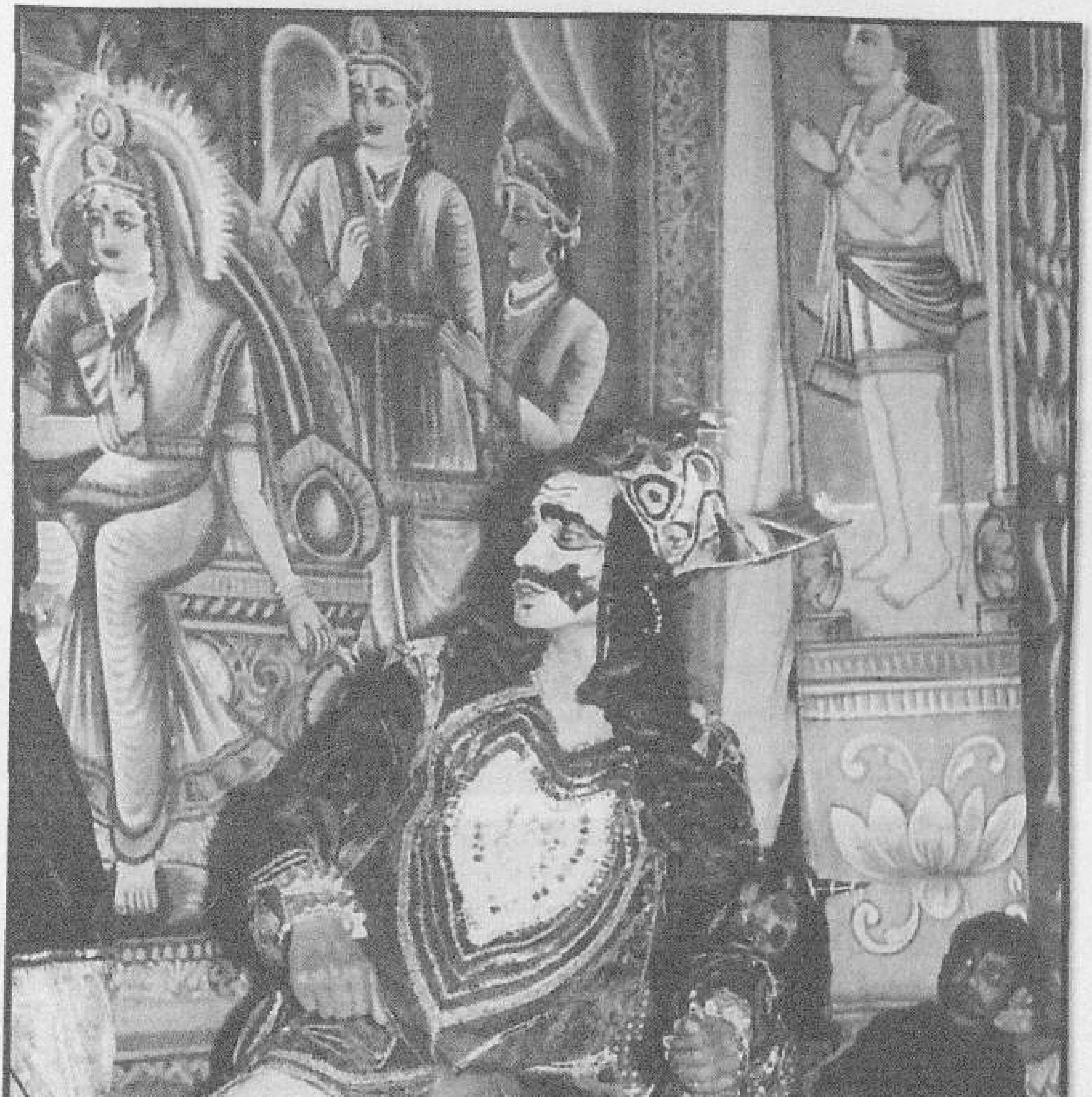

धारानौला की रामलीला

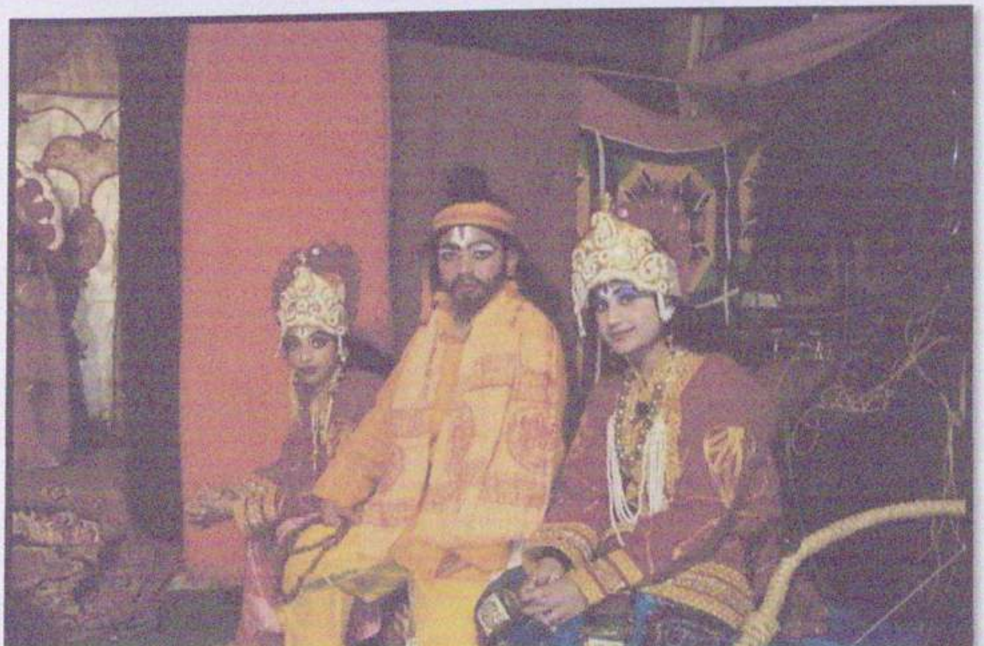

नन्दा देवी की रामलीला

बद्रेश्वर की ऐतिहासिक रामलीला सन् 1948 में बद्रेश्वर के स्थान पर विवाद उत्पन्न होने से बन्द हो गयीं। जनता ने आन्दोलन किया धारा 144 लगा दीं गई गिरफ्तारिया हुई मंचन का क्रम टूटा। फिर 1954 में शरदोत्सव हुआ जिसमें डॉ भवानी दत्त पाण्डे की अध्यक्षता में जी0आई0सी0 में रामलीला का भव्य आयोजन हुआ। लाला बाजार के देवेन्द्र लाल साह के निवास पर तालीम की गई।इस रामलीला में भुवन चन्द्र जोशी ने राम, जगन्नाथ सनवाल ने लक्ष्मण, रामनाथ ने सीता का अभिनय किया। 1954 में रामलीला होने के बाद फिर अवरोध उत्पन्न हो गया। फिर डॉ0 जगन्नाथ सनवाल जी के प्रयासों से त्यूनरा में रामलीला का मंचन 1957 में किया। इनके नेतृत्व में बद्रेश्वर की रामलीला के अधिकतर कलाकार एकत्रित हो गए और रामलीला का सफल मंचन किया गया। त्यूनरा में 2 साल इसका मंचन हुआ उसके उपरान्त सन् 1960 में नंदादेवी मन्दिर के प्रांगण में रामलीला का मंचन किया गया। कालान्तर में बद्रेश्वर की राम लीला ने जी0आई0सी0 से त्यूनरा और फिर नंदा देवी मन्दिर तक की यात्रा तय की जोकि नंदा देवी की रामलीला के रूप में वर्तमान तक जारी है।

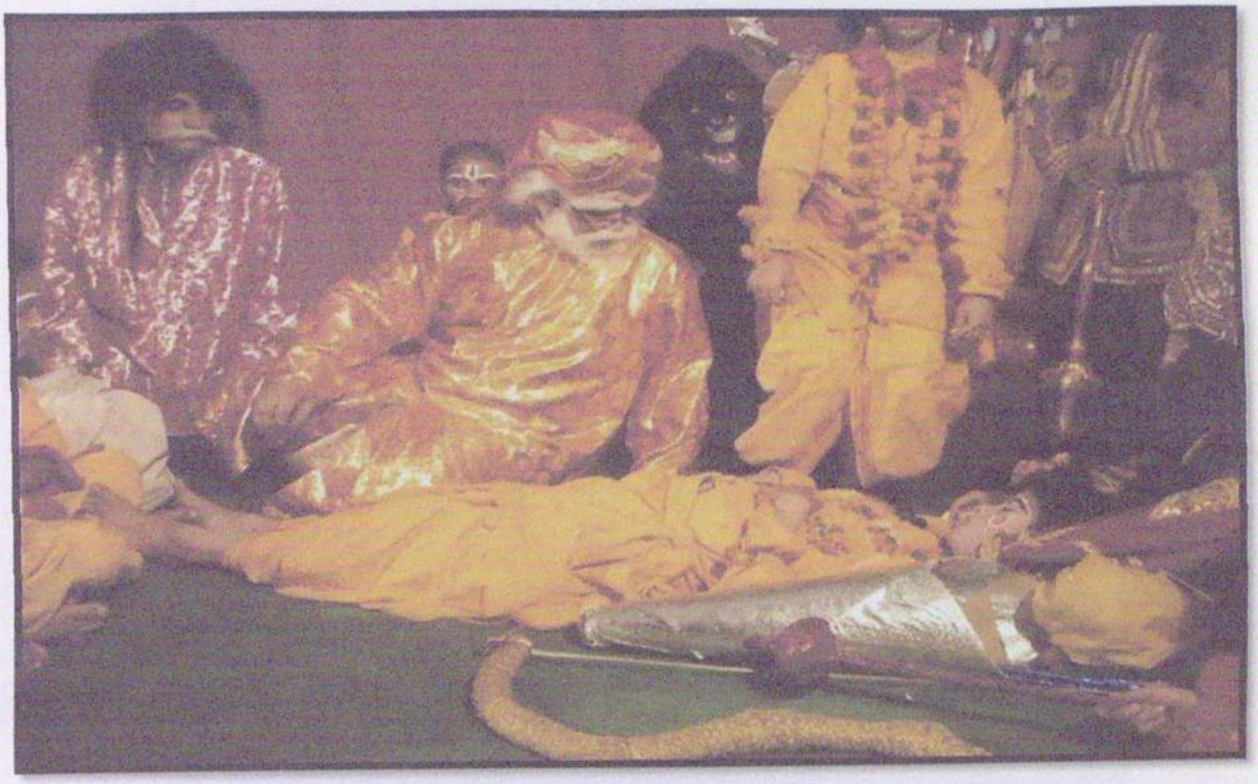

राजपुरा की रामलीला

कर्नाटक खोला की रामलीला

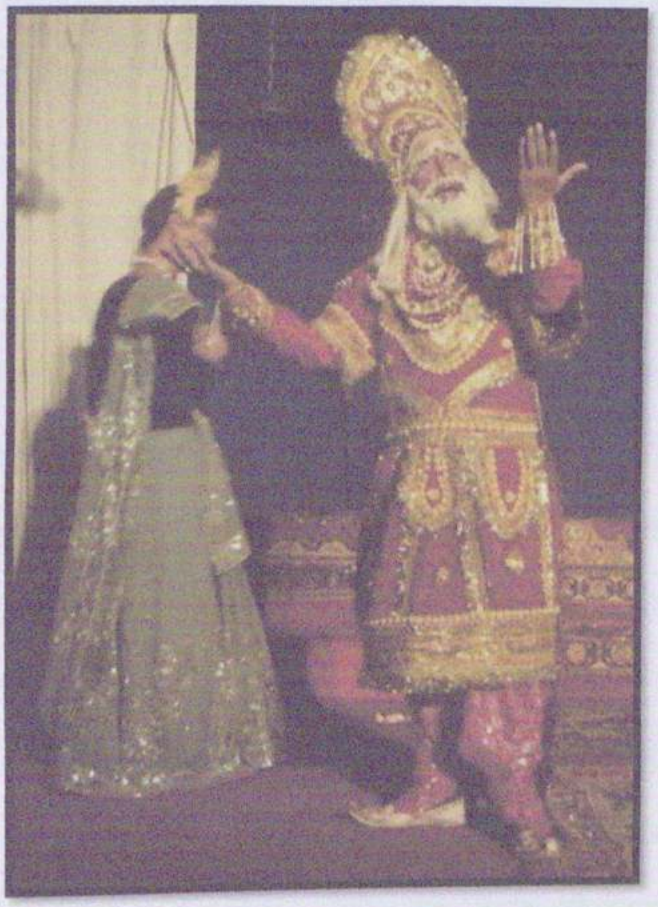

तल्लीताल नैनीताल की रामलीला

119 वर्ष पूर्व 1897 में प्रथम बार स्व0 दुर्गा साह ने वीर भट्टी (दुर्गापुर) में रामलीला का मंचन किया। उन्हे इस आयोजन में स्थानीय हिन्दुओं के अतिरिक्त मुस्लिम भाईयों का भी भरपुर सहयोग मिला। इस कार्य में रायबहादुर स्व0 हरिदत्त जोशी ने उनका साथ दिया। उन दिनो वीर भट्टी में होने वाली इस रामलीला में पाटिया, सतराली व सिलौटी के कलाकारों को आमन्त्रित किया जाता था। ऐसा कहा जाता है कि रामलीला मंचन के शुरूआती वर्षो में रामलीला पॉच दिवसीय हुआ करती थी। हिन्दु मुस्लिम भाईचारे की प्रतीक इस रामलीला में उन दिनो जनक और मारीच का अभिनय अकबर हुसैन और अंगद, सुमन्त के पात्र का अभिनय खुदा बख्श किया करते थे। इनके अभिनय को जनता काफी पसन्द किया करती थी। अभिनय के अतिरिक्त ये दोनो रामलीला में कलाकारों का मेकअप व मंच सज्जा से सम्बंधित कार्य भी किया करते थे। वीर भट्टी में यह रामलीला 13 वर्षो तक हुई और उसके उपरान्त सन् 1907 में रामलीला का मंचन तल्लीताल में होने लगा। कलाकार और व्यवस्थापक वही लोग थे मात्र स्थान का परिवर्तन हुआ था। सन् 1927 में भारत रत्न पं0 गोविन्द बल्लभ पन्त तल्लीताल की रामलीला समिति के अध्यक्ष बनाए गए उनके रामलीला से जुडते ही कई लोगो का सहयोग संसीा को मिलना शुरू हुआ जिससे मंचन का स्तर ओर अच्छा होता चला गया।

तल्लीताल नैनीताल की रामलीला के कुछ प्रमुख कलाकार जिनके बारे में विभिन्न माध्यमों से जानकारी मिल पाई उनमें राम के पात्र का सशक्त अभिनय करने वाले कलाकारों में देवी लाल साह, कुंडल चन्द्र जोशी, हेम सनवाल, गिरीश मठपाल, संजय कुमार चौधरी। लक्ष्मण की भूमिका में सुरेश चन्द्र जोशी, मनमोहन जोशी, पूरन मठपाल, देवेन्द्र कुमार गुरूरानी। सीता के पात्र का अभिनय करने वाले कलाकारों में देवी दत्त जोशी, ललित मोहन जोशी, राजेन्द्र लाल साह। रावण के पात्र का अभिनय करने वाले

कलाकारों में केशव दत्त , पद्मा दत्त कपिल, हीरा लाल साह महेश लाल साह और राजेश त्रिपाठी। दशरथ के पात्र का अभिनय करने वाले कलाकारो में नित्यानन्द पन्त, देवी दत्त गुरूरानी और बंशी लाल वर्मा। जनक की भूमिका निभाने वाले कलाकारों में नन्दू साह और दिलबाग राय। परशुराम का यादगार अभिनय करने वाले कलाकारों में शिवदत्त मठपाल,सुरेश चन्द्र कपिल। सुमन्त और अंगद के पात्र का अभिनय मनोहर लाल साह। सूर्पनखा के पात्र के रूप में नारायण लाल और जगदीश पाण्डे। मेघनाद और सुग्रीव के पात्र के रूप में कैलाश चन्द्र भटट्। हास्य कलाकार जिसकी रामलीला के दृश्य बदलने और दर्शको बांधे रखने में अहम् भूमिका होती थी उनमें धनी लाल साह, गोविन्द तिवारी, बहार साह, मोहन चन्द्र पन्त प्रमुख रहे जिन्हे जनमानस की भरपूर वाहवाही मिली। कलाकारों का मेकअप करने वालो में हरीश गुरूरानी, विश्वंभर नाथ साह सखा, ठाकुर दास साह, जगदीश प्रसाद साह व सईब अहमद शामिल हैं। संगीत निर्देशको में प्रेम बल्लभ पाण्डे, भवानी दास वर्मा, अम्बा दत्त जोशी, अनूप साह, राजेश त्रिपाठी (हारमोनियम वादक) तथा मनोरथ मिश्र, शिवलाल साह, लीलाधर पाण्डे, मोहन चन्द्र पन्त, नन्द लाल साह, नवीन बेगाना, नरेन्द्र पन्त (तबला वादक) का सहयोग रहता था और वर्तमान में भी इनमे से कुछ का सहयोग रहता है।

इन कुछ पुराने कलाकारों के अतिरिक्त अन्य नाम भी हैं जिसका उल्लेख वर्तमान समय के कलाकारों के रूप में किया जाना आवश्यक है उनमें शामिल हैं रवि कुमार, दिनेश जोशी, दीपू लोहनी, पृथ्वीराज सिंह नेगी, हिमांशु बिष्ट, कुणाल तिवारी, कु0 गुंजन शर्मा, सतीश चन्द्र, संतोष, डॉ0 भुवन सिंह नेगी, रवीन्द्र पाण्डे, हेमन्त रूवाली, संजय भटट्, धीरज उपाध्याय, गौरव बिष्ट, आशु लोहनी।

मल्लीताल नैनीताल की रामलीला के प्रमुख कलाकार

पिछली शताब्दी के प्रथम और द्वितीय दशक में राम सेवक, रामानुरागी दर्शको के लिए भगवती नैना देवी मन्दिर में रामलीला का आयेजन करते थे। वर्तमान राधा कृष्ण मन्दिर के हाल के स्थान पर उस समय मन्दिर के पुजारी का भवन था। उसी के छोटे से ऑगन में साज सज्जा एकत्र कर राम की लीला दर्शायी जाती थी तथा जन समूह मन्दिर के प्रागण में बैठ कर लीला का आनन्द लेता था। मन्दिर का शान्त वातावरण, सरोवर का तट और नवरात्रियों के निवीड़ अन्धकार में, लैम्प और गैस के प्रकाश में एकत्र लोग लीला का आनन्द लेते थे। उसके उपरान्त वर्तमान इलाहाबाद के मैदान में रामलीला का मंचन हुआ उस समय यहाँ पर बैक की बिल्डिग नही बनी थीं कुछ वर्ष यही पर मंचन करने के उपरान्त एक उपयुक्त सीन की खोज की गई जो बाजार के मध्य हो । जो स्थल पसंद किया गया वह देवी लालसाह जगाति की व्यक्तिगत सम्पत्ति थीं जो उनके द्वारा इस कार्य हेतु नगर पालिका को दान स्वरूप प्रदान कर दी गई। 1928 में चेतराम ठुलघरिया जी ने इस सीन पर स्थाई रंगमंच बनाने का विचार किया ओर इस मंशा से नगर पालिका से एक प्रस्ताव पारित किया गया और 1929 को राम सेवक सभा का यह स्थायीं मंच बनकर तैयार हो गया। जिसमें वर्तमान तक प्रत्येक वर्ष रामलीला का आयोजन किया जाता है। रामलीला में शुरूआत से अब तक जिन कलाकारों के अभिनय को आज भी याद किया जाता हे उनमें शाामिल हैं गणेश दत्त काण्डपाल–शत्रुघन, भरत, राम, विभिषण। गंगा प्रसाद साह– राम, सीता, परशुराम, दशरथ, नारद, रावण, श्रवण कुमार, बाली और सुग्रीव। भगवान दास साह– मेघनाद, केवट। भवानी दास साह और जुगल किशोर साह– परशुराम। लक्ष्मी दत्त पाण्डे– मन्थरा, सुषेन वैध, विदूषक। किशोरी लाल साह–अंगद। आनन्द सिंह मामू– रावण। नाथ साह– राम, कैकई, शबरी, मन्दोदरी। इन्द्रलाल साह ठुलघरिया और भोला दत्त–

राम। श्याम लाल वर्मा और प्यारे लाल– लक्ष्मण। पूर्णानन्द– सीता, देवीं लाल– दशरथ। घनानन्द बुढलाकोटी–कैकई। पद्म सिंह और भोला दत्त – हनुमान। के0सी0साह और रघुवर दत्त भटट्–रावण। परसी साह और जुगल किशोर–परशुराम। हीरा लाल, किशोरी लाल व भवानी दास साह –अंगद। पूर्णानन्द,बंसीं लाल,चन्द्र दत्त गुरूरानी व प्रेम बल्लभ भटट्–सूर्पनखा। देवीं लाल साह और जई दत्त पाण्डे– दशरथ। त्रिलोचन पाण्डे–विश्वामित्र। डॉ0 आनन्द लाल साह– सुमन्त। प्राम्टिंग का सबसे महत्वपूर्ण कार्य का दायित्व शुरूआती समय में परसी साह, इन्द्र लाल साह, शंकर लाल साह, सुन्दर लाल साह,चन्द्र लाल साह,गंगा प्रसाद साह, राधेश्याम साह।

17 वर्ष पूर्व के रामलीला के कलाकारों की सूचि प्राप्त हुई जिसे प्रस्तुत किया जा रहा है। राम– निखिल बिष्ट। सीता– कामाक्षी बिष्ट। रावण, परशुराम और दशरथ–कैलाश जोशी। भरत– ज्योति जोशी। कैकई–लीला बिष्ट। मंथरा– मोहन सिह। लक्ष्मण– प्रकाश। हनुमान– नन्दन सिंह। कौशल्या–नेहा जोशी, शत्रुघन–पंकज रावत।सूर्पनखा– पार्वती बिष्ट। कुम्भकरण–गणेश लाल साह। रामलीला में संगीत निर्देशन का कार्य आरम्भ में ए0ड्रा0क्लब तथा हरिहर पार्टी के लोगो ने सम्भाला। फिर जईदत्त तिवारी,गोपाल दत्त तिवारी ने संगीत निर्देशन किया। उनके पश्चात गोविन्द राम पाण्डे , बिहारी लाल साह, पूरन लाल साह, जुगल किशोर साह, मदन गोपाल भटट्, दुर्गालाल साह, प्यारे लाल साह, गिरधारी लाल साह, मुन्ना लाल साह, जवाहर लाल साह, ने तालिम और संगीत निर्देशन का कार्य किया। मास्टर रतन तो लगभग पूरे चार दशक तक रामलीला में हारमोनियम पर संगत करते रहे।

श्री राम सेवक सभा नैनीताल के अध्यक्षों व मंत्रियों की सूची

अध्यक्ष

1918
दुर्गा लाल साह, खजांची
1919
जई लाल साह, वकील
1920 से 22 तक
चन्द्र लाल साह
1923 व 1924
चेत राम साह
1925 व 1926
चन्द्र लाल साह
1927 से 1928
केशी साह
1929
गंगा दत्त मासीवाल
1930
बाबू तुला राम
1931 से 1935
केशी साह
1936 से 1951
शिव लाल साह
1952 व 1953
सुन्दर लाल साह
1954
मनोहर लाल साह
1955–61
सुन्दर लाल साह आढ़ती

मंत्री

1918
तुलाराम
1919 से 1922
इन्द्र लाल साह
1923 से 1925
बांके लाल साह
1926 व 1927
तुला राम
1928 से 1933
कुन्दन लाल साह
1934 से 1942
मथुरा साह
1942 व 1943
सुन्दर लाल साह
1944
मथुरा साह
1945
विशम्भर लाल साह
1946 से 1947
चन्द्र लाल साह
1948
गिरधारी लाल साह
1949
चन्द्र लाल साह
1950 से 1954
प्यारे लाल साह

अध्यक्ष

1961
गंगा प्रसाद साह
1962 – 1963
सुन्दर लाल साह आढ़ती
1964 व 1965
रामगोपाल साह
1966 से 1972
चन्द्र लाल साह
1973 से 1976
बच्ची सिंह पवार
1977 से 1979
पूरन लाल साह
1980 व 1982
राधेश्याम साह
1983 से 1988
बच्ची सिंह पवार
1989–91
गंगा प्रसाद साह
1992–
इन्द्र लाल साह
1993–97
अशोक साह
1998–2001
गिरीश जोशी
2002–2003
सुधीर साह

मंत्री

1955–1956
मथुरा लाल साह
1957
विशम्भर लाल साह
1958 से 1960
राधेश्याम साह
1961
भवानी दास साह
1962 से 1963
सुन्दर लाल साह 'कपड़ा'
1964 से 1965
गंगा प्रसाद साह
1966 से 1971
मथुरा साह
1972 से 1985
राजेन्द्र लाल साह जगाती
1986 से 1991
पूरन लाल साह
1992 से 1997
देवेन्द्र लाल साह
1998 से 2003
मुकुल जोशी

रामलीला महोत्सवों के मंत्रियों की सूची

1918 व 1919
इन्द्र लाल साह
1920 से 1925
बांके लाल तोला
1926 से 1928
बाबू तुला राम
1929 – 1931
केशी साह
1932
सुन्दर लाल साह
1933 से 1937
प्रेम बल्लभ भट्ट
1938 व 1939
गोविन्द बल्लभ पाण्डे
1942
सुन्दर लाल साह
1943 व 1944
विशम्भर लाल साह
1945
प्यारे लाल साह/
लक्ष्मी लाल साह
(कमांडर साहब)
1946
प्यारे लाल साह
1947 व 1948
चन्द्र लाल साह
1949
गिरधारी लाल साह
1950
भवानी दास साह
1951
राधेश्याम साह
1952
भवानी दास साह
1953
श्री राम सेवक सभा
1954
आनन्द सिंह 'मामू'
1955
भवानी दास साह
1956 से 1958
आनन्द सिंह 'मामू'
1959
राधेश्याम साह
1960
श्री राम सेवक सभा
1961
हीरा लाल साह
1962
राधेश्याम साह
1963–1964
राजन लाल साह 'जगाती'
1965
गंगा प्रसाद साह
1966
राधेश्याम साह
1967–68
पूरन लाल साह
1969–1970
प्यारे लाल साह
1971–1976
सुनील साह
1977–1980
राधेश्याम साह
1981–1982
अनिल साह
1983–1986
जगदीश लोहनी
1987
श्री राम सेवक सभा
1988–1989
गणेश लाल साह
1990
श्री राम सेवक सभा
1991–1992
सुधीर साह
1993–1996
मुकुल जोशी
1997
देवेन्द्र लाल साह (संयुक्त)
डॉ० अखिलेश भट्ट (संयुक्त)
1998
गंगा प्रसाद साह
1999
मुकुल जोशी
2000
गिरीश जोशी (संयुक्त)
मुकुल जोशी (संयुक्त)
2001
मुकुल जोशी
2002–2003
सुधीर साह (संयुक्त)
मुकुल जोशी (संयुक्त)

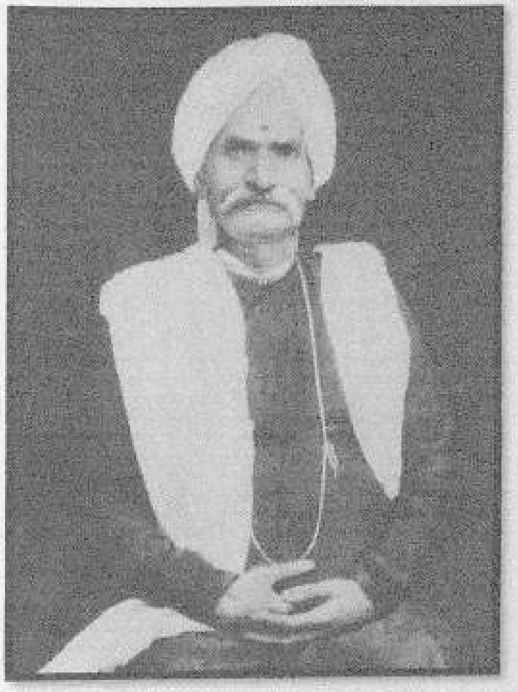

स्व0 चेतराम साह ठुलघरिया

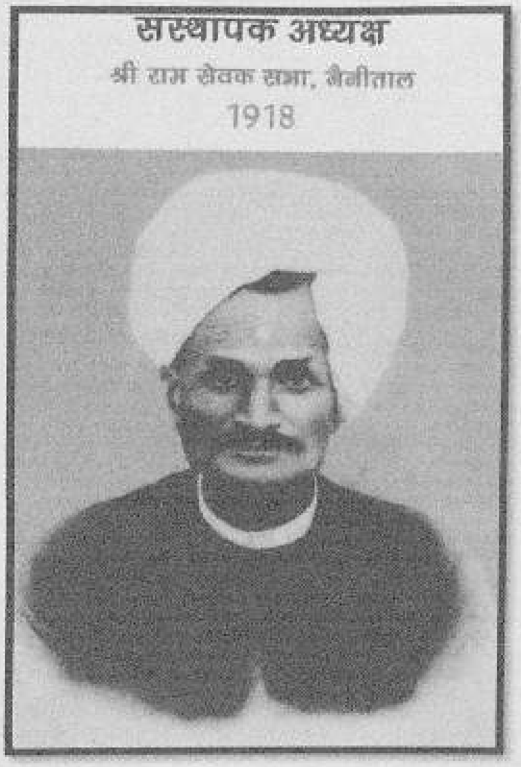

नैनीताल

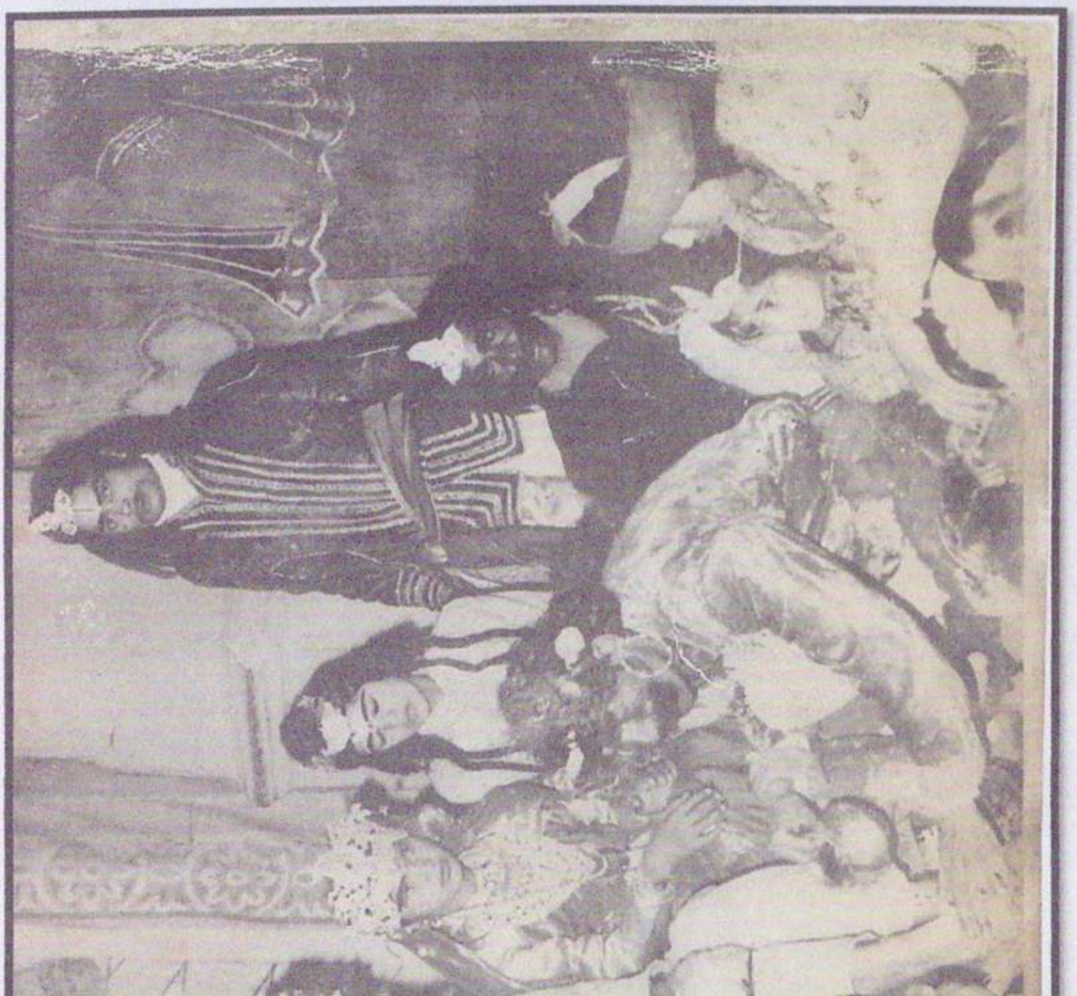

प्रगतिशील सांस्कृतिक पर्वतीय समिति(रामनगर)

रामनगर में कुमाऊँनी शैली की रामलीला का मंचन शुरूआती दौर में प्रगतिशील सांस्कृतिक पर्वतीय परिषद के तत्वावधान में हुआ उसके उपरान्त इस संस्था का नाम बदल कर प्रगतिशील सांस्कृतिक पर्वतीय समिति(रामनगर)रख दिया गया इसके तत्वावधान में रामलीला का मंचन भव्यता के साथ शुरू किया गया। प्रगतिशील सांस्कृतिक पर्वतीय समिति की स्थापना 1974 में प्रेम बल्लभ बेलवाल, देवी दत्त छिम्बाल, आनन्द बल्लभ बेलवाल,त्रिलोक सिंह कठायत , हरीश चन्द्र बेलवाल, कैप्टन पी0डी0 मिश्रा, केशव दत्त पाण्डे, कौस्तुभा नन्द पाण्डे, दया कृष्ण शर्मा, सुरेश पन्त, दिनेश भटट्, गणेश दत्त भण्डारी, नन्द किशोर नैनवाल, दुर्गादत्त जोशी, त्रिलोक सिंह बिष्ट, पी0सी मुथन्ना के सहयोग से हुई। आनन्द बल्लभ बेलवाल संस्थापक अध्यक्ष थे और पी0सी मुथन्ना संस्थापक सचिव थे। जिन कलाकारों ने यहाँ पर यादगार अभिनय किए उनमें राम के अभिनय में स्व0 बालम सिंह रावत, रावण के अभिनय में चन्दन सिंह, हनुमान के अभिनय में मोहन प्रसाद, दशरथ के अभिनय में श्रीनिवास जोशी, कैकई के अभिनय में गणेश दत्त भण्डारी शामिल थे। संगीत के अध्यापक दिनेश पाठक बताते हैं कि हनुमान के पात्र का जिवन्त अभिनय करने वाले कलाकार मोहन प्रसाद हनुमान जी के अनन्य भक्त थे और उनकी भक्ति में ऐसे डूबे की संयासी ही हो गए। सन् 1975 में के रामलीला मंचन में हनुमान जी को 200 मीटर की दूरी तक उडते दिखाया गया जो काफी वर्षो तक चर्चा में बना रहा। ऐसा बताया गया की शुरू के वर्षो में राम राज्याभिषेक की घोषणा वाले दिन रामलीला मैदान में असली बाजार लगा कर व्यापारियों को आमन्त्रित किया जाता था।इस रामलीला कमेटी ने नैनीताल ,लोहाघाट गंगोलीहाट में होने वाली रामलीला प्रतियोगिता में कई बार प्रथम स्थान प्राप्त किया।

मेकअप

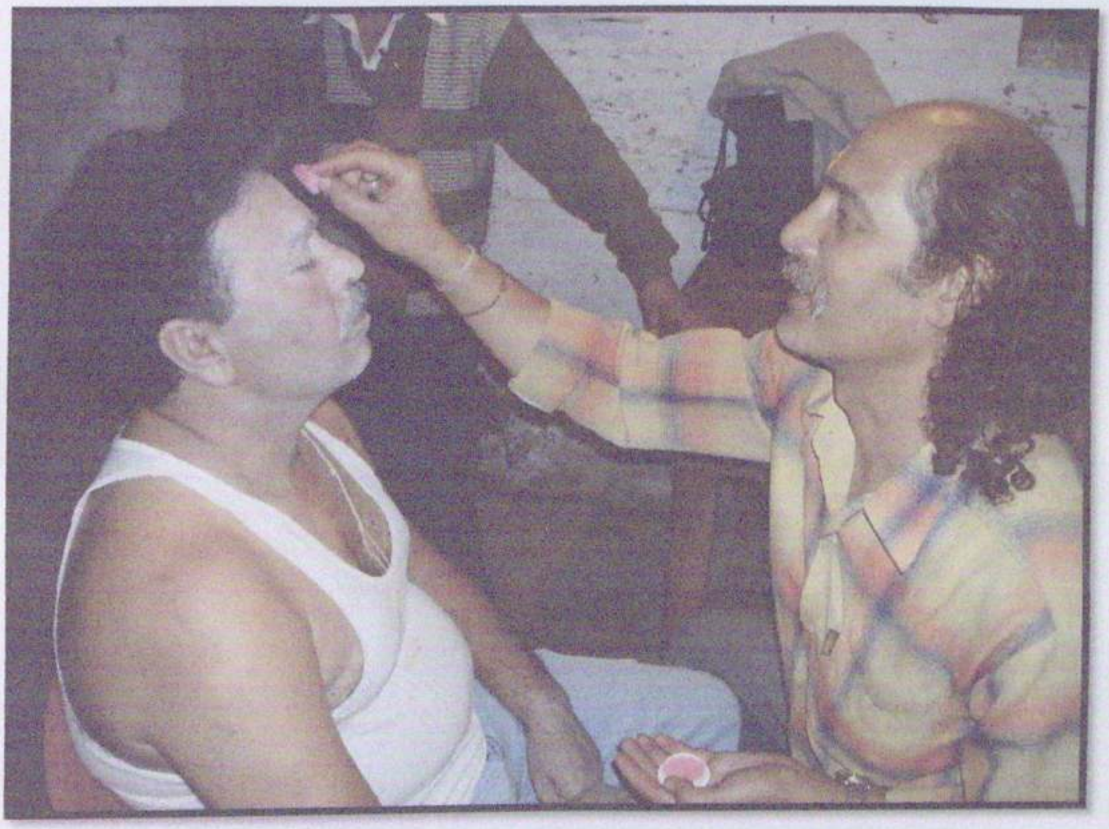

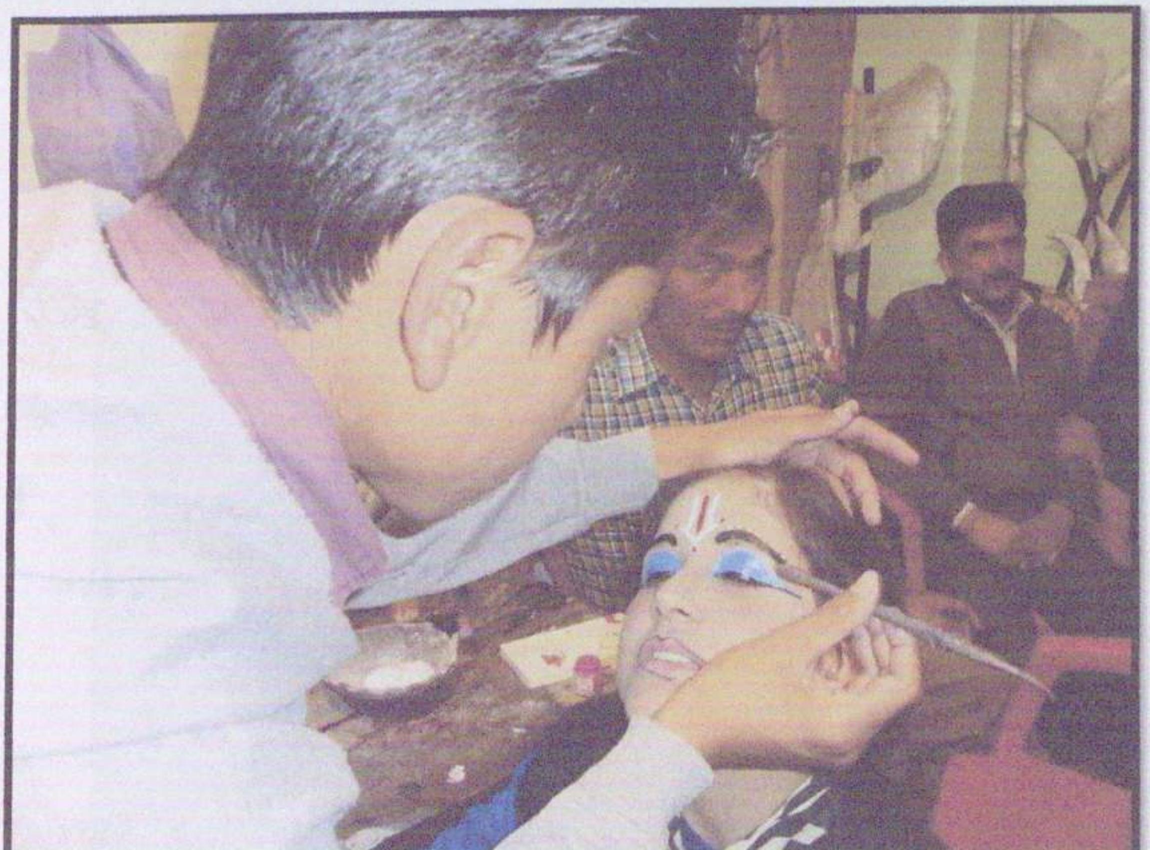

मेकअप

मेकअप

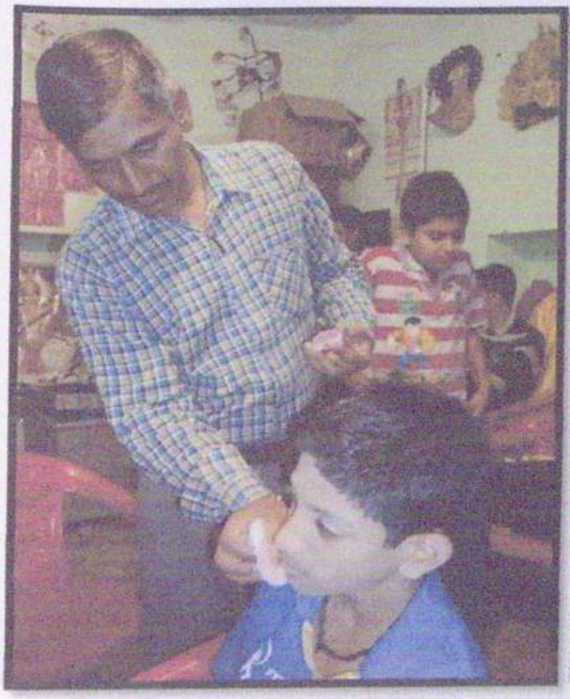

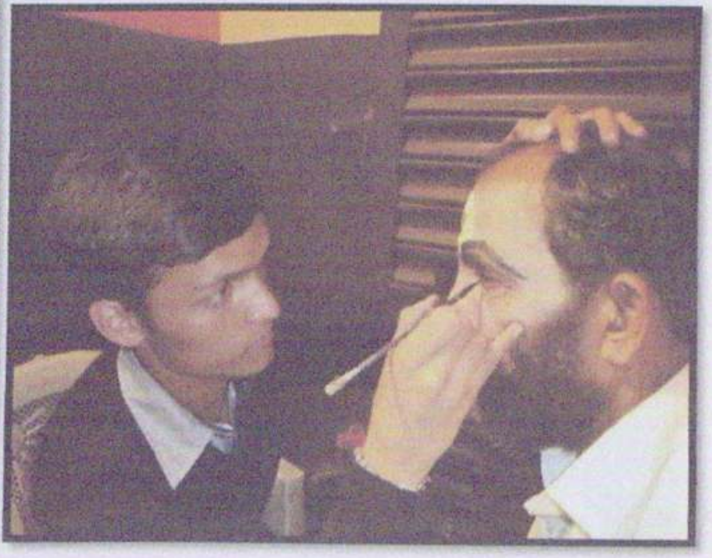

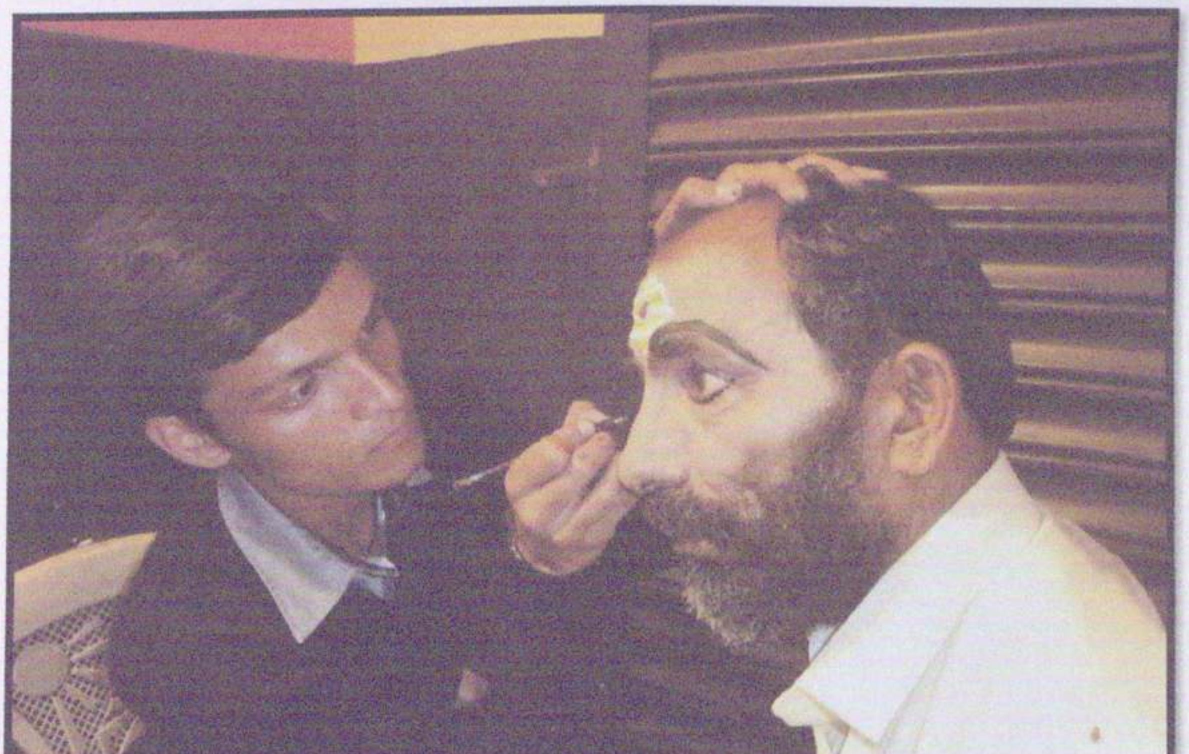

मेकअप

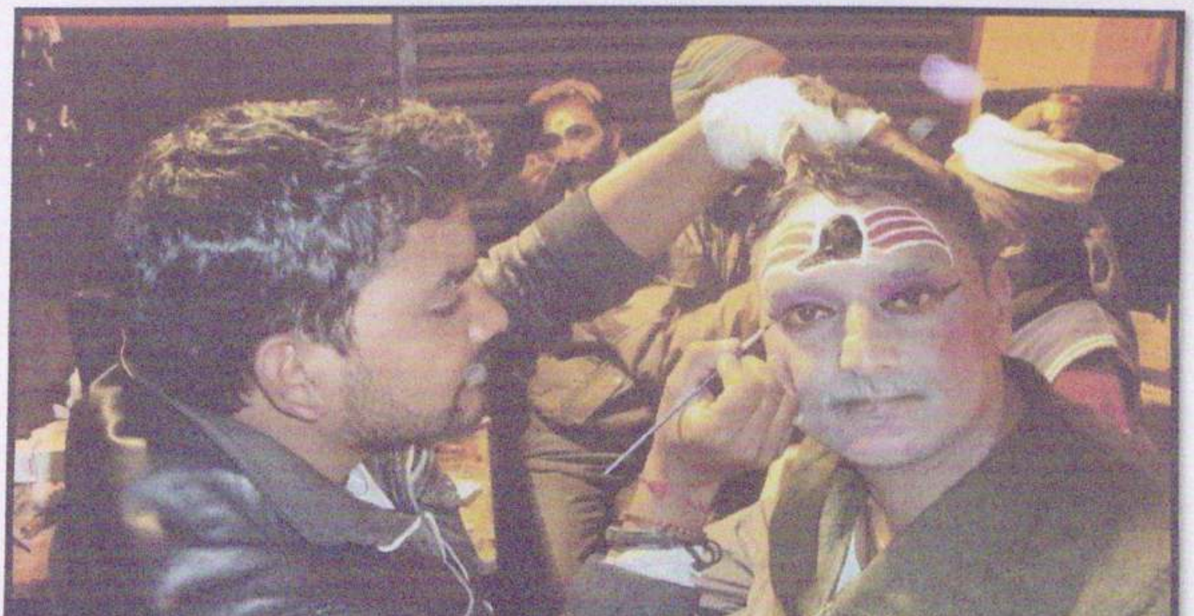

मेकअप

मेकअप

मेकअप

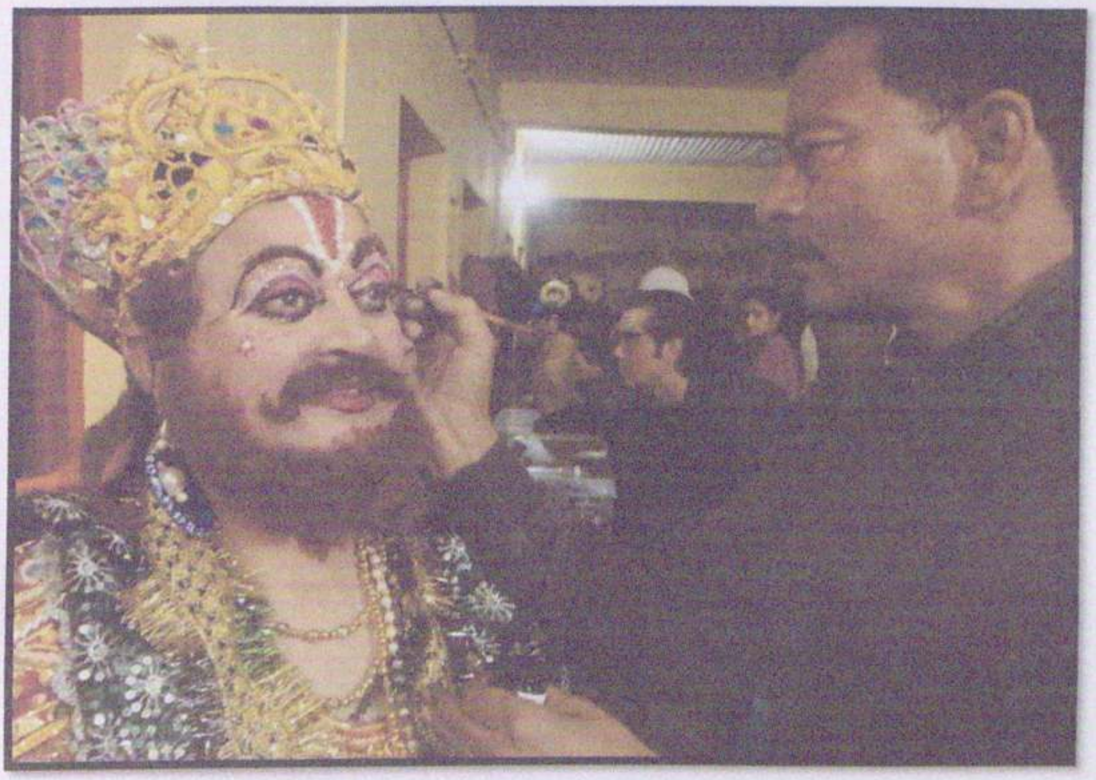

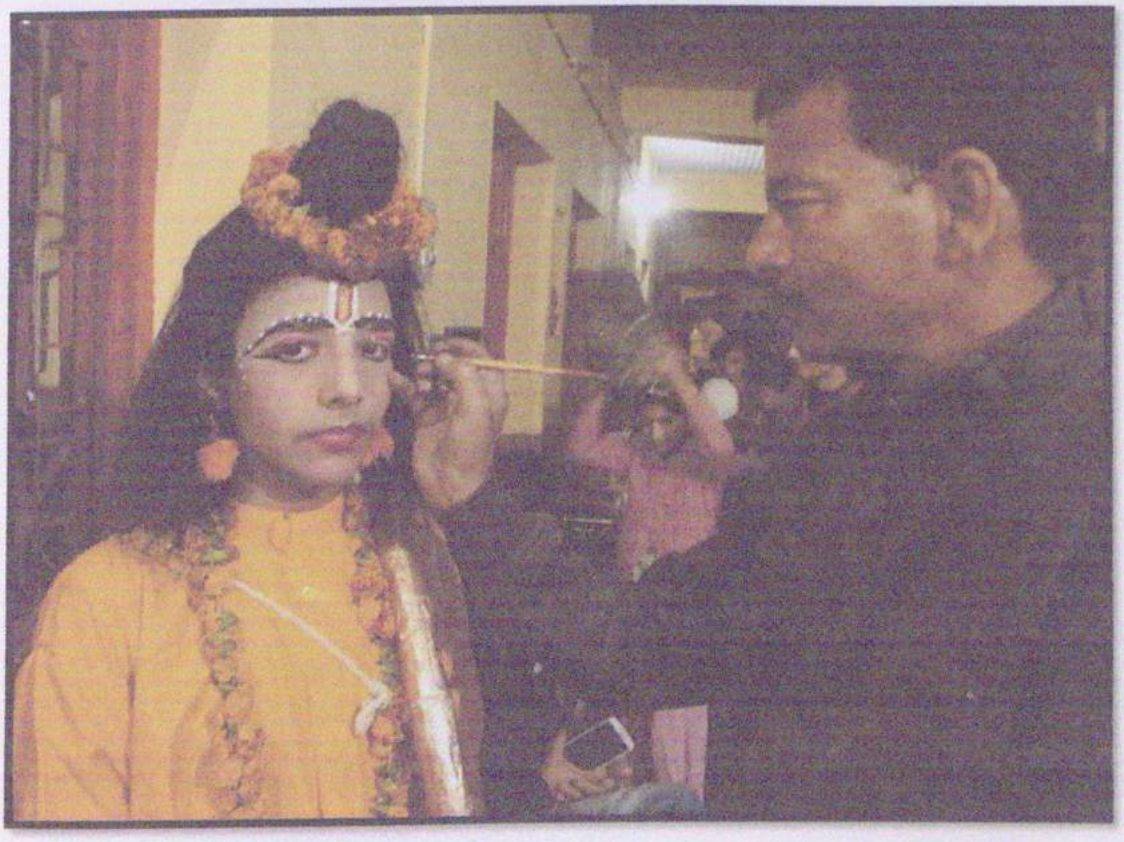

मेकअप

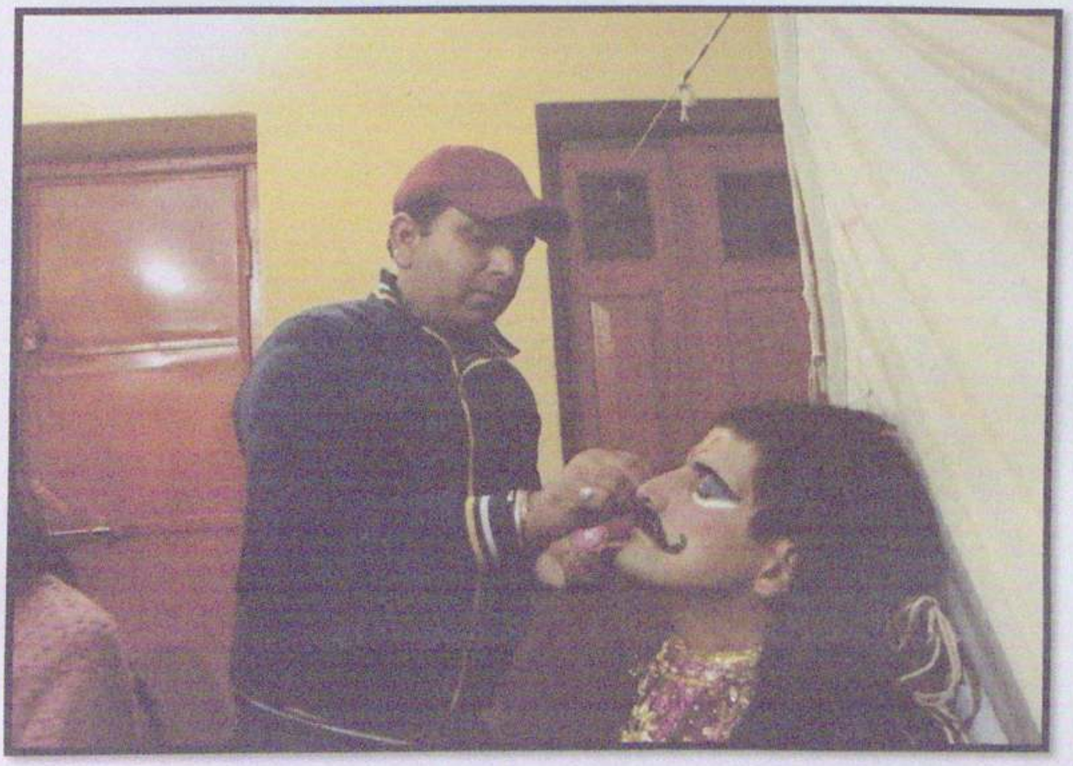

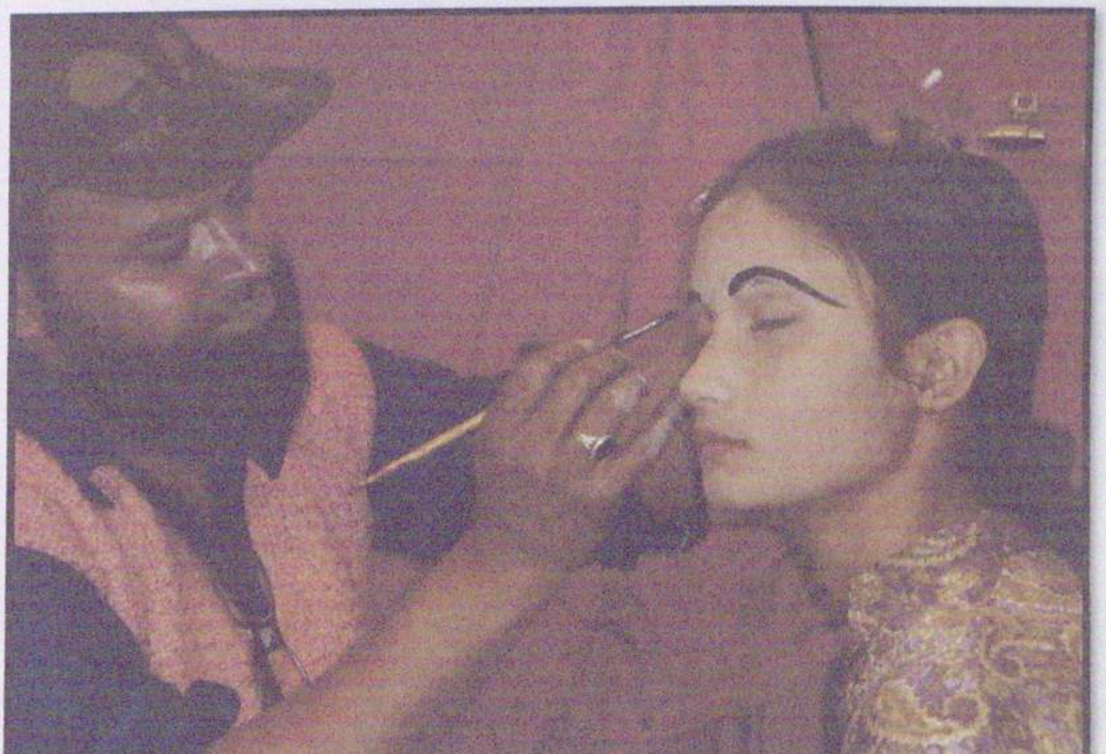

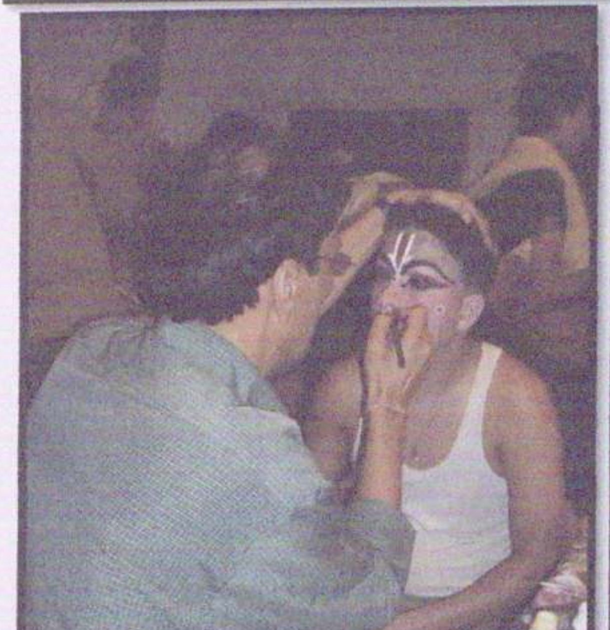

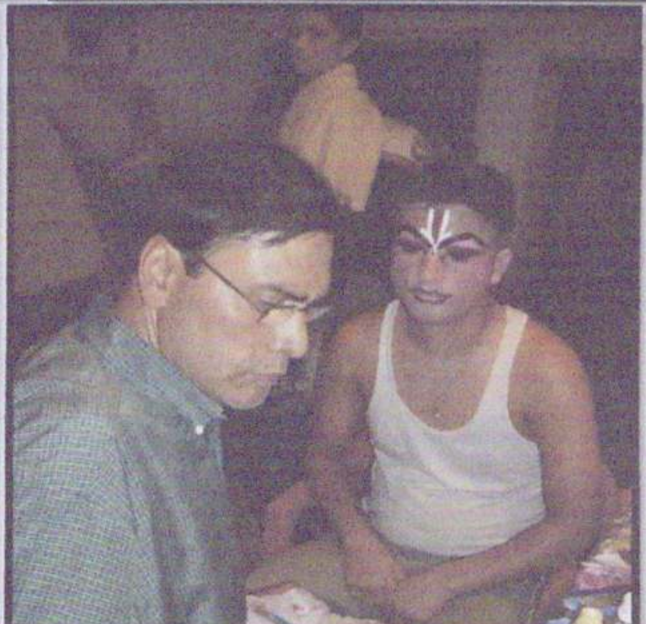

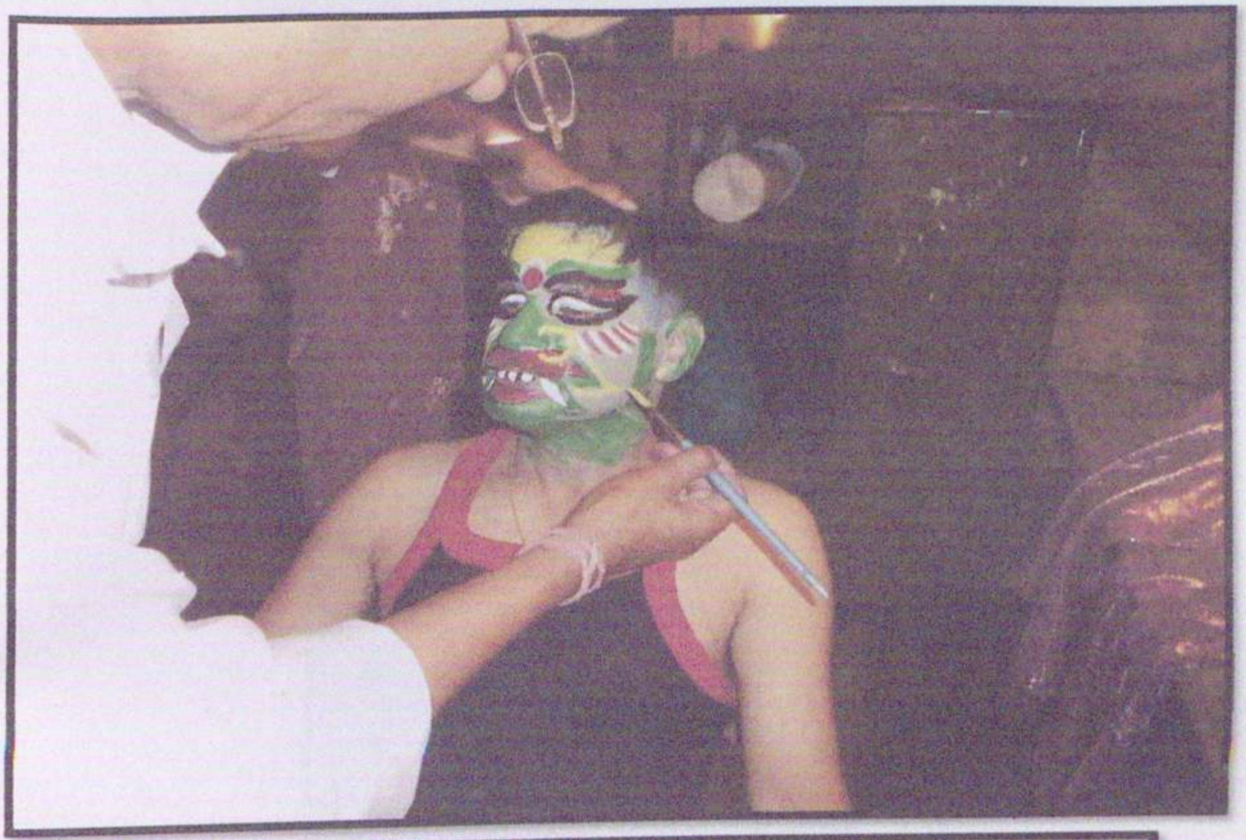

रानीखेत की रामलीला से

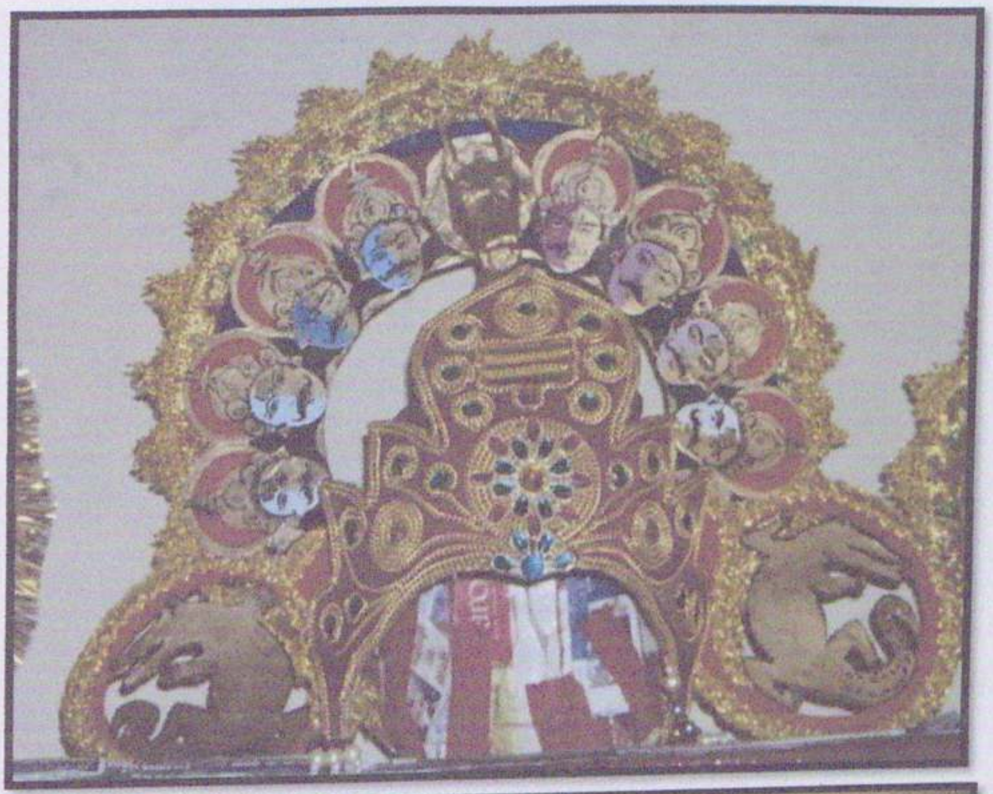

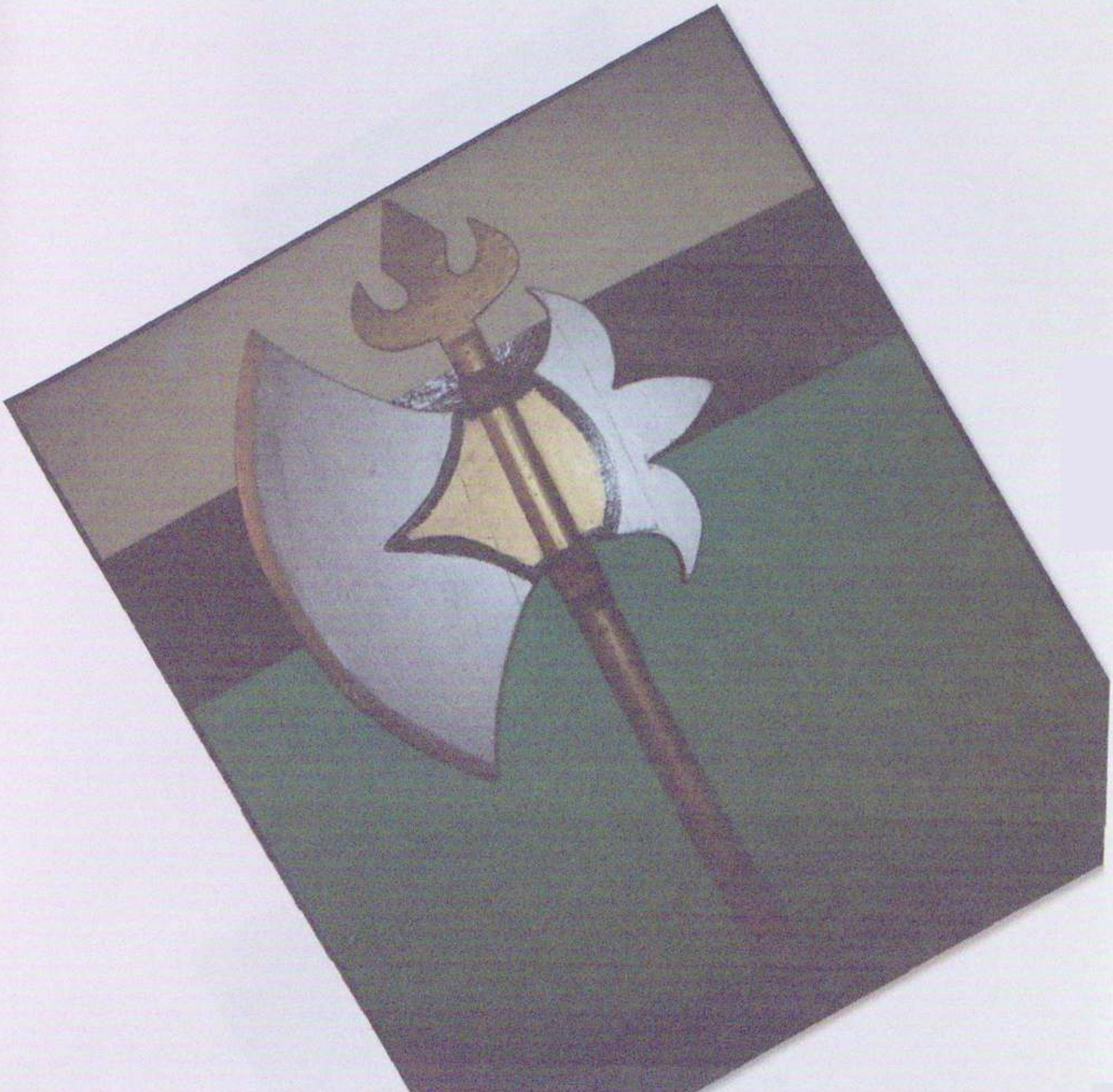

N.C.E.R.T.C.B.S.E

दशहरा

कार्तिक मास में मनाये जाने वाले दशहरा समारोह मे देश भर में राक्षस परिवार के पुतलों का निर्माण किया जाता हैं और राम लक्ष्मण के बाणों द्वारा पुतलों के दहन कियें जाने की प्रथा हैं। लेकिन कुमाऊँ के सांस्कृतिक केन्द्र अल्मोड़ा में मनाया जाने वाला दशहरा महोत्सव रामकथा के रसिकों को कल्पना के आलौक की सैर करवा देता है। ऐसा जान पडता है कि इन पात्रों की जीवन यात्रा उनके सम्मुख ही घट रही हो। दशहरे के दिन इन रंग बिरंगे पुतलों के समीप खड़ा दर्शक अपने को वर्तमान से कहीं दूर अतीत के घटनाक्रम के नजदीक पाता है।अल्मोड़ा का दशहरा महोत्सव जहॉ एक और धार्मिक सौहार्द का प्रतीक है वहीं शौकिया कलाकारों की कल्पनाशीलता को भी द ाता है जिन्होने इन पुतलों को जिवन्नता प्रदान की हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार 1903 से अल्मोड़ा में दशहरे के अवसर पर रावण के पुतले का निमार्ण किया जाता था। वर्ष 1903 से 1976 तक दशहरा उत्सव एक सामान्य औपचारिक धार्मिक रामलीला से जुड़ा हुआ मेला माना जाता था। तब तक नन्दा देवीं रामलीला कमेटी के द्वारा खेली जाने वाली रामलींला अल्मोड़ा की प्रमुख रामलीला हुआ करती थी। स्व0 अमरनाथ वर्मा रावण के पुतले का निर्माण किया करते थे। उन दिनो रावण का पुतला सांकेतिक रूप से बनाया जाता था। राम डोले के बाण से पुतले को अग्नि को समर्पित किया जाता था। दशहरा धार्मिक भावना से ओतप्रोत था। 1976 में स्व0 नरेन्द्र लाल साह जी के सहयोग से मेघनाद के पुतले के निर्माण की परिकल्पना की गई । जिसे साकार किया तत्कालीन चित्रकार अख्तर भारती, नवीन वर्मा, मुहम्मद अली, मूर्तिकार सुलेमान, गोविन्द लाल वर्मा, टेलर मास्टर अख्तर और अज़ीज ने। इससे मिली प्रशंसा ने कलाकारों में उत्साह भर दिया और अगले ही साल 1977 में हाथी पर बैठे मेघनाद के पुतले का निर्माण किया। 1977 में नयालखोला के बच्चों ने कलाकार दीप पाण्ड़े के सहयोग से सुबाहु के पुतलो का निर्माण किया गया। दीप पाण्डे के द्वारा बनाए गए सुबाहु के पुतले को दशहरा